आले मोहम्मद का दीवाना

बोहलोल दाना

सैय्यदा आबिदा नर्जिस

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

आले मोहम्मद का दीवाना

बोहलोल दाना

●

लेखिका

सैय्यदा आबिदा नर्जिस

●

रुपान्तरणकर्ता

हैदर महदी

बी० काम, एम० ए०

●

प्रकाशक

अब्बास बुक एजेन्सी

नाम पुस्तक = बोहलोल दाना
लेखिका = सैय्यदा आबिदा नार्जिस
रुपान्तरणकर्ता = हैदर महदी बी० काम, एम.ए.
प्रकाशक = अब्बास बुक एजेन्सी
संख्या = एक हज़ार
प्रकाशन तिथि = जनवरी १९९५
मूल्य = 20/=

मिलने का पता :

अब्बास बुक एजेन्सी

रूसतम नगर, दरगाह ह० अब्बास, लखनऊ

फोन : 2647590, 2001816

मोबाईल: 9415102990 फैक्स: 2255977

Email-abbasbookagency@yahoo.com

कम्पोज़िंग = एन० एन० कम्प्यूटर, लखनऊ —फोन : २६७८१३

तर्जुमा

यह बादशाहों का सा मेज़ाज रखने वाले लोग गोया बादशाहों जैसे एहतेराम के मुस्तहक़ हैं।

इन गुदड़ी पोश बादशाहों के ग़ुलाम भी अपनी गुदड़ियों में जमशेद और ख़ाक़ान का सा वेक़ार छिपाये फिरते हैं।

उन्हों ने आज दुनिया की नेमतों को नज़र अन्दाज़ कर दिया है और कल यह जन्नत[१] को आँख उठा कर भी नहीं देखेंगें

इन बर्हना[२]–पा फ़क़ीरों को हक़ारत[३] की निगाह से न देखो– कि अक़्ल[४] के नजदीक यह उन आँखों से ज़्यादा मोहतरम[५] हैं जिन में ख़ौफ़े इलाही से आँसू चमकते हैं।

हाँ– अगर आदम (अ०) ने जन्नत को गेंहू के दो दानों के एवज़ बेच दिया था–

तो सच जानो के यह दीवाने जन्नत को एक जौ के एवज़ भी नहीं खरीदेंगें।

नज़्रे-क़ारेईन

क़ारेईन[६]

बोहलोल तारीख़ का एक ऐसा यगान-ए- रोज़गार किरदार है- जिसे आले मों० (अ०) के मोजिज़े[७] से ताबीर किया जाये तो ग़लत नहीं होगा-

इस नाम के कई और लोग भी गुज़रे हैं- लेकिन बोहलोल से मुराद ओमूमन[८] वही शख़्स लिया जाता है- जिसने दीवानगी का मफ़हूम बदल दिया और दानिशे बुर्हानी (१) के माना[१०] समझाये-तारीख़ के सफ़हात[११] में यह वाहिद (१२) दीवाना है- जो दाना-ए-राज़ हैं और यह तन्हा पागल कहलवाने वाला है- जो दानिशमन्दों को हिकमत (१३) व-दानिश सिखाता है-

उसने एक ऐसी अनोखी राह[१४] चुनी थी- जो आज तक किसी के कदमों से पामाल नहीं हुई-

बोहलोल की (बे) पर पेश (ُ) और ० पर जज़म (ْ) है- यह नाम हँसमुख; सच्चे और हाज़िर जवाब लोगो के लिये इस्तेमाल होता है- बोहलोल की इन ही ख़ूबियों ने उसका अस्ल नाम फ़रामोश (१५) कर दिया था- वह हर जगह बोहलोल ही कहलाता था- जिस तरह वह अपने दौर (१६) में एक मक़बूल (१७) शख़्सियत था- उसी तरह हर दौर में वह एक पंसदीदा किरदार रहा है- उसकी हिकायात (१८) दिलचस्पी और शौक़ से कहीं और सुनी जाती है।

उसका अस्ल नाम वहब बिन अमरौ और जाये विलादत कूफ़ा बयान की गई है।

वह बग़दाद (१९) के सरवतमन्दों (२०) में से था- बाज़ रिवायत में उसे हारुन रशीद का क़रीबी रिश्तेदार और बरादरे मादरी (२१) लिखा गया है- वह इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ०) के शर्गिदों (२२) में से था- उसने उनके फरज़न्द (२३) इमाम मूसा काज़िम (अ०) का ज़माना (२४) भी देखा था।

काज़ी नूरुल्लाह शुस्त्री के बक़ौल वह हारुन रशीद के अहद के दानिशमन्दों में से गुज़रा है- जो किसी मसलहत के तहत दीवाना बन गया था-

(मजालिसुल मोमेनीन)

उसकी दीवानगी के बारे में दो रवायात मशहूर हैं– यह भी मारुफ़ [२५] है के उसने इमाम मूसा काज़िम (अ०) की हिदायत पर दीवानगी का लिबादा ओढ़ लिया था–

इस तरह उसने अपनी जान भी बचा ली और उस दौर के शाही दरबार के लिये एक ऐसा नक़्क़ाद बन गया– जो हँसी ही हँसी में उन्हें आईना दिखाता रहता था–

इमाम मूसा काज़िम (अ०) से हारुन रशीद अब्बासी का मुरव़ासमत [२६] कोई ढ़की छुपी बात नहीं है– तारीख़ ने इमामे आली मक़ाम की चौदह साल की क़ैदे सख़्त और ज़हर से शहादत का ज़िम्मेदार हारुन को ही ठहराया है–

एक खायत [२७] के मुताबिक– हारुन ने दीगर मुत्तक़ी और नामूर लोगों के साथ बोहलोल से भी इमामे मासूम (अ०)के क़त्ल का फ़त्वा तलब किया था– बोहलोल इन्कार के नताएज [२८] से ख़ूब वाक़िफ़ था– इसलिये उसने इमामे मूसा काज़िम (अ०) से रहनुमाई कीदरख़ास्त की और उनकी हिदायत पर दीवाना बन कर अपनी जान बचा ली

उसके बारे में दूसरी रवायत यह है–के बोहलोल का जुर्म आले मोहम्मद (स०अ०) से अक़ीदत और एरादत मन्दी था– जब बोहलोल को पता चला के उसे अनक़रीब [२९] गिरफ़्तार करके क़त्ल कर दिया जायेगा– तो उसने अपने दो साथियों के हमराह इमामे मूसा काज़िम (अ०) से क़ैदखाने मे राब्ता किया–

हालाते ज़माना के पेशेनज़र इमामे मूसा काज़िम (अ०) ने उसके सवाल का जवाब सिर्फ़ एक हर्फ़ (ज) की सूरत में दिया जिससे बोहलोल पर जुनून के माना मुन्कशिफ़ [३०] हुए वक़्त और हालात के तक़ाज़े को समझते हुए उसने एक ऐसी पुर–अज़–हिक़मत (३१) दीवानगी इख़्तेयार कर ली– जिसे उस दौर की चलती फिरती अपोजिशन (Opposition) कहा जाये तो बेजा न होगा–

बोहलोल जुर्अत व बेबाकी, हक़गोई और मज़लूमों की हिमायत का अलमबर्दार था– वह उस दौर में बादशाहपर खुले बन्दों तन्क़ीद करता था–

जब कोई बादशाह के ख़िलाफ़ ज़बान खोलने का तसव्वुर (३२) भी नहीं

कर सकता था– उसकी दानिशमन्दी और ज़ेहानत ने कभी इसका मौक़ा नहीं दिया के उसके किसी लफ़्ज़ की गिरफ़्त जा सकती–

बोहलोल की हालाते जिन्दगी तो दस्तियाब नहीं हैं– लेकिन उसकी हिकायत के मुताले (३३) से उसके जो ख़द्दो ख़ाल उभरते हैं– वह एक ग़ैरे मामूली ज़ेहीन, दानिशमन्द और तब्बाअ (३४) शख़्स की निशानदेही (३५) करते हैं– वह हक़ीक़ीं मानो मे एक ख़ुदा रसीदा आलिम (३६) और नाबग़–ए–रोज़गार (३७) था– वह बेहतरीन हिस्से मेज़ाह रखता था– उस दौर के हालात और मुआशेरत (३९) पर उसकी निगाह गहरी थी–

वह एक हैरत अंगेंज़ शुगुफ़्ता बर्जस्तगी के साथ अपनी दीवानगी का भरम भी रखता था– उसने दीवानगी और फर्ज़ानगी को कुछ ऐसे मोजेज़ाना अन्दाज़ में हम आहंग किया था के वह न सिर्फ़ उसकी जान की ज़मानत थी बल्कि मज़लूमों की हिमायत (४०) का एक मोअस्सर (४१) ज़रिया और हुकूमते वक्त पर खुली तन्क़ीद (४२) भी थी–

उसकी शुगुफ़्तगी, ज़िन्दादिली और बज़्लासन्जी (४३) ने उसे हर दौर का एक हर दिल अज़ीज़ किरदार बना दिया है– तारीख़ के सफ़हात में वह एक ऐसा मोहरुयेरुल ओक़ूल (४४) किरदार है– जो दीवाना भी है और लोग उसके फ़ज़्ल व कमाल के क़ायल भी हैं– वह पागल भी कहलाता है और मुश्किल मसलों में उसकी राय को अहमियत भी दी जाती है इस सबके बावजूद कोई यह साबित नही कर पाता के वह दीवाना नहीं है– यही उसका कमाल है के वह दर हक़ीक़त आले मोहम्मद (स० अ०) का दीवाना है।

इस किताब की तालीफ़ (४५) में किरमान महमूद हिम्मद की जमा करदा (४६) हिकायात से मद्द ली गयी है और हम इसका एअ़तेराफ़ शुक्रिया के साथ करते हैं सैय्यदा (आबेदा नरजिस)

●

१

शहरों के शहर बग़दाद की पुर रौनक शहराहों पर जिन्दगी अपनी मख़सूस गहमागहमी से रवां दवां थी– लोग अपनी रोज़ मर्रह के मामूलात में मसरुफ़ थे– बाज़ारो में ख़रीद व फरोख़्त हो रही थी और गलीकूचों में लड़के बाले खेल कूद मे मगन थे– अचानक एक शोर उठा– चहार जानिब (४७) एक हलचल सी मच गयी– लोगों ने वहब को देखकर उँगलियाँ दाँतों में दाब लीं और हैरत व इस्तेजाब (४८) से नौ–रंग्गिये दौरा का करिश्मा देखने लगे।

बग़दाद का मशहूर सखतमन्द वहब बिन अमरौ जो अब्बासी खलीफ़ा हारुन रशीद के करीबी रिश्तेदारों में था, अपने घर से इस हाल में निकला था के उस के बाल परेशान थे। दाढ़ी बेतरबीब और लिबास परागन्धा (५०) था। हाथ में पकड़े हुए असा (५१) को उसने घोड़ा बना रखा था। जिसे बच्चों की तरह खटखटाता बेमाना (५२) अल्फ़ाज़ कहता। न जाने किस सिम्त चला जाता था।

जिसने भी आगे बढ़कर उसे रोकना चाहा वहब ने उसे धुत्कार दिया। दूर हो जाओ हटो। मुझे रास्ता दो। नहीं तो मेरा घोड़ा लाते मार देगा।

लोग उसकी यह हालत देखकर दम–ब–ख़द रह गये– बच्चों के हाथ एक नया तमाशा आ गया वह पहले तो दूर–दूर से उसकी तरफ़ देखते रहे– फिर आहिस्ता आहिस्ता नज़दीक आये– किसी ने उसकी अबा खींची–किसी ने उसकी रिदा घसीट ली– कोई उसके साथ–साथ दौड़ने लगा– और कोई उसके असा पर सवार होने की ज़िद करने लगा– जिसे वह घोड़े की तरह चला रहा था।

लेकिन वहब ने बच्चों को न डाँटा न डराया न धमकाया– बल्कि वह ख़ुद भी उनमें से एक मालूम होने लगा और बच्चों के साथ बचकाना हरवतें

करता, आबादियों से दूर वीराने की तरफ़ भाग गया–

सारे शहर मैं जैसे सन्नाटा छा गया– हैरत व इबरत ने लोगों को शुश्दुर कर दिया– कुछ लम्हें गुज़रे और उनके हवास पलटे– वह इबरत की उस गुंग (५३) कर देने वाली कैफ़ियत से निकले तो हर तरफ़ उसी के तज़किरे होने लगे– जहाँ चन्द लोग इकट्ठे होते, वहब बिन अमरौ की ज़ेहनी हालत ही ज़ेरे बहस आती– लोग गलियों और चौराहों में खड़े इसी वाक़िये पर तबसिरा (५४) करतेहुए नज़र आते–

कोई कहता "ख़ुदा की शान है–"

यह वहब बिन अमरौ शहर के दानिशमन्दों में शुमार होता था– मगर आज इसकी हालत देखकर इबरत होती है–

कोई दूसरा कहता– लगता है– इसकी कोई बात बारगाहे ख़ुदावन्दी में नापसन्दीदा ठहरी है। शायद इसी लिये उसने वहब से अक़्ल व दानिश छीन ली है।

"बुरे वक़्त से पनाह माँगनी चाहिये– ऐसों की हालत से इबरत हासिल करनी चाहिए" – कोई खौफ़े खुदा से काँप कर बोला–

"खाह–म–खाह क़यास आराइयों से इज्तेनाब बर्तो– न मालूम उसकी इस हालत में कौन-सी हिकमत पोशीदा है"

एक मर्दे बुज़ुर्ग ने गहरी साँस लेकर कहा और एक जानिब चल दिया– उसका लहजा माना खेज़ था और उसके लफ़्ज़ों में असरार (५५) बोल रहे थे

उसके बराबर खड़ा हुआ एक शख़्स बड़े ग़ैर महसूस अन्दाज़ में मजमे से अलैहदा (५६) हुआ और उसके पीछे –पीछे चल पड़ा– कुछ दूर तक दोनों इसी तरह चलते रहे– फिर पहले शख़्स ने अपने अक़ब में कदमों की चाप से किसी और की मौजूदगी का अन्दाज़ा लगाया और ग़ैरेइरादी तौर पर पीछे मुड़कर देखा– दूसरे शख़्स ने अपने कदमों को तेज़ किया और उसके बराबर आ गया–

उसने खन्कार कर गला साफ़ किया और मोहतात लहजे में बोला ऐ मर्दे

बुज़ुर्ग मैंने आपकी बातों में असरार को बोलते सुना है। ऐसा लगता है जैसे वहब की दीवानगी में जो हिकमत पोशीदा है आप उससे वाक़िफ़ हैं– आप मुझे खुदा रसीदा मालूम होते हैं– मैं आप जैसे लोगों की गुफ़्तुगु में अपने लिए हिदायत व रहनुमाई तलाश करता हूँ।

क्या ऐसा मुमकिन है के आप मुझे वहब की हालत की कुछ ख़बर दे दें

उस मर्दे बुज़ुर्ग ने तेज़ निगाह उसपर डाली– और बेनियाज़ी से कहा–

ऐ बन्द–ए– ख़ुदा तू किसी अज़ीम ग़लत फ़हमी का शिकार मालूम होता है जा और अपनी राह ले मुझे भला वहब से क्या सरोकार

उस शख़्स ने बुज़ुर्ग का दामन पकड़ लिया–" ब–ख़ुदा मैं किसी ग़लतफ़हमी का शिकार नहीं हूँ– मैने आलिमों और बर्गुज़ीदा (५७) लोगों की सोहबत में वक़्त गुज़ारा है– आप जैसे लोग तो हिकमत व दानिश के सरचश्में हैं–

अगर आप इसलिये मुझ से कलाम नहीं करना चाहते के हालाते ज़माना दिगर–गूं (५८) हैं और ख़लीफ़ा हारुन के जासूसों और आम लोगों में तमीज़ करना मुश्किल हो गया है– तो मैं ख़ुदा की क़सम खा कर अपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आप जो कुछ भी फ़रमायें वह मेरे पास अमानत की तरह महफ़ूज़ रहेगा– अगर मैं उसमें ख़यानत करूँ तो अल्लाह मुझे वही सज़ा दे जो ख़ाइन (५९) की है

उस मर्दे बुज़ुर्ग ने इसकी तरफ़ घूर कर देखा और बेज़ारी से कहने लगा– ऐ शख़्स। तू किस क़द्र बातूनी और गुफ़्तुगू का शायक़ (६०) है– मैने तुझ से कह जो दिया कि मैं इससे बारे में कुछ नहीं जानता वह इतना कहकर आगे बढ़ गया–

मगर उस शख़्स ने पीछा नहीं छोड़ा और उसके साथ–साथ चलता हुआ बोला– मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ के मेरा हारुन रशीद और उसके हवारियों से कोई ताल्लुक़ नहीं मैं जानता हूँ के आप उन तीन अश्ख़ास में से एक

हैं जिन्होंने इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ०) (मेरे माँ–बाप उन पर फ़िदा हों–) से क़ैदख़ाने में राबिता किया था और वहब भी उस वक़्त आपके साथ था"

वह मर्दे बुज़ुर्ग ठिठक कर रुक गया और ख़श्मगीन लहजे में बोला– "अगर तू इतना कुछ जानता है तो फिरमेरे पीछे क्यों पड़ा है– तुझे मेरे बयान की क्या हाजत है ?

मैं अहलेबैत का दोस्तदार हूँ– मैं उस कठिन वक़्त की सख़्तियों से वाक़िफ़ हूँ जो आले मोहम्मद (अ०) के भीहि–ख़ाहों को दरपेश हैं– ज़िन्दान के दरबानों की उनपर सख़्तियाँ देखकरदिल ख़ून के आँसू रोता है– मगर अफ़सोस के हम बेबस हैं और शायद बुज़दिल (६२) भी यक़ीनन ख़ुदा के यहाँ हम इसके लिए जवाब देह (६३) होगों– उनसे राबिते का कोई ज़रिया भी नहीं है– मुझे मालूम हुआ था के आपने किसी तरह उनसे राबिता किया है– तो मैंने सोचा आपसे हिदायत और बसीरत हसिल करूँ "

वह मर्दे बुज़ुर्ग गो–म–गो की-सी कैफ़ियत में कुछ सोचता रहा फिर इधर–उधर देखकर बोला

"अगर तुम सच कह रहे हो– तो इसे साबित करो "– "ब–सर–व–चश्म (६४)– आप मेरे हमराह तशरीफ़ ले चलिये– मेरी ज़ौजा मदीने की है और आले मो० (अ०) की आज़ादकरदा (६५) कनीज़ है– हमारी दौलत मोअददते (६६) अहलेबैत (अ०) है–

आप जैसी चाहे मुझसे क़सम ले लें " जैसा चाहें इत्मीनान कर लें" उसने पूरी सच्चाई से कहा– मर्दे बुज़ुर्ग ने उसकी आँखों में देखा जो उसके लफ़्ज़ों की ताईद कर रहीं थीं– और कुछ सोच कर उसके साथ खाना हो गया– उसके घर पहुँच कर जब उसने अच्छी तरह से इत्मीनान कर लिया के इसकी गुफ़्तुगू ग़ैरे महफ़ूज़ नहीं होगी–तो बोला "सुन ऐ बन्द–ए–खुदा–१११ तू हालाते ज़माना को जानता है और तुझसे यह भी पोशीदा नहींके लोगों की हमदर्दियाँ अब्बासियों को इसलिये हासिल हुई थीं के उन्होंने आले मोहम्मद की हिमायत और एआनत (६८) का नारा लगया था– उनका हक़ उन तक पहुँचाने का वायदा किया था– मगर अफ़सोस के उन्होंने न सिर्फ़ आले मोहम्मद (अ०) का हक़ नहीं पहचाना– बल्कि लोगों की उनके साथ अक़ीदत और मोहब्बत देखकर उन्हें अपनी सल्तनत के

लिये ख़तरा तसब्बुर करने लगें"–

"उनके दिन–रात इसी कोशिश में सर्फ़ होते हैं के किस तरह इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ०)से लोगों की तवज्जोह हटा सकें– इसीलिये यह हर उस शख़्स की जान के दुश्मन हो जाते हैं जो आले मोहम्मद से अक़ीदत रखता है– हमें यह ख़बरें (६९) बराबर मिल रही थीं के हम मोहब्बते आले मोहम्मद (अ०) के जुर्म में अनकरीब हारुन के ज़ेरे इताब आने वाले हैं–

इसीलिये हम ने बाहम (७१) मशविरा किया लेकिन कुछ समझ में नहीं आया"

"बिल आख़िर यही फैसला किया के इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ०) से रहनुमाई हासिल की जाये उनको क़ैद के अहवाल (७३) से तो तुम वाक़िफ़ हो के उनके दरबान चुन चुनकर शक़ियुल क़ल्ब (७४) और दुश्मनाने अहलेबैत रखे जाते हैं– उन से मिलने पर सख़्त पाबंदी है– लेकिन किसी न किसी तरह हमने अपना मसला उनकी ख़िद्मत में पहुँचा ही दिया"–

"अगले रोज़ सुबह सादिक़ (७५) के वक़्त जिन्दान से मिट्टी की एक ठेकरी गिरी– हम पहले ही इस ताक में थे– हमने बड़ी राज़दारी से वह ठेकरी उठा ली– मैं क़ुर्बान जाऊँ अपने इमाम (अ०) पर"– उसका लहजा गुलूगीर (७६) हो गया और वह रुक कर आसूँ पोछनें लगा– दूसरे शख़्स की आँखों से भी आँसू गिरने लगे–

उस मर्दे बुज़ुर्ग ने सर्द–आह (७७) भरी– "इमाम पर क़ैदखाने में इस क़द्र सख़्ती है के उन्होंने मिट्टी की इस ठेकरी पर हुरुफ़े तहैज्जी (७८) में से सिर्फ़ एक हर्फ़ लिखा था–

"वह क्या"– ?? उस शख़्स ने बेताब होकर सवाल किया–

उस ठेकरी पर हर्फ़े (जीम) लिखा हुआ था– फ़रजन्दे रसूल (अ०) के अता करदा [७९] इस एक हर्फ़ ने हमपर हिकमत [८०] के दरवाज़े खोल दिये–

हमें अपनी मुश्किल का हल अज़-ख़ुद मिल गया जो हमारे हालात के साथ मेल खाता है।

हमारा तीसरा साथी, जिसका नाम ज़ाहिर करना ज़रुरी नही,– उसने "(जीम)" से जिलावतनी [८१] "मुराद लिया– वह आज रात यह शहर छोड़ देगा– मेरे विजदान [८२] मे "(जीम)" से जबल [८३] का इन्केशाफ़ हुआ है– मैं पहाड़ों पर अपने आबाई [८४] मकान में पनाह लूँगा– और हमारे दोस्त ब बिन अमरौ है– और तुम देखोगे के [८५] आले मोहम्मद (अ०) के इस दीवाने की दीवनगी फर्ज़ानों को शर्मा देगी।

२

वहब बिन अमरौ बच्चों के हुजूम में बच्चा बना हुआ दीवानों की सी हरकतें करता बिल आख़िर एक तीराने में आ उतरा– वह बच्चों के साथ दौड़–दौड़ कर हाँप गया था और कुछ थकावट भी

महसूस कर रहा था– वह अपने असा के फर्ज़ी घोड़े पर से उतरा और बच्चों से बोला–

"मेरा घोड़ा थक गया है– इसे भूख भी लगी है अब यह आराम करना चाहता है" उसने असा को घोड़े की तरह चुमकार कर खण्डर की शिकस्ता दीवार के साथ खड़ा कर दिया– बच्चे खिलाखिला कर हँस पड़े

"ऐ वहब। –क्या तुम्हारा घोड़ा घास खाता है "हाँ–हाँ– यह तुम्हारी अक़्ल के साथ हर रोज़ घास चरने जाताहै" वहब ने शोख़ी से जवाब दिया– "अच्छा– और यह पानी भी पीता है"–? एक और शरीर बच्चे ने सवाल किया–

"हाँ– यह पानी भी पीता है– मगर तुम्हारे ख़लीफ़ा के पैमाने में" वहब हँसा–

बच्चे भी उसकी हँसी में शरीक हो गये और मचल मचल कर बोले– "ऐ वहब हमें भी अपने घोड़े की सवारी कराओ बहब ने उन्हें परे ढकेला ""ख़बरदार कोई क़रीबन आये– मेरे घोड़े का मेज़ाज शाहाना है किसी को लात मार दी तो मुझे न कहना"–

बच्चे हँसने और तालियाँ बजाने लगे– वहब ने दीवार के साथ टेक लगा ली और गहरी साँस लेकर बोला– "अच्छा दोस्तों। अब मुझे कमर सीधी करने दो और तुम अपने–अपने घरों को जाओ"

बच्चे कुछ देर उसके साथ छेड़ख़ानी करते रहे– जब वहब ने उन की

तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं दी तो वह एक-एक करके अपने-अपने घरो को लौट गये- वहब ने उसी खण्डर में डेरा जमा लिया- उसके घर वाले परेशान हुए उसके अज़ीज़ रिश्तेदार इकट्ठे हुए और लोगों से पूछते, मालूम करते उसी खण्डर तक आ पहुँचे जहाँ वहब ने बसेरा किया था-देखा के वह नंगी ज़मीन पर अपने बाज़ू का तकिया बनाये चैन की नींद सो रहा है-

उसकी यह हालत देखकर उसके अज़ीज़ों की आँखों में आँसू आ गये- कुछ इज़हारे अफ़सोस करने लगे- एक ने झुक कर उसका शाना हिलाया वहब-वहब-!! उठो- जुनून की इस नींद से ज़ागो- आँखें खोलो "-

वहब होशियार हुआ और उसने नींद से भरी आँखें खोलकर अपने चारों तरफ़ जमा शुनासा चेहरों को देखा जिनपर दुख और तफ़क्कुर की (८७) लकीरें थी- वह हमर्दी से उसकी तरफ़ देख रहे थे-

क्या बात है"-? वहब ने उठकर बैठेते हुए कहा-

"वहब उठो- घर चलो- एक अज़ीज़ने क़रीब बैठकर उसकी अबा से गर्द झाड़तेहुए कहा -

यह भी तो घर है" वहब ने खण्डर की टूटी दीवारों की तरफ़ इशारा किया। "भला इसमें क्या कमी है- न हमसाये का झगड़ा- न मालिक मकान का ख़ौफ़- न दरबान की मुसीबत-नचोर का डर"-

"कैसीबाते कर रहे हो वहब"- कोई उनसियत से बोला-

"मैं तुम्हारी जबानहीतो बोल रहा हूँ" । वहब ने जवाब दिया-

"तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है"- कोई बोला- "मेरी तबियत बिल्कुल

ठीक है- मैं बहुत मज़े में हूँ"-

वहब ने कमाले बे नियाज़ी से.जवाब दिया

"नहीं- तुम बीमार हो- तुम्हें इलाज की ज़रुरत है"- किसी अज़ीज़ ने उसे समझाने की कोशिश की-

"बीमार तो सब ही हैं- इलाज की किस को ज़रुरत नहीं वहब हँसा और राज़दारी से बोला-" तुम ख़ुद ही कहो- क्या ख़लीफ़ा क्या वज़ीर, क्या कोतवाल और क्या दरोग़ा- इनमें से कौन है- जिसे इलाज की ज़रुरत नही-

"हमारी बात समझने की कोशिश करो- यह जगह तुम्हारे शायाने शान नहीं"- उसके रिश्तेदार परेशान हो गये-

"भला यह मेरे शायाने शान क्यों नहीं- यह ख़लीफ़ा के महल से तो बेहतर है के रोजे हश्र मुझसे इसके बारे में कोई बाज़ पुर्स तो नहीं होगी"-

उसके रिश्तेदार ज़िच हो गये- उन्होंने बोहतेरी कोशिश की के उसे घर ले जायें और उसके जुनून का (८९) कुछ इलाज हो जाये- लेकिन वह क़तअन रज़ामन्द नहीं हुआ।

●

३

अब वह फ़र्शे ख़ाक, शिकस्ता दीवारें और खुला आसमान ही उसका घर था– वह आराम व आसाएश से बे-नियाज़ हो गया था नेमतहाए दुनिया से उसने मुँह मोड़ लिया था– वह रुखे सूखे चन्द टुकडों पर गुज़र बसर करता था और नंगी ज़मीन पर अपने बाज़ू के तकिये पर चैन की नींद सोता था–

वह बच्चों का सबसे ज़्यादा दोस्त था– उनकी मासूमियत और मनचलापन उसे भाते थे– वह पहरों उनके साथ बचकाना हरकतें करने में मसरुफ़ रहता और खेल कूद में उन्हें काम की बातें बताता–

कोई राहगीर उसे मुख़ातब कर लेता था कोई जानने वाला उससे पूछताः–

"वहब तुमने यह क्या हालत बना ली है"–? तो वह बड़ी शेगुफ़्तगी से कोईऐसी पहलदार बात कह देता– जो मुख़ातब को महज़ूज़ करती– लेकिन बे माना नहीं होती थी– ग़ौर करने पर उसमें कोई कोई हिकमत पोशीदा नज़र आती थी–

इस आलमे दीवानगी में पूरा शहर उसकी दस्तरस में था– वह अपने मन की मौज में जहाँ चाहता पहुँच जाता और जिसको चाहता अपने शुगुफ़्ता लफ़्ज़ों में अईना दिखा देता– अवाम मुश्किल में होते तो हँसी–हँसी में उनका मसला हल कर देता और अगर ख़वास (९२) हुदूद से तजाव्वुज़ (९३) करते तो बातों–बातों में उन्हें लगाम दे देता उसकी बज़्लासन्जी में छिपी हुई ज़ेहानत और दानिशमन्दी आहिस्ता–आहिस्ता लोगों को क़ायल करने लगी–

एक बदिकरदार शख़्स ने उसका मज़ाक़ उड़ाने को शरारत से कहा–

"ऐ वहब क्या तुने कभी शैतान को देखा है– ? मेरा बहुत जी चाहता है के मैं शैतान को देखूँ–

"तेरी यह ख़्वाहिश तो बड़ी आसानी से पूरी हो सकती है" – वहब ने

सन्जीदगी से जवाब दिया–

"वह किस तरह"–!! उस शख़्स ने पूछा–

तेरे घर में आईना तो होगा– अगर नहीं तो साफ़ पानी में देख लेना–तुझे शैतान की ज़ियारत हो जायेगी"– उस शख़्स को भागते ही बन पड़ी–

उन ही दिनों अमीरे कूफ़ा इस्हाक़ बिन मोहम्मद सबाह,के यहाँ लड़की की विलादत हई– पता चला के वह लड़की की पैदाइश पर बहुत रंजीदा है– किसी से नहीं मिलता–न ही मुबारक बाद वुसूल करता है– वहब को जो ख़बर हुई तो वह अपनी गुद्दड़ी शाने पे डाले उसके यहाँ पहुँचा और बोला

ऐ इस्हाक मैंने सुना है के तू लड़की की पैदाइश पर बहुत अफ़सुर्दा है– न खाता है– न पीता है–

"क्या करुँ– दिल ही नही चाहता"–

वह ठंडी साँस भर कर बोला–"मुझे बेटे की बड़ी आरज़ू थी– मगर अफ़सोस के अल्लाह ताला ने मुझे लड़की दे दी "–

"कमाल है"– वहब ने बे–साख़्ता कहा" तू इसपर राज़ी नहीं के अल्लाह ने तुझे सही व सालिम बेटी दी है अगर वह तुझे मुझ जैसा पागल बेटा दे देता तो फिर"–?

इस्हाक़ को उसकी बे-साख़्तगी पर हँसी आ गई–लेकिन वह इसकी तह में छिपी हुई हिकमत को जान गया और ख़ुदा का शुक्र बजा लाया– अपना सोग तोड़ा और लोगों को इजाज़त दि के वह उसके पास तबरीक (९४) पेश करने के लिये आयें–

वह अपनी दीवानगी के बावजूद नमाज़ के वक़्त मस्जिद में पहुँच जाता ा– एक रोज़ अभी उसने जूते नहीं उतारे थे के उसने एक शख़्स को देखा के ह इस ताक में है के उसके जूते चुराये– वहब बहुत देर इस इन्तेज़ार मे रहा ; वह शख़्स इधर उधर हो– तो वह अपने जूते उतार कर नमाज़ में शामिल ।– मगर वह नहीं टला और नमाज़ के लिये सफ़े दुरुस्त हो गयीं–

वहब ने आव देखा न ताव– दौड़कर आगे बढ़ा और जूतों समैत ही

नमाज़ के लिए खड़ा हो गया– उस शख़्स ने मायूस होकरउसे टोका– "ओ दीवाने यह क्या कर रहे हो ? जूतों समैत नमाज़ नहीं होती"

नमाज़ नहीं होती तो न हो– मगर जूते तो होते हैं" वहब ने जवाब देकर नियत बाँध ली–

वह गलियों और बाज़ारों में अपने मासूम साथियों के साथ चोहले करता फिरता– कहीं कोई ग़ैरे मामूली बात देखता– तो वहीं रुक जाता अपनी बज़्लासन्ज़ी से लोगों को हँसने और मुस्कुराने पर मज़बूर कर देता–

एक रोज़ वह अपने शरीर साथियों के साथ भागा जा रहा था के उसने सरे बाज़ार एक मजमा लगा हुआ देखा– उसने अपनी छड़ी खटखटाई– लोगों के कंधे दबाये– किसी की बग़ल में झाँका– किसी का पैर हटाया और हुजूम के दरमियान् सर जा निकाला–

लोगों नेउसे धक्के दिये– बुर–भला कहा– लेकिन उसने परवाह नहीं की देखा के शहर का दरोग़ा एक अजीब दावा कर रहा है–

ऐ लोगों मेरी बात ग़ौर से सुनो– मैं एक ऐसा होशियार आदमी हूँ के मुझे कोई धोका नहीं दे सकता"–

"बेशक बेशक– दरोग़ा जी आप बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाते हैं"–

"मर्हबा–मर्हबा– क्या कहने–!!! दरोग़ा का दावा बिल्कुल हक़ है"

"किसी की क्या मजाल के दरोग़ा साहब को धोखा दे सके" – मजमे में से उसकी खुशामदी तरह–तरह की बोलियाँ बोलने लगे– हर तरफ़ से दाद–व–तहसीन (९५) के नारे बुलन्द हो रहे थे–

वहब ने अपनी छड़ी ज़मीनपर ज़ोर से मार कर उन्हें अपनी तरफ़ मुतावज्जेह किया और बोला–" दरोग़ा जी मुझे भी कुछ कहने की इजाज़त है"–?

"अच्छा– तो तुम भी बोलोगे– बोलो क्या कहते हो"? उसने निख़्वतसे कहा

वहब ने सन्जीदगी से कहा– "दरोग़ा जी गुस्ताख़ी माफ़ यह दीवाना

आपके इस दावे को चुटकियों में बातिल (९६) कर सकता है– मगर यह कोई ऐसा मुफ़ीद काम नहीं, जिस पर वक्त ज़ाया किया जाये"–

"इसकी सूरत देखो ज़रा– और इसका दावा देखो"– किसी ने तमस्खुर से कहा–

"ओ दीवाने– दरोग़ा साहब की अक़्ल के सामने भला तेरी क्या हक़ीक़त है ?" किसी और ने आवाज़ कसी–

दरोग़ा ने मूँछों को ताव दिया– "हाँ–हाँ तुम जैसा पागल तो मुझे ज़रुर धोखा दे सकता है–

"मैं पागल हूँ या कुछ– अगर मुझे इस वक्त एक ज़रुरी काम न होता तो मैं आपको इसी वक्त ऐसा झाँसा देता के आप और आपके यह चमचे हमेशा याद रखते"

"बड़ी ऊँची हवाओं में हो मियाँ दीवाने–मुझे कोई जल्दी नहीं है– मैं यहीं बैठा हूँ– तुम अपना काम करके वापिस आओ और अपने दावे को साबित करो"– दरोग़ा ने डाँट कर कहा।

वहब् ने अपनी छड़ी सँभाली और उजलत में यह कहता हुआ मुड़ा–" दरोग़ा साहब अब अपने वायदे से फिर मत जाइयेगा– यहीं मेरा इन्तेज़ार कीजियेगा बस गया और आया"– वह जिस तरह मजमे में आया था, उसी तरह बाहर निकल गया–

दरोग़ा फिर अपनी शेख़ी बघारने में मसरुफ़ हो गया– उसके खुशामदी ढ़ चढ़कर दाद् देने लगे– काफ़ी देर हो गई और वह दीवाना पलट कर नहीं गया"– लोगों ने भी महसूस किया के वक्त गुज़रता जा रहा है और वहब का र–दूर तक पता नहीं– मगर उन्होंने दरोग़ा को तसल्ली देने की कोशिश ी–"दरोग़ा जी वह है भी तो दीवाना– राह में कहीं बच्चों के साथ खेल में लग या होगा"–

कुछ और वक्त गुज़रा– लेकिन वहब वापिस नहीं आया– मजमे में मि–गोइयाँ होने लगीं– आँखों में इशारे होने लगे– कुछ होठों पर मुस्कुराहट नमूदार हुई– बाज़ लोग उक्ता कर घरों को जाने लगे–

दरोग़ा को भी अन्दाज़ा हो गया के पागल वहब उसे पागल बना के चला गया और अब वह वापिस नहीं आयेगा– वह बेचैन होकर बड़बड़ाया–

यह पहली बार है के मुझे किसी ने धोका दिया है"– "और वह भी एक दीवाने ने" मजमे में से किसी ने बे-साख़्ता कहा–तो कहक़हों से फिज़ा गूँज उठी

जल्दी ही वहब की इस बज़्लासन्जी, शोर, ज़ेहानत और शुगुफ़्ता दानिश मन्दी का सारे शहर में शोहरा हो गया– उसकी दीवानगी में छिपी हुई फर्ज़ान्गी और उसके पागलपन में पोशीदा होश रुबा हक़ायक़ (१००) ने अवाम को उसके क़रीब का दिया वह न किसी को सताता था, न परेशान करता था और नुक़सान पहुँचाता था, अल्बत्ता अपने जुनून में अपनी दानिशमन्दी को छुपाये हर वक्त लोगों की मद्द करने को तैयार रहता था–

जल्द ही वह बग़दाद का एक ऐसा पसंदीदा किरदार बन गया के लोग उसके गिर्वीदा हो गये और मोहम्बत से उसे बोहलोल कहने लगे– जिसके माना है हँसमुख ख़ूबसूरत और नेकियों का मजमुआ–

बोहलोल का लफ़्ज़ ओमूमन चुटकुले बाज़ हाज़िर जवाब और सच्चे लोगों के लिए इस्तेमाल होता है– रफ़्ता–रफ़्ता यह नाम यूँ ज़बान ज़दे आम (१०१) हो गया के उसका अस्ल नाम फ़रामोश हो गया– अब कोई भी उसे वहब नहीं कहता था– वह सब के लिए बोहलोल था और सबका बोहलोल था– उसकी दानाई और हिकमत ने उसे एक पागल और दीवाने से बढ़कर आक़िल व दाना मशहूर कर दिया था।

●

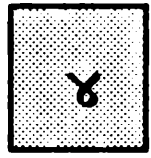

हारुन रशीद तक यह ख़बरें मुतावातिर पहुँच रही थीं के उसका रिश्तेदार वहब् बिन अमरौ दीवाना हो गया है–

उसने दुनिया की शान व शौकत से मुँह मोड़ कर ख़ाक नशीनी इख़्तेयार कर ली है– वह अपनी गुदड़ी में मस्त वीराने में बैठा रुखी–सूखी पर गुज़ारा करता है– मगर हारुन को यक़ीन नही आया– उसने सही सूरते हाल जानने के लिये अपने मुक़र्रबों (१०२) को बुलाया–

"कुछ वहब बिन अमरौ का हाल कहो– हमने सुना है के वह दीवाना हो गया है"–

"आली जाह– अब तो उसे वहब् कोई भी नहीं कहता– अब तो बच्चा–बच्चा उसे बोहलोल कहता है" एक अमीर ने इत्तेलअ़ दी–

"अच्छा– ।।। हारुन ने दिलचस्पी से पूछा "यह नया ख़िताब उसे किसने दिया"–?

"ज़िल्ले-इलाही– वह हँसमुख तो पहले ही था

दिवानगी ने उसे कुछ और भी ख़ुश तबअ(१०३) बना दिया है– अब तो वह बाज़ औवक़ात (१०४) मसख़रों की सी हरकतें करने लगता है– लोगों को हँसाता और ख़ुश करता है– इसलिये सब उसे बोहलोल कहने लगे हैं " अमीर ने वज़ाहत (१०५) की–

।।। हारुन ने ग़ौर करते हुए कहा "उसे किसी तबीब को दिखाया है ताकि उसका कुछ इलाज हो जायें"–

आली जाह- उसके घर वालों ने बहुत कोशिश की है लेकिन वह किसी तरह रज़ामन्द नहीं होता– वज़ीर ने जवाब दिया "खाता पीता कहाँ से है और

दिन भर क्या करता फिरता है"– हारुन ने इस्तफ़्सार किया–

"उसके अज़ीज़ उसे खाना पहुँचाते तो हैं– लेकिन वह सिर्फ़ रुखी सूखी पर ही गुजारा करता है बाज़ औक़ात ख़ुद भी मज़दूरी कर लेता है– उसने एक खण्डर में डेरा जमा रखा है– दिन भर लड़के बालों के साथ दौड़ता फिरता है– कभी कभी ख़ूब मसख़रापन करता है– जिससे महज़ एक पागल नज़र आता है– मगर बाज़ औवक़ात ऐसी पते की बात कह जाता है– कि सुनने वाले दंग रह जाते हैं"– वज़ीर ने तफ़सील से जवाब दिया–

"हुज़ूर अगर इजाज़त दें तो मैं अर्ज़ करूँ के उसने कल क्या किया है" एक दरबारी ने मोअद्दब (१०६) लहजे में पूछा–

"इजाज़त है" हारुन ने इजाज़ज दी– कल बग़दाद के बड़े बाज़ार में एक फ़क़ीर नानबाई की दुकान के सामने से गुज़र रहा था– उसने तरह –तरह (१०७) के खाने चूल्हों पर चढ़ा रखे थे– जिससे भाँप निकल रही थी– उन खानों की खुश्बू उन खानों की लज़्ज़त का पता दे रही थी और इर्द–गिर्द गुज़रने वालों को अपनी तरफ़ मुतावज्जेह कर रही थीं"

"बेचारे फक़ीर का दिल भी ललचाया– लेकिन ग़रीब की गिरह में माल कहाँ था– जो इन खानों की लज़्ज़त ख़रीद सकता– मगर वहाँ से हटने को भी उसका दिल नहीं चाहता था– खानों की खुश्बू उसकी भूख बढ़ा रही थी– बिल आख़िर उसने अपने थैले में से सूखी रोटी निकाली और खाने की देग़ की भाँप से उसे नर्म करके खाने लगा, जिसमें खाने की खुश्बू बसी हुई थी–

नानबाई चुपचाप यह तमाशा देखता रहा– जब फक़ीर की रोटी ख़त्म हो गई और वह चलने लगा– तो नानबाई ने उसका रास्ता रोक लिया– "क्यों ओ मुस्टण्डे– कहाँ भागा जाता है– ला मेरे पैसे निकाल"–

"कौन से पैसे–"? फक़ीर ने हक दक होकर पूछा– "अच्छा ।।। कौन से पैसे"–

उसने अल्फ़ाज़ चबाकर उगले– "अभी जो तूने मेरे खाने की भाँप के साथ रोटी खाई है– वह क्या तेरे बाप की थी– उसकी क़ीमत कौन चुकायेगा"

"अजीब इन्सान हो, तुम– वह भाँप तो उड़कर हवा में मिल रही थी–

अगर मैंने उसके साथ रोटी खाकर ख़ुद को बहलाने की कोशिश की है तो उसमें तेरा क्या चला गया है जिसकी मैं क़ीमत अदा करूँ"– फक़ीर ने परेशान होकर कहा–

"बस–बस–।।। अब इधर–उधर की बातें मत कर– मैं तेरी जान हर्गिज़ न छोड़ूँगा– मैं अपना माल वुसूल करके रहूँगा"– नानबाई ने उसका गरेबान पकड़ लिया– फक़ीर बेचारा परेशान हो गया के इस हट्टे–कट्टे नानबाई से किस तरह जान छुड़ाये– उनकी तकरार बढ़ती जा रही थी– के बोहलोल उधर से गुज़रा और उनके क़रीब रुककर उनकी बातें सुनने लगा– फक़ीर ने अपना हमर्द समझकर यह बात उसे सुनाई– जो मो वह बोहलोल नानबाई से बोला– "भाई यह तो बताओ के क्या इस ग़रीब आदमी ने तुम्हारा खाना खाया है"

"नहीं– खाना तो नहीं खाया– मगर मेरे खाने की भाँप से फ़ायदा तो उठाया है– मैंने उसी की क़ीमत माँगी है– लेकिन इसकी समझ में यह बात ही नहीं आती"– नानबाई ने बताया–

"बिल्कुल दुरुस्त कह रहे हो बरादर– बिल्कुल दुरुस्त"– बोहलोल ने सर हिलाया और अपनी जेब से मुटठी भर सिक्के निकाले– वह एक–एक करके उन सिक्कों को ज़मीन पर गिराता जाता और कहता जाता–"नानबाई– नानबाई– यह ले पैसों की आवाज़ पकड़ ले– यह ले अपने खाने की भाँप की क़ीमत इन सिक्कों की खनक में वुसूल कर ले– ले–ले–यह सिक्कों की आवाज़ तेरे खाने की खुश्बू की क़ीमत है– इसे अपने गुल्लक में डाल ले"– इर्द–गिर्द खड़े हुए लोग हँस–हँस कर दोहरे हो गये–

,नानबाई अपनी ख़िफ़्फ़त मिटाने को बोला–" यह पैसे देने का कौन–सा तरीक़ा है–"?

बोहलोल ने जवाब दिया–"अगर तू अपने खाने की भाँप और खुश्बू बेचेगा– तो उसकी क़ीमत तुझे सिक्कों की आवाज़ की सूरत में ही अदा की जायेगी"–

"बहुत ख़ूब"१११ हारुन महज़ूज़ होकर हँसा–"वल्लाह (१०९) यह किसी दीवाने का फ़ैसला तो मालूम नहींहोता– इसमें तो ग़ैरे मामूली दानिश छिपी

हुई है– लगता है उसकी दीवनगी नेउसकी दानिश को कोई ज़रर नुक़सान नहीं पहुँचाया"–

"आली–जाह–बजा फ़रमाते हैं– बोहलोल हरकतेंतो पागलों की सी करता है– मगर उसकी बातों में उसकी दानिश बोलती है– अगर इजाज़त हो तो मैं भी एक वाकेआ हुज़ूर की समाअत की नज़ करूँ"– एक दूसरे दरबारी ने कहा–

"इजाज़त है"– हारुन ने इजाज़त दी– "अभी चन्द दिन पहले की बात है केउसने न जाने कहाँ से सोने का एक सिक्का पाया था– वह उसके साथ बच्चों की तरह खेल रहा था– कभी वह उसको उँगली पर नचाता था– कभी रेत से साफ़ करता और कभी पहिये की तरह घुमाता–

एक नौ सरबाज़ (११०) उसका यह खेल देख रहा था– उसने उसे पागल समझकर कहा–" तुम्हें इस एक सिक्के से खेलने में मज़ा तो नहीं आ रहा होगा– तुम यही सिक्का मुझे दे दो– मैं इसके बदले में तुम्हें दस सिक्के दूँगा"– उसने जेब से सिक्के निकाल कर बोहलोल को दिखाये–

"ठीक है– मैं यह सिक्का तुम्हें अभी दे देता हूँ मगर एक शर्त पर"– बोहलोल ने कहा–

"वह क्या"–?? नौ सर बाज़ ने पूछा पहले तू गधे की तरह ढ़ीचूँ ढ़ीचूँ की आवाज़ निकाल बोहलोल ने शर्त रखी–

उस धोखेबाज़ ने सोचा के इस दीवाने के सामने गधे की आवाज़ निकालने में क्या हर्ज है– इसलिए वह शुरु हो गया और गधे की तरह रेंकने लगा–

बोहलोल हँसा– "अजब गधे हो भई–तुमने मेरे सोने के सिक्के को फ़ौरन पहचान लिया और मैं गधा भी नहीं–तो भला मैं तुम्हारे ताँबे के सिक्के क्यों न पहचानता"– वह नौ सरबाज़ बेचारा इस क़द्र शर्मिन्दा हुआ केउसे भागते ही बनी–

हारुन को भी हँसी आ गई और बोला– "शोख़ी तो ख़ैर उसकी तबियत में शुरु ही से बहुत है– हमें उसके बारे में कुछ और भी बताओ ताकि हम जान सकें के उसकी दीवानगी किस मंजिल पर है"

"ज़िल्ले सुबहानी–११ इजाज़त हो तो मैं बयान करूँ– एक दरबारी ने अदब से पूछा–

"बयान करो"– हारुन ने इजाज़त दी "हुज़ूर–।।। अभी कुछ ज़्यादा दिन नहीं हुए के उसने एक अजीब फैसला किया और वह भी इस तरह के काज़ी को उसके सामने सरे तसलीम ख़म (१११) करना पड़ा"– दरबारी ने कहना शुरु किया–

"हुआ इस तरह के बोहलोल ने राह चलते दो बच्चों को रोते और फ़रियाद करते देखा वह उनके सामने रुक गया और उनके सर पर हाथ फेर कर बोला– "बच्चों तुम क्यों परेशान हो"?

बड़ा लड़का बोला– "हम फ़लाँ शख़्स के बेटे हैं– हमारा बाप हज को गया था– उसने चलने सेपहले एकहज़ार अशर्फ़ि क़ाज़ी के पास ब–तौरे अमानत रखवाई थी और कहा था के ज़िन्दगी मौत का कोई भरोसा नहीं– अगर मैं सफ़रे हज से वापिस न आया तो तुम मेरे बच्चोंकोउसमें से जो तुम्हारा दिल चाहे दे देना और अगर ख़ुदा मुझे वापिस ले आया तो मैं अपनी अमानत तुमसे वापिस ले लूँगा– मगर अफ़सोस के क़ज़ा (११४) हो गया– हम यतीम और बेआसरा हो गये हमनेअपनेबाप की अमानत क़ाज़ी से माँगी– तो वह कहने लगा के– तुम्हारे बाप ने मेरे साथ जो क़ौल किया था– उसके मुताबिक, जो मेरा दिल–चाहेगा– वह तुम्हें दूँगा–

इसलिए यह सौ (१००) अशर्फ़ियाँ ले जाना चाहो– तो ले लो– उसने उन लोगों की गवाही भी पेश कर दी– जिन के सामने यह क़ौल हुआ था– हम लोग बहुत परेशान हैं– यतीम हैं हमारा कोई आसरा नहीं"–

बोहलोल ने उनके सर पर हाथ रखा और बोला–– "बेटा परेशान न हो– अपने आँसू पोंछ लो और मेरे साथ चलो मैं ख़ुद क़ाज़ी से बात करता हूँ"–

वह लड़के उसके साथ चलपड़े– बोहलोल उन्हें लेकर काज़ी के पास आया और बोला– "ऐ क़ाज़ी– तू इन यतीम बच्चों का हक़ उन्हें क्यों नहीं देता"–?

"अच्छा– तो यह चालाक लड़के अब तुम्हें अपना हिमायती बना कर

लाये हैं– हालांकि इनकेबाप ने कई लोगोंकेसामने मुझे यह इख़्तेयार दिया था के मैं जो कुछ चाहूँ उन्हें दे दूँ– अब मैं सौ अशर्फ़ियाँ उन्हें देता हूँ–तो यह लेने से इन्कार करते हैं और मुझे ख़ा-म-ख़ाशहर भर में बदनाम करते फिरते हैं" क़ाज़ी ने ठाट से जवाब दिया–

बोहलोल ने बड़े इत्मीनान से कहा–

क़ाज़ी जी– आप ने बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाया है– यह क़ौल ज़रुर हुआ है– लेकिन इस क़ौल से तो यह साबित होता है के आप जो चाहते हैं वह नौ सौ अशर्फ़ियाँ हैं और यही इन बच्चों के मरहूम बाप ने कहा था के जो आपका दिल चाहे वह आप उसके बच्चों को दे दें– तो क़िब्ला क़ाज़ी साहब–

चूँकि आप नौ सौ अशर्फ़ियाँ चाहते हैं– इसलिये यही उसके बच्चों को दे दें"–

क़ाज़ी तो अंगुश्त–ब–दन्दाँ (११५) बोहलोल का मुँह तकता रह गया–

हाज़िरीन ने बोहलोल की ताईद की और उसेउन यतीम बच्चों का हक़ देते ही बनी"–

"अच्छा– तो उसने शहर के क़ाज़ी को आजिज़ कर दिया और कहलाता दीवाना है"– हारुन रशीद ने ज़ोर दे कर कहा–

"आली जाह– वह पागलों की सी हरकतें भी करता है कभी अपने असा को घोड़ा बना कर उसपर सवारी करता है तो कभी बच्चों के साथ मिलकर मिट्टी से खेलता है– रेत के घरावदें बनाता है। हाँ नमाज़ के वक्त़ मस्जिद में पहुँच जाता है अभी पिछले जुमे को उसनेएक ऐसा शिगोफ़ा छोड़ा के हँस –हँस कर नमाज़ियों के पेट में बल पड़ गये"– वज़ीर ने बताया–

"बयान करो वह क्या बात है"–? हारुन ने कहा–

गुज़श्ता (११६) जुमे को वह नमाज़ पढ़ने मस्जिद में आया– तो ग़ालिबन चोरी के डर से उसने अपने जूतेएक कपड़े में बाँध कर अपनी अबा में छिपा लिये– यहाँ के मक़ामी लोग तो बोहलोल को जानते हैं– एक ऐसा शख़्स जो उसे पहचानता नहीं था– उसने उसे बग़ल में कोई चीज़ दाबे हुए देखकर

कहा–

"मालूम होता है के आपके पास कोई क़ीमती किताब है जिसे आपने इतनी हिफ़ाज़त से रखा हुआ है"–?

बोहलोल ने बड़ी सन्जीदगी से जवाब दिया– आप ने दुरुस्त अन्दाज़ा लगया– बहुत क़ीमती किताब है'–

उस शख़्स ने पूछा– "क्या आप बताना पंसद फ़रमायेंगें के यह कौन–सी किताब है'–?

"जी हाँ– क्यों नहीं– यह फ़लसफ़े की किताब है"– बोहलोल ने बताया–

"फ़लसफ़े की किताब– सुब्हानल्लाह आपने किस कुतुब फ़रोश से ख़रीदी है"–?

जनाब यह मैंने मोची से ख़रीदी है"– बोहलोल ने मज़े से जवाब दिया– जो लोग उसकी हरकतों से वाक़िफ़ थे– उन्हें हँसी ज़ब्त करना मोहाल हो गई–

हारुन भी मुस्कुराया– "तो मौसूफ़ की दीवानगी–फर्ज़ानों को शर्माती है– हमें उसकी इस रविश (११७) पर शक है–

कहीं यह लोगों की आँखों में धूल तो नहीं झोंक रहा है"

आपने बजा फ़रमाया आला हज़रत अल्लाह ताला ने आपको बेहतरीन अक़्ल व दानिश से नवाज़ा है– ख़याल आपके ही ज़ेहने रसा में आ सकता है"– किसी ख़ुशाम्दी ने फ़ौरन हाँ में हाँ मिलायी–

तुम सब नमक हरामहो– लगता है के वह कोई साज़िश कर रहा है और तुम लोगों को कुछ ख़बर ही नहीं– उसके बारे में फ़ौरन पता चलाओ के उसकी दीवानगी केपसे परदा कौन से मक़ासिद पोशीदा हैं और उसे कल दरबार में तलब करो–

वरना तुम सब की गर्दन मार दी जायेगी"–

हारुन ने जलाले शाही से हुक्म जारी किया और दरबार बर्ख़ास्त हो गया।

●

ख़लीफ़ा का एक कारिन्दा फ़ौरन ही बोहलोल की तलाश में खाना कर दिया गया बोहलोल उसे कही भी नहीं मिला– न वह उस वीरान खण्डर में था– जो उसका बसेरा था– न ही क़ब्रिस्तान में जहाँ वह अक्सर व बेश्तर किसी सोच में मुस्तग़रक़ बैठा रहता था– किसी ने बताया के वह मस्जिद की तरफ़ जाते हुए देखा गया है"–

कारिन्दा भी मस्जिद की सिम्त चल पड़ा– अभी वह रास्ते ही में था के उसने देखा के बोहलोल अपने जूते हाथ में पकड़े– छड़ी बग़ल में दबाये– गिरता पड़ता मस्जिद से बाहर निकला और जिस तरफ़ उसका मुँह उठा– सरपट भागता चला गया–

उसके पीछे एक शोर बलन्द हुआ– "लेना–पकड़ना देखो जाने न पाये–।।।– पकड़ो–१ इस दीवाने को पकड़ो–११ इस गुस्ताख़ की खबर लो"– कुछ नौजवान तालिबे इल्म (११८) मस्जिद से निकले और वा–वयला करते बोहलोल का पीछा करने लगे–

बोहलोल अपनी ही अबा में उलझता छड़ी सँभालता– जूतों को बग़ल में दबाता– मुड़–मुड़ कर देखता– उनकी पहुँच से दूर निकलने की कोशिश कर रहा था– लेकिन बिल–आख़िर उन नौजवानों की सुबुक रफ़्तारी ने उसको जा लिया– वहउसकी ठुकाई करने लगे–

"ओ गुस्ताख़–।।। तेरी यह जुर्अत केतूने हमारे उस्ताद को मिट्टी का ढेला मारा हम तुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगें– हम तेरीजान ले लेंगे– गँवार दीवाने"–१११

"हाँ–हाँ– मैंने उसको मारा है– मैं कब इन्कार करता हूँ– लेकिन उसे लगा कहाँ है–? अगर उसे लगा भी है– तो उसे कोई तकलीफ़ नहीं हुई– तुम बेकार शोर मचा रहे हो– हटो पीछे– छोड़ो मुझे"– बोहलोल दुहाई देने लगा–

हारुन का कारिन्दा दौड़कर क़रीब पहुँचा और बीच बचाओ कराते हुए बोला

"भाइयों– तुम लोग क्यों इस पागल के पीछे पड़े हो– कुछ इन्साफ़ से काम लो तुम लोग इतने सारे हो और यह अकेला– आख़िर हुआ क्या है–??

यह पूछें के क्या नहीं हुआ– इस दीवाने ने हमारे उस्तादे मोहतारम इमाम अबुहनीफ़ा को मिट्टी का ढेला खींच मारा–जो उनकी पेशानी पर लगा– हम इसको हार्गिज़ नहीं छोंड़ेंगें"– वह फिर बोहलोल के गिर्द हो गये–

हारुन के कारिन्दे ने उन्हें रोक दिया– "मगर हुआ क्या था– क्या उनके साथ बोहलोल का कोई झगड़ा हुआ था"–

एक तालिबे इल्म बोलाः– क्या बात कर रहे हैं आप ? हमारे उस्तादे मोहतरम की शान इससे बालातर है के वह इस जैसे के साथ झगड़ा करें– वह तो हमें मामूल के मुताबिक़ दर्स दे रहे थे– के यह कमबख़्त न जाने कहाँ से नमूदार (१२०) हो गया और उनकी पेशानी (१२१) पर ढेला खींच मारा– आप दरमियान् से हट जायें– यह पागल है या दीवाना– आज तो हम इसको ऐसा सबक़ सिखा कर छोड़ेंगें के सारा पागलपन भूल जायेगा"– एक लड़के ने अपनी बात ख़त्म करके फिर बोहलोल की तरफ़ देखकर दाँत किचकिचाये–

क्यों बोहलोल– क्या यह लड़के ठीक कह रहे हैं" ? कारिन्दे ने बोहलोल से पूछा–

"हाँ– मैंने उसको मारा है– मगर उसे लगा तो नही– न ही उसे कोई तकलीफ़ हुई– पूछ लो उससे मेरे पीछे क्यों पड़े हो"– बोहलोल ने बड़ी बेनियाज़ी से जवाब दिया–

देखी– आपने इसकी ढिटाई उस्तादे मोहतरम पेशानी पकड़े बैठे हैं और यह कहता है के उन्हें ढ़ेला लगा ही नहीं– मैं अभी इसका दिमाग़ दुरुस्त करता हूँ"– वह तालिबे इल्म फिर बोहलोल पर झपटा–

हारुन के कारिन्दे ने उसका बाज़ू पकड़ लिया "बात सुनो लड़के– सब जानते हैं के यह दीवाना है फिर ख़लीफ़ा का रिश्तेदार भी है– तुम इसे मार कर क़ानून को हाथ में न लो– इसे काज़ी के पास ले जाओ– वही सही फ़ैसला

करेगा"–

बात लड़के की समझ में आ गयी– वह बोहलोल को पकड़कर क़ाज़ी के पास ले गये और उसे तमाम माजरा (१२३) कह सुनाया– तो बोहलोल बोला– "ज़रा अपने उस्तादे मोहतरम् को भी तो बुला लाओ– मुद्दई के बग़ैर तुम दावा किस तरह पेश कर सकते हो" ?

"बोहलोल दुरुस्त कहता है– तुम अपने उस्ताद को बुला लाओ– क्योंकि मुद्दई तो (१२५) वही हैं फिर हम देख भी लेंगे के ज़र्ब (१२४) कितनी शदीद् है" क़ाज़ी ने हुक्म दिया–

तालिबे इल्म गये और अबु हनीफ़ा को बुला लाये– बोहलोल ने क़ाज़ी से कहा– क़ाज़ी जी –!!! क्या मैं इन लड़कों के उस्तादे मोहतरम् से बात कर सकता हूँ"–

"हाँ शौक़ से"– – क़ाज़ी ने इजाज़त दी– बोहलोल ने उन्हें मुख़ातब (१२६) किया– "मेरे अज़ीज़म मैंने तुझपर कौन सा ज़ुल्म किया है"– ?

"अजीब मसख़रे हो तुम– अभी तुमने सबके सामने मेरी पेशानी पर मिट्टी का ढेला मारा"– अबु हनीफ़ा ने ग़ुस्से से कहा–

"तो भाई– उससे तुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है– तू भी मिट्टी से बना है और वह ढेला भी मिट्टी का था– अभी तू ख़ुद ही तो अपने शार्गिदों (१२७) को समझा रहा था के इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) जो यह फ़रमाते हैं के इब्लीस (१२८) को जहन्नम का अज़ाब दिया जायेगा, वह दुरुस्त नहीं है– वह आग से बना है– और उसको आग भला क्या तकलीफ़ पहुँचाये गी–

तू भी ख़ाकी है और मिट्टी से बना है फिर भला मिट्टी के ढेले ने तुझे क्या तकलीफ़ पहुँचाई"– ?

"फ़ुज़ूल बातें मत करो– तुम ने वह ढेला इतनी जोर से मारा है के मेरी पेशानी और सर में दर्द हो रहा है"–

अबु हनीफ़ा ने ना–गवारी से कहा– "आप भी ग़लत बयानी न करें आला हज़रत अगर आपकी पेशानी में दर्द है– तो वह हमें नज़र क्यों नहीं आता"–

? बोहलोल ने तुर्की–ब–तुर्की [१२९] जवाब दिया–

"ओ हो– किस अहमक़ से पाला पड़ा है– अक़्लमन्द आदमी– क्या कभी दर्द भी किसी को नज़र आया है"– ? अबू हनीफ़ा ने ना– पसन्दीद्गी से जवाब दिया–

"क़िब्ला उस्ताद साहब– अभी तो आप अपने शगिर्दों से फ़रमा रहे थे– के इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०)जो फ़रमाते हैं के ख़ुदा को देखना मुमकिन नहीं मैं इस बात को नहीं मानता– भला जो चीज़ मौजूद है– उसे नज़र आना चाहिये– इसलिये ख़ुदा को देखना मुमकिन है–तो अगर आपके सरे मुबारक में दर्द हो रहा है– तो उसे हमें भी दिखाइये"– बोहलोल ने शुगुफ़्तगी से कहा–

अबु हनीफ़ा ज़िच [१३०] हो गये और क़ाज़ी से बोले क़ाज़ी साहब– यह दीवाना तो यूँ ही इधर–उधर की हाँक रहा है– इसने सबके सामने मुझे पत्थर मारा है– आप गवाहिइयाँ लेकर इसे सज़ा दें और कार्यवाही ख़त्म करें"–

"या हज़रत– अगर मुझ नाचीज़ ने आपको मिट्टी का ढेला मार भी दिया है तो इसमें मुझ दीवाने की क्या तक़सीर [१३१] – ? अभी आप ही तो अपने शर्गिदो से फ़रमा रहे थे के आपको इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) के इस क़ौल से भी इख़्तेलाफ़ है के वह फ़रमाते हैं के "अच्छा या बुरा काम करने वाला ख़ुद उसका ज़िम्मेदार है– और उसके लिये जवाब देह है"– जबकि आप फ़रमाते हैं केहर फ़ेल [१३२] अल्लाह की तरफ़ से होता है– और बन्दा उसका ज़िम्मेदार नहीं–

इसलिये ढेला मैंने आपको नहीं मारा– यह काम तो ख़ुदा ने मुझसे करवाया है– अब भला मैं किस तरह इस काम के लिये सज़ा का मुस्तहक़ ठहरा–जो मैंने नहीं किया– ख़ुदा–रा क़ाज़ी साहब आपही इन्साफ़ कीजिए"

अबु हनीफ़ा ला जवाब से हो गये– क़ाज़ी जो दोनों की दिलचस्प बहस से महज़ूज़ हो रहा था– बोला– "बोहलोल ने अपना मुकद्दमा जीत लिया है–

बोहलोल ने इत्मीनान की गहरी साँस ली– पाँव में जूते पहने और छड़ी सँभाल कर अदालत से बाहर निकल आया– वह अपनी धुन में बड़बड़ा रहा था– "आले मोहम्मद (अ०) की तकज़ीब [१३३] करने वालों को मुहँ की खानी

पड़ती है उलूमे–अहलेबैत (अ०) को झुटलाने वालों के मुक़द्दर में जीत नहीं"–

हारुन का कारिन्दा उसके पीछे–पीछे चला उसने दो एक बार उसेमुतावज्जेह करने की कोशिश की– लेकिन वह अपनी धुन में मस्त चलता चला गया और उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया–– हारुन का कारिन्दा कुछ फ़ासला रखकर उसका ताक़्क़ब (१३४) करता रहा–

बोहलोल कभी अपने आप से बातें करने लगता– कहीं खड़ा होकर अपनी छड़ी से ज़मीन कुरेदता–कहीं राह चलते बच्चों के सर पर हाथ फेर कर कोई मेज़ाहिया फ़िक़रा कस देता कहीं दीवार से टेक लगाकर अपने ख़यालों में मुस्तग़रक हो जाता–

इसी तरह चलते–चलते आधा दिन बीत गया– सूरज निस्फ़ुन्नहार (१३६) पर आ गया– बोहलोल अपने खण्डर में दाख़िल हुआ और टूटी हुई दीवार के साथ कमर लगाकर ससताने लगा– उसने आँखे बन्द कर लीं और फ़र्शे ख़ाक पर टाँगे पसार लीं–

कारिन्दा जो बहुत देर से उसके ताक्कुब में था– उसने सोचा के दिन बीत चला है– खाने का वक़्त है– लेकिन बोहलोल ने खाना नहीं खाया– बेहतर यही है के वह उसके लिये खाना ले आये ताकि उससे बात करने का बहाना हो जाये– उसे ख़ुद भी भूख लगी थी– वह बाज़ार गया– एक मतअ़म (१३७) में बैठकर ख़ुद खाना खाया और कुछ उम्दा खाना ख़रीद कर एक खुश्नुमा ख़ान में रखा और बोहलोल के खण्डर में वपिस आ गया–

बोहलोल अपने आप में मगन न जाने ख़यालात की कौन सी गुंत्थियाँ सुलझा रहा था–

हारुन का कारिन्दा आगे बढ़ा और बोहलोल को मुतावज्जेह करने के लिये इत्तेलाई अन्दाज़ में खन्कारा– बोहलोल ने आँखें खोलकर उसकी तरफ़ देखा– उसने सलाम किया– बोहलोल ने जवाब दिया तो वह बोला– "जनाब बोहलोल साहब खलीफ़ा हारुन ने आपके लिये यह खाना भेजा है"– उसने खाने का ख़ान उसके आगे ही रख दिया–

बोहलोल हँसा– "वाह–वाह– इस्लामी मम्लेकत के बादशाह मुझ जैसे

कम हैसियत दीवानों का भी ख़याल रखने लगे हैं"–

"ख़लीफ़ा हारुन की रेआया परवरी तो ज़र्बुल–मसल (१३८) है"–

कारिन्दे ने फ़ौरन कहा–

बोहलोल ने अपने दायेंबायें देखा और उस कुत्ते को चुमकारा जो खण्डर में एक जानिब बैठा हुआ था– कुत्ता दुम हिलाता क़रीब आ गया– बोहालोल ने खाने का खुश्नुमा ख़ान उठाया और कुत्ते के सामने रख दिया– कुत्ता बे–सबरी से मुँह मारने लगा–

ख़ुदा की पनाह– बोहलोल यह क्या करते हो– ? ख़लीफ़ा का खानां तुमने कुत्ते के सामने रख दिया है"– मुलाज़िम ने दुहाई दी–

"हशिश्त– चुप–चुप– ख़ामोश रहो– मुँह बन्द रखो अगर इस कुत्ते ने सुन लिया के यह खाना ख़लीफ़ा का है– तो यह भी नहीं खायेगा"–

मुलाज़िम अपनी हँसी नहीं रोक सका और बोला "बोहलोल तुम भी अजीब मसख़रे हो– मैं तुम्हारे लिये ख़लीफ़ा का यह पैग़ाम भी लाया हूँ के कल उन्होंने तुम्हें दरबार में तलब किया है– बेहतर है के तुम कल ख़ुद ही हाज़िरे दरबार हो जाना"–

बोहलोल ने कोई जवाब नहीं दिया और वह कारिन्दा वापिस चला गया।

●

६

अगले रोज़ बोहलोल का रुख़ हारुन के महल की जानिब था– उसने पेवन्द लगे कपड़े पहन रखे थे– दोश पर गुद्ड़ी थी और हाथ में असा– दरबान को मालूम था के वह हारुन का रिश्तेदार है और उसे हारुन ने तलब किया है– इसलिये उसने इसे अन्दर जाने की इजाज़त दे दी–

वह अपनी फटी हुई जूतियाँ चटख़ाता– बड़ी बे तक्ल्लुफ़ी से अन्दर दाख़िल हुआ– दीवाने ख़ास में पहुँचा– वज़ीरों की कुर्सियाँ भी ख़ाली पड़ी हैं– शायद अभीदरबार आरास्ता नहीं हुआ था– वह क़ीमती क़ालीन को रौंदता– बादशाह की मसनद तक जा पहुँचा– और मज़े से उसपर ब्राजमान हो गया–

अभी उसे बैठे हुए चन्द लम्हें भी नहीं हुए थे के दरबार के पहरेदार दौड़ते हुए आये– उन्हें इत्तेलाअ़ मिली थी के हारुन इसी तरफ़ आ रहा है– यह देखकर वे दंग रह गये के बादशाह की ज़रीं मसनद पर बोहलोल फटे हालों बैठा है– उन्हें अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आया– वे बदहवासी में आगे बढ़े– एक ने बोहलोल का बाज़ू पकड़ कर खींचा– दूसरे ने कोड़ा बोहलोल की पुश्त पर रसीद किया–

"ओ दीवाने– तेरी यह जुर्अ़त के तू बादशाह की मसनद पर बैठे– उतर नीचे–"

"हाथ– बोहलोल ने तड़प कर नारा मारा– "हाय–हाय--उफ़– वह दुहाई देने लगा–

"मुँह बन्द करो– शोर मत मचाओ उतरो बादशाह की मसनद पर से उतरो"– पहरेदार ने उसकी पुश्त पर मुसलसल कोड़े बर्साते हुए दुरुश्तों से कहा–

दूसरे ने ज़ोर लगाया और बोहलोल को मसनद पर से खींच कर फ़र्श पर

गिरा दिया– बोहलोल सर पीटने लगा– "हाय अफ़सोस सद अफ़सोस– आह–आह– उफ़–

उफ़ वह बलन्द आवज़ में मुसलसल रोता जा रहा था–

पहरेदारों की जान पे बनी थी– लेकिन वह किसी तरह ख़ामोश होने का नाम ही नहीं लेता था– उसी वक़्त हारुन की आमद की इत्तेलाअ् नक़ीबो (१४१) ने दी और चन्द लम्हों बाद वह दीवाने ख़ास में दाख़िल हुआ– उसने बोहलोल को इस तरह रोते चिल्लाते और फ़र्याद करते देखा तो हैरान रह गया– उसने आगे बढ़कर बोहलोल को फ़र्श पर से उठाना चाहा५ लेकिन वह नहीं उठा और उसी तरह रोते हुए– अफ़सोस– अफ़सोस और हाय–हाय पुकारता रहा–

"यह सब क्या हो रहा है– ? हारुन ने डाँट कर पूछा– "अ्ली जाह– यह दीवाना हुज़ूर की मसनद पर जा बैठा था और उतरने का नाम नहीं लेता था– इसलिये हमें थोड़ी सी सख़्ती करनी पड़ी"–

पहरेदारों ने डरते–डरते बताया– "हाय–यह थोड़ी सी सख़्ती थी– अरे ज़ालिमों– तुमने तो कोड़ों से मेरी पुश्त उधेड़कर रख दी है– हाय अफ़सोस–उफ़–उफ़ बोहलोल ने फ़र्याद करते हुए उन्हें टोका–

हारुन ने निगाहे इताब उनपर डाली– "तुम लोग देखते नहीं के यह दीवाना है"

पहरेदार आयें बायें शायें करने लगे– हारुन ने बोहलोल की दिलजूई करतेहुए उसे फ़र्श से उठाया और तसल्ली दी लेकिन वह मुसलसल रोता जा रहा था–

हारुन ने बड़ी तश्वीश (१४२) से पूछा– "बोहलोल इस तरह क्यों रो रहे हो– क्या तुम्हें बहुत तकलीफ़ पहुँची है"–

हाँ– मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है– लेकिन मैं अपने हाल पर नहीं तुम्हारे ह़ाल पर रो रहा हूँ– हाय अफ़सोस–हाय अफ़सोस– बोहलोल ने तास्सुफ़ से कहा–

"मेरे हाल पर"– हारुन को ताज्जुब हुआ क्या गुज़रती होगी– मैं तो तुम्हारी मसनद पर सिर्फ़ चन्द लम्हें ही बैठा हूँ– तो इतनी मार खाई के सारी पुश्त छलनी

हो गयी और तू न जाने कब से इस मसनद पर बैठ रहा है– उफ़ तुझे अपने अन्जाम की कोई फिक्र नहीं"–

हारुन लम्हे भर को काँप गया– लेकिन उसने यूँही ज़ाहिर किया– जैसे उसकी बात नहीं समझा और बोहलोल से बोला–"तुम मेरे हाल पर अफ़सोस करते हो और मैं तुम्हारे हाल पर– तुम अच्छे भले तो थे– फिर तुम्हें न जाने क्या हुआ है– जो यूँ दीवाने बने फिरते हो"

बोहलोल मुस्कुराया–"तुम जानते हो के ख़ुदा की सबसे बड़ी नेमत अक़्ल है–

ख़्वाजा अब्दुल्लाह अन्सारी अपनी मुनाजात में फ़रमाते हैं के "ऐ ख़ुदा–

जिस को तुने अक़्ल दी–उसे क्या कुछ नहीं दिया और जिसे अक़्ल नहीं दी– उसे क्या दिया

तुमने वह हदीस तो सुनी ही होगी के जब ख़ुदा इरादा करता है के बन्दे से अपनी नेमतें वापिस ले लें तो सबसे पहले बन्दे से जो चीज़ वापिस लेता है वह अक़्ल है– अक़्ल रिज़्क़ में शुमार होती है– अफ़सोस के ख़ुदा ने यह नेमत मुझ से वापिस ले ली है"

"लेकिन इससे शाही ख़ानदार की किस क़द्र ज़िल्लत हो रही है– तुम्हें इसका भी कुछ अन्दाज़ा है– सब जानते है ते तुम मेरे रिश्तेदार हो और तुम हो के इस हुलिये में जगह–जगह घूमते फिरते हो– कुछ नहीं तो मेरे मनसब और मर्तबे का ही ख़याल करो"– हारुन ने सरज़निश के अन्दाज़ में कहा–

बोहलोल ने सर उठाया और बोला– "हारुन–अगर तू किसी जंगल बयाबान में रास्ता भटक जाये– तेरा प्यास से दम निकल रहा हो– और तुझे कहीं पानी न मिले– तो तू एक घूँट पानी के एवज़ क्या कुछ देने पर तैयार हो जायेगा"–

अजीब दीवाने हो तुम– भला इस वक्त़ इसका क्या ज़िक्र"– हारुन ने ना–गवारी से कहा–

बोहलोल हँसा– "मेरी बात का जवाब तो दो" "ज़ाहिर है– इस वक्त़ मेरे पास जो भी माल व मताअ होगा वह सब दे दूँगा"– हारुन ने बे-परवाई से जवाब

दिया–

"अगर पानी का मालिक इस क़ीमत पर राज़ी न हो– फिर" ?? बोहालोल ने पूछा–

"तो मैं उसे अपनी आधी सल्तनत दे दूँगा"– हारुन ने फ़ेराख़दिली से कहा–

"अच्छा"– बोहलोल ने बड़े इत्मीनान से कहा– "अगर यह एक घूँट पानी पीकर तेरी जान तो बच जाये– लेकिन तुझे पेशाब रुक जाने की बीमारी लाहक़ हो जाये– और किसी तरह दूर न हो –

तेरी जान पर बन जाये और तुझे पता चले के कोई शख़्स तेरी इस बीमारी का इलाज कर सकता है– तो तू उसे क्या देगा" ?

"मैं उस शख़्स को अपनी बाक़ी आधी सल्लनत भी दे दूँगा– जान है तो जहान है"–

हारुन बोला–

"तो फिर इसी बादशाही पर ग़ुरुर करते हो– जिसकी क़ीमत पानी के दो घूँट से ज़्याद नहीं"– बोहलोल ने बर्जस्ता कहा–

हारुन ख़फ़ीफ़ सा हो गया– "बोहलोल तुम दीवाने हो गये हो– मगर तुम्हारी आदतें नहीं बदलीं– तुम्हें अपने ख़ानदान के तेक़ार का कोई पास नहीं– पैग़म्बरे ख़ुदा के चचा अब्बास के बेटे अब्दुल्लाह बिन अब्बास कितने मर्तबे के हामिल हैं लेकिन तुम अली इब्ने अबी तालिब (अ०)को तरजीह देते हो"–

"मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ न हो– तो मैं यही कहूँगा के तुम ठीक कहते हो"– बोहलोल ने जवाब दिया–

हारुन चौंका और उसके ख़यालात जानने के लिये बोला– "तुम्हें हर तरह से अमान है लेकिन तुम्हें दलील से अपनी बात को हक़ साबित करना पड़ेगा"–

बोहलोल सीधा होकर बैठा और वाज़ेह लफ़्ज़ों में बोला– "मेरे ख़याल में पैग़म्बरे ख़ुदा (अ०) के बाद अली (अ०) तमाम मुसलमानो से अफ़ज़ल हैं– क्योंकि वह सच्चे मोमिन थे– उनकी तमाम आदात पंसदीदा थी और इताअ़ते ख़ुदा और रसूल (स० अ०) में उनसे ज़र्रा भर कोताही नहीं हुई– उन्होंने तमाम

ख़ुदाई अह़कामात पर इस तरह हर्फ़ ब हर्फ़ अमल किया के उसके मुक़ाबले में न सिर्फ़ अपनी जान बल्कि औलाद की जाने भी हेच समझते थे वह बहुत बहादुर और निडर थे– तमाम जंगों में सबसे आगे रहते थे– उन्होंने कभी दुश्मन को पीठ नहीं दिखाई–

इस बारे में उनसे सवाल भी किया गया था के आप जंग में अपनी जान का ख़याल क्यों नहीं रखते– अगर कोई पीछे से आप पर हमला करके आपकी जान ले ले– तो फिर–

उन्होंने जवाब दिया– "मेरी लड़ाई ख़ुदा के दीन की ख़ातिर है– उसमें मुझे किसी लालच, फ़ायदे और ज़ाती ग़रज़ का ख़याल नहीं– मेरी जान ख़ुदा के हाथ में है। मैं अगर मर जाऊँगा तो ख़ुदा की राह में मरूँगा और इससे बढ़कर और क्या सआ़दत होगी"–

"जब वह मुसलमानों के ख़लीफ़ा थे तो अपना तमाम वक़्त मुसलमानों के कामों और ख़ुदा की इबादत में सर्फ़ करते थे–

बैयतुल माल से एक दीनार भी बेकार नहीं उठाते थे– यहाँ तक के उनके भाई अक़ील ने जो अयालदार (१४९) थे–उनसे दर्ख़ास्त की के बैयतुल–माल से उनका जो हक़ उन्हें मिलता है– उससे कुछ ज़्यादा उन्हें दिया करें–

अमीरुल–मोमेनीन ने उनकी दर्ख़ास्त रद कर दी"–

आप तमाम हुक्काम से (१५०) यक़ भी फ़रमाते थे के लोगों पर ज़ुल्म न किया जाये– इनके मामलात के फ़ैसले अदल व इन्साफ़ से किये जायें– जो हाकिम ज़रा सा भी ज़ुल्म व सितम करता था– उससे बाज़–पुर्स में सख़्ती करते थे और उसे फ़ौरन मनसब से हटा देते थे– चाहे वह उनका क़रीबी अज़ीज़ ही क्यों न हो– उसे माफ़ नहीं करते थे"–

"जैसा के अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने जिस वक़्त वह बसरे के हाकिम थे– बैयतुल–माल की कुछ रक़म ज़ाती कामों में ख़र्च कर ली थी– आपने उनसे वह रक़म वापिस माँगी और उनके इस फ़ेल पर उन्हें सख़्त तम्बीह की और एक आख़िरी तारीख़ मुक़र्रर (१५२) कर दी ताकि उससे पहले पहले इब्ने अब्बास वह रक़म वापिस कर दें

लेकिन इब्ने अब्बास उस मुक़र्ररह तारीख़ (१५३) तक रक़म नहीं लौटा सके– अली (अ०) ने उन्हें कूफ़े में हाज़िर होने का हुक्म दिया– इब्ने अब्बास जानते थे के अली (अ०) ऐसे ख़लीफ़ा नहीं हैं जो दर-गुज़र कर देगें और चश्मपोशी से काम लेगें– इसलिये वह भागकर मक्के चले गये और ख़ुदा के घर में जा बैठे ताकि अली (अ०) के मुहासिबों से बच जायें"

हारुन ख़जिल सा हो गया– लेकिन ढटाई से बोला– "अगर अली (अ०) इतने ही अज़ीम और अवाम दोस्त थे– तो फिर क़त्ल क्यों हुए"– ?

"हक़ की राह पर चलने वालों को अक्सर शहीद किया गया है– हज़ारों पैग़म्बर और ख़ुदा के नेक बन्दे इसी तरह ख़ुदा की राह में क़त्ल हुए हैं"– बोहलोल ने बर्जस्ता जवाब दिया–

हारुन कोई उज्र न तलाश सका तो बोला– अच्छा बोहलोल अब अली (अ०) की शहादत का हाल भी सुना दो"

बोहलोल ने सर्द आह भरी और बोला– "इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ०) से रवायत है के जिस रात अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम क़त्ले अली (अ०) के इरादे से मस्जिद में आया–उस वक़्त एक शख़्स और भी उसके साथ था– कुछ देर वे दोनों बातें करते रहे फिर सहने मस्जिद में सो गये"–

जब अली (अ०) मस्जिद में दाख़िल हुए तो आपने सोतों को जगाया ताकि नमाज़ पढ़ें ये दोनों मलऊन भी बेदार (१५५) हो गये– अली (अ०) नमाज़ के लिए खड़े हो गये– आपने सजदे में सर रखा तो इब्ने मुल्जिम ने तलवार आपके सर पर मारी– यह ज़र्ब उसी जगह लगी जहाँ पहले अमरौ बिन अब्देवुद ने गज़व–ए–खंदक़ में वार किया था– उस बदबख़्त के वार से आपके सर से अबरु तक गहरा ज़ख़्म पड़ गया–

"उसकी तलवार ज़हर में बुझी हुई थी इसलिये आप जांबर न हो सके और तीसरे दिन शहादत पायी– आख़िरी वक़्त अपने बेटों से मुख़ातब होकर फ़र्माया– "ख़ुदा के चाहने वालों के लिये इस फ़ानी दुनिया से अम्बिया और औसिया का साथ बेहतर है– अगर मैं इस ज़ख़्म से मर जाऊँ तो मेरे क़ातिल को भी एक ही ज़र्ब लगाना क्योंकि उसने मुझपर सिर्फ़ एक वार किया है

और–हाँ–उसका बदन टुकड़े टुकड़े न करना"–

यह फ़रमा कर आप कुछ देर के लिए बेहोश हो गये– जब होश में आये तो अपनी वसियत जारी रखी– फ़रमाने लगे मैंने इस वक्त़ रसूले ख़ुदा को देखा के मुझसे फ़रमा रहे हैं के कल तुम हमारे पास होगे"–

"उस वक्त़ आसमान का रंग बदल गया– ज़मीन हिलने लगी– मोमिनों की आह–व–बुका से फ़िज़ायें गूँजने लगीं–

अवामुन्नास के नाला व शियु (१५६) से कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी– इस बारे में एक शायर ने क्या ख़ूब कहा है–

"आज की रात मुश्रिकों (१५७) ने ज़ुल्म व सितम का झण्डा बलन्द कर दिया है– शहादते अली से दीन के अरकान (१५८) पर सख़्त वार हुआ है– इस एक वार से जो मोमिनों के बाप को लगा है– ईमान का पूरे का पूरा घर उजड़ गया–

आसमान के मकीनों ने इस ग़म में अपने ताजे सआदत उतार फेके हैं–

दुनिया वालों को बहता पानी कड़वा लगने लगा है– आबे हयात में ज़हर घोल दिया गया है–

ज़ालिमों ने रसूलुल्लाह (स०) के दामाद को शहीद करके उनके दिल में ग़म के तीर पेवस्त कर दिये हैं–

उन्होंने अली (ए) मुर्तुज़ा का सर ही दो पारा नहीं किया बल्कि ख़ुदा के हाथ (यदुल्लाह–हज़रत कालक़ब) को भी काट डाला है–

जब से अली (अ०) की पेशानी पर दुश्मन की तलवार लगी है चाँद और सूरज की पेशानियाँ भी दाग़दार हो गयी हैं– यूँ मालूम होता है जैसे शक़्क़ुल–क़मर (१५९) का मोजिज़ा दोबारा दुनिया पर ज़ाहिर हो गया है–

अली (अ०) की पेशानी चाँद की तरह दो टुकड़े हो गयी है– ज़ैनब व उम्मे कुल्सूम (अ०) के नाला व फ़र्याद की आवाज़े बलन्द हुईं–

हसन (अ०) और हसैन (अ०) ने अपने अमामे शिद्दते ग़म से ज़मीन पर उतार फेंके"–

बोहलोल का हर्फ़ दर्द–व–अलम में डूबा हुआ था– हारुन भी उसकी तासीर में खो सा गया–

और बहुत देर तक उसके होठों से एक हर्फ़ भी नहीं निकला और उसका सर झुका रहा

बोहलोल ने अपनी गुदड़ी सँभाली और अपने आँसू पोछता हुआ उठ खड़ा हुआ–

"अच्छा हारुन– अब मुझे इजाज़त दे"–

हारुन चौंका– "ठहरो–तुम हमारे महल में आये हो– यह मुनासिब नहीं के यहाँ से ख़ाली हाथ जाओ"–

उसने मुलाज़िमों को हुक्म दिया के बोहलोल के लिये अशर्फ़ियाँ और दीनार लाये जायें–

"नहीं हारुन– मुझे इन अशर्फ़ियों की हाजत नही– तुमने यह माल जिन लोगों से लिया है– उन्हें दे दो– अगर तुम ने क़ौम का माल नहीं लौटाया– तो एक दिन ऐसा ज़रुर आयेगा– जब ख़लीफ़ा से इसका तक़ाज़ा किया जायेगा– उस रोज़ ख़लीफ़ा ख़ाली हाथ होगा और उसके पास शर्मिन्दगी और पछतावे के सिवा कुछ नहीं होगा– बोहलोल इतना कहकर चल दिया– हारुन लरज़ गया और वहीं पशेमान सा बैठा रह गया।

●

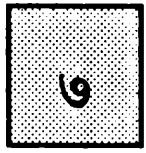

हारुन की चहीती मल्का, ज़ुबैदा अपने शानदार महल की खिड़की में से बाहर का नज़ारा कर रही थी– के उसने नहर के किनारे बोहलोल को बैठे हुए देखा– वह बच्चों की तरह रेत से खेल रहा था– कभी वह उसकी छोटी–छोटी ढेरियाँ बनाता– कभी उन्हें क्यारियों की शक्ल देता– कभी उन घरौंदों में खिड़कियाँ और दरवाज़े बनाता– ज़ुबैदा कुछ देर उसका यह खेल दिलचस्पी से देखती रही फिर अपनी चन्द कनीज़ों के साथ बाहर आयी और बोहलोल के पास आ खड़ी हुई और उसे मुतावज्जेह किया– "बोहलोल यह क्या कर रहे हो" ?

बोहलोल ने सर उठाकर देखा– "यह मैं जन्नत के महल बना रहा हूँ"– इतना कहकर वह फिर अपने काम में मसरुफ़ हो गया।

"अच्छा"– ज़ुबैदा ने मसनूई हैरत से कहा– फिर कुछ सोचकर बोली– "बोहलोल– तुम बेहिश्त के ये महल बेचते भी हो" ?

"हाँ बेचता हूँ" – बोहलोल ने जवाब दिया– "कितने दीनार में– ??ज़ुबैदा ने मेज़ाहन (१६०) पूछा–

"सिर्फ़– सौ दीनार में"– बोहलोल ने बताया ज़ुबैदा ने सोचा के इस तरह मज़ाक ही मज़ाक़ में बोहलोल की मद्द भी हो जायेगी– उसने कनीज़ों को हुक्म दिया के बोहलोल को सौ दीनार अदा कर दिये जायें और बोहलोल से बोली– "बोहलोल मैं भी एक बेहिश्त ख़रीदना चाहती हूँ"–

"कौन सी"– ? बोहलोल ने इस्तफ्सार (१६१) किया ज़ुबैदा ने यूँ ही रेत की एक क्यारी की जानिब इशारा कर दिया– "मुझे वह बेहिश्त चाहिये"–

बोहलोल ने रक़म ले ली और बोला – "तुमने क़ीमत अदा कर दी है– ठहरो– मैं इसका क़बाला तुम्हारे नाम लिख देता हूँ"–

जुबैदा हँसी– "मैं इस वक्त़ जल्दी में हूँ बोहलोल तुम इसका क़बाला लिखकर महल में ले आना"–

वह इतना कहकर आगे बढ़ गई– बोहलोल भी अपनी मिट्टी की ढेरियाँ ाट कर उठ खड़ा हुआ और वे सब दीनार अपनी झोली में डालकर ज़रुरतमन्दों ौर नादारों की तलाश में निकल गया

जुबैदा सब कुछ भूल कर अपने मामूलात में मसरुफ़ हो गई– रात अपने बिस्तर पर गई– आँख लगी– तो उसने देखा के वह एक ऐसे ख़ुशनुमा बाग़ में ं– जिसका तसव्वुर भी करना मोहाल है के वह रु–ए–ज़मीन पर उसकी कोई मिसाल हो सकती है– वह हैरान नज़रो से उसे देखती रह गयी,उसने ाहिस्ता–आहिस्ता क़दम उठाये और हर लहज़ा हैरत में डूबती चली

गई– उसके चारों तरफ़ अज़ीमुश्शान महल्लात थे– जिन के दर व दीवार ं जड़े सत रंग जवाहरात निगाहों को ख़ीरा (१६२) कर रहे थे– चमन में बहती ुई नहरों का पानी मोतियों जैसा शफ़्फ़ाफ़ था– गुलिस्तान की बहार क़ाबिले ीद् थी– कलियाँ चटक रही थी– फूल खिल रहे थे– फ़िज़ायें मोअत्तर थीं ौर हवाओं में ताज़गी और ख़ुश–गवारी थी– रुशें फूलों से भरी थीं और उनकी ाहक निराली थी–

इतनी ख़ूबसूरती– इतना हुस्न और दिलकशी यक्जा (१६४) देखकर ुबैदा हैरान हो रही थी के कुछ ग़ुलाम और कनीज़ें सफ़े बाँधे क़रीब आये– तरनिगार कुर्सी बैठने के लिये पेश की और मोअद्देबाना लहजे में बोले तशरिफ़ रखिये

जुबैदा तसवीरे हैरत बनी उस ज़रीं कुर्सी पर बैठ गई– एक कनीज़ ागे बढ़ी और उसने एक दस्तावेज़ चाँदी की तश्तरी में रख कर जुबैदा को ेश की– ज़ुबैदा ने कुछ मुताज़बज़िब (१६५) सी होकर दस्तावेज़ उठाई और रते–डरते उसपर निगाह डाली उसमें सोने के हर्फ़ों से लिखा थाः– "यह क़बाला है उस बेहिश्त का जो बोहलोल ने जुबैदा के हाथ फरोख़्त की है"–

इसके साथ ही उसकी आँख खुल गयी वह बहुत देर तक ख़ाब के सेहर जादू)में खोई रही– उसकी आँखों में वह तमाम फ़िरदौसी मनाज़िर रक़्स करने

लगे– उसने सोचा– ग़ौर किया और उसे यक़ीन हो गया के उसने जो कुछ देखा है– वह ख़ाब की सूरत में एक बशारत है– बोहलोल का वायदा सच था– क्योंकि उसने बेहिश्त का क़बाला लिखकर देने का वायदा किया था और जैसे नज़ारे उसने ख़ाब में देखे थे– वे रु–ए–ज़मीन पर कहीं नहीं थे–

उसका रोवाँ–रोवाँ मसर्रत व शादमानी से नाच उठा उसने बे ख़ुदी में हारुन को जगाया और फूले हुए साँसों के दरमियान बोली– "ज़िल्ले इलाही– आज मैंने सौ दीनार में बोहलोल से एक बेहिश्त ख़रीदी थी– मेरा ख़याल था के वह एक मज़ाक है– दीवाने की बड़ है– मगर वह अभी–अभी मुझे ख़ाब में दिखला दी गई है– उसका क़बाला (१६६) मेरे नाम है– मैंने अभी उसे अपनी आँखों से देखा है"–

"तुम्हारा दिमाग़ तो दुरुस्त है– अहमक़– के तुम्हें भी उस दीवाने ने पागल बना दिया है"– हारुन ने अपनी नींद ख़राब होने की ख़फ़्गी से कहा–

"नहीं–मैं सच कह रही हूँ– मेंने ख़ाब में जो कुछ देखा है– उसका दीदार किसी इन्सानी आँख ने नहीं किया होगा– वह बेहिश्त मेरे नाम है– ख़ुदा की क़सम मैंने उसकी दस्तावेज़ देखी है"५ ज़ुबैदा ने जोश से बताया–

"ओ हो यह वक़्त ऐसे उल्टे सीधे ख़ाब सुनाने का है– ख़ामोश हो जाओ ओर मेरी नींद ख़राब मत करो"– हारुन ने ग़ुस्से से कहा और करवट बदल ली–

लेकिन ज़ुबैदा की आँखों से नींद ग़ायब थी– वह तमाम रात उसने इसी तसव्वुर में गुज़ार दी– सुबह क़समें खा खाकर अपना ख़ाब सुनाया और उसे यक़ीन दिलाया के उसका ख़ाब सच्चा है और बोहलोल से ख़रीदी हुई जन्नत हक़ीक़्त है–

हारुन ने बोहलोल को बुला भेजा– वह अपनी गुदड़ी में लिपटा शहनशाहों की सी शान से आया और मानाख़ेज़ लहजे में हारुन से बोला–

"तुझ जैसे बादशाह को मुझ फक़ीर की ज़रुरत क्यों आ पड़ी है"– ?

सुना है– तूने बेहिश्त बेचने का कारोबार शुरु कर दिया है"– हारुन ने मज़ाक़ उड़ाया–

"महा–बदौलत तो यह कारोबार कब से कर रहे हैं–"बोहलोल ने बेनियाज़ी से जवाब दिया–

"सुना है तूने मल्का को भी कोई बेहिश्त बेची हैं" –हारुन ने सवाल किया–

"हाँ" –बोहलोल ने इसबात में सर हिलाया "कितने में" –? हारुन ने पूछा–

"सौ दीनार में "वह बोला–

"बहुत ख़ूब– मैं भी तुझे सौ दीनार से कुछ ज़्यादा ही दे दूँगा– एक बेहिश्त मेरे हाथ भी फरोख़्त कर दे" –हारुन ने कहा–

बोहलोल ने क़हक़हा लगाया– "हारुन तेरी मल्का ने तो अनदेखे यह सौदा किया था तूने तो उससे सबकुछ सुन लिया है– अब उसकी क़ीमत अदा करना तेरे बस में नहीं"

●

८

बोहलोल की इस करामत ने हारुन को फ़िक्रमन्द कर दिया– वह नहीं चाहता था के कोई ऐसी बात लोगों को अपनी तरफ़ मुतावज्जेह करे और वे उसके मोअ़त्क़िद बन जायें– क्योंकि उसे यह भी बदगुमानी थी के इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ०) जिन्हें उसने क़ैद कर रखा था५ वह उनसे ख़ुफ़िया राब्ता रखता है और उसके ख़िलाफ़ प्रोपेगण्डा करता है– उसने उन जासूस को बुलावाया– जो बोहलोल के बारे में तमाम ख़बरें पहुँचाते थे और उनसे बोला "तुम लोगों ने बोहलोल के बारे में क्या पता चलाया है" ?–

"जान की अमान पाऊँ तो कुछ अर्ज़ करूँ" –एक शख़्स ने जु़र्अत की–

"अमान है" हारुन ने कहा–

"आली–जाह– उसे दीवाना नहीं–दाना [१६७] कहना चाहिये– ऐसा मालूम होता है– जैसे उसने ख़ुद पर दीवानगी का एक ख़ोल सा चढ़ा रखा है वह दानिशमन्दी में अच्छे भले होशमन्दों को मात दे देता है– मैंने उसकी बहुत निगरानी की है– मगर कोई ऐसी बात नहीं देखी जिसपर गिरफ़्त की जा सके एक वज़ीर ने जवाब दिया–

"हमें ख़बर मिली है के उसने अवाम को अपना गिर्वीदा बना रखा है– लोग अपनी मुश्किलें लेकर उसके पास जाते हैं "हारुन ने ना–गवारी से कहा–

"आपने बजा फ़रमाया– ज़िल्ले सुबहानी– यह हक़ीकत है के वह लोगों के काम आता है और बड़े अजीब अन्दाज़ में उनकी मुश्किलें हल करता है– अगर इजाज़त हो तो मैं बग़दाद के सौदागर का क़िस्सा बयान करूँ– जिसकी मुश्किल बोहलोल ने हल की है" –दूसरे मुशीर ने गुफ़्तगु में हिस्सा लिया–

"इजाज़त है" –हारुन ने इजाज़त दी–

"इस बात को ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ– बग़दाद का एक शरीफ़ सौदागर

अजीब मुश्किल में गिरफ़्तार हो गया था– वह बहुत कम मुनाफ़े पर माल बेचता है–

इसलिए शहर में हर दिल अज़ीज़ है उसका एक कारोबारी रक़ीब (१६८) जो यहूदी है उससे हसद करता था और मौक़े की ताक में था के सौदागर को कोई नुक़सान पहुँचा सके– वह शहर में सूद पर रुपया भी चलाता है"

कुछ मुद्दत गुज़री उस शरीफ़ सौदागर को रुपये की ज़रुरत पड़ी– उसने यहूदी से क़र्ज़ माँगा– वह रुपये देने पर तैयार तो हो गया– लोकिन उसने एक निराली शर्त रखी के अगर सौदागर वक्ते मुक़र्ररह पर उसका कर्ज़ अदा न कर सका– तो वह उसके बदले में उसके जिस्म के जिस हिस्से से चाहेगा– एक सेर गोश्त काट लेगा– सौदागर मजबूर था– उसकी इज़्ज़त पर बनी थी– उसने मजबूरन शर्त मान ली और पक्की दस्तावेज़ लिखकर यहूदी के हवाले कर दी"

"इत्तेफ़ाक़ ऐसा हुआ के वह सौदागर वक्ते मुक़र्ररह पर क़र्ज़ अदा नहीं कर सका– तो यहूदी ने फ़ौरन मुक़द्दमा दायर कर दिया क्योंकि उसके पास सौदागर के हाथ की लिखी हुई दस्तावेज़ मौजूद थी–

इसलिये क़ाज़ी को फैसला यहूदी के हक़ में ही देना था– मगर वह आजकल पर टालता रहा–

क्योंकि उसे मालूम था के यहूदी सौदागर का सख़्त तरीन दुश्मन है– वह उसका ऐसा अज़ों (१६९) काटना चाहता है जो उसकी मौत का बायस बन जाये–

"यहूदी हर रोज़ काज़ी से हुक्म जारी करने का तक़ाज़ा करने लगा– क़ाज़ी के पास भी सौदागर के बचाओ की कोई तद्बीर नहीं थी– लोग भी उसके ख़िलाफ़ पर कुढ़ते थे– किसी ने बोहलोल से भी यह क़िस्सा जा कहा– उसने आव देखा न ताव उपनी गुद्दड़ी उठा कर कंधे पर डाली और क़ाज़ी की अदालत में जा पहुँचा– और क़ाज़ी से बोला–

"क़ाज़ी–जी– क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं के मैं इन्सानियत के नाते इस सौदागर की वकालत करूँ"–

क़ाज़ी ने उसे इजाज़त दे दी– तो वह अपना असा खटखटाता आगे

बढ़ा और बड़े इत्मीनान से सौदागर और यहूदी के दरमियान जा बैठा– और सौदागर से बोला– "भाई सौदागर क्या तूने इसको दस्तावेज़ लिखकर दी है के अगर तू क़र्ज़ अदा न कर सके तो उसे इख़्तेयार है के यह तेरे जिस्स का एक सेर गोश्त जिस जगह से चाहे उतार ले"–

"मुझे इससे इन्कार नहीं है"– वह ठण्डी साँस भर कर बोला–

फिर बोहलोल यहूदी की तरफ़ मुतावज्जेह हुआ– "क्यों भाई क्या यही दस्तावेज़ लिखी गई के तुम उसके जिस्म से एक सेर गोश्त जहाँ से चाहोगे काट लोगे"–

"बिल्कुल यही इक़रार हुआ था– मेरे पास दस्तावेज़ मौजूद हैं" यहूदी ने बड़े फ़ख्र से बताया–

"तो फिर ठीक है भाई– तुम्हें पूरा हक़ हासिल है के तुम सौदागर के जिस्म से एक सेर गोश्त काट लो जहाँ से जी चाहे काटो– लेकिन इतना ख़याल रखना के शर्त सिर्फ़ गोश्त की है और वह भी पूरा एक सेर–न कम न ज़्यादा– और ख़ून का एक क़तरा न निकले– अगर तुमने एक सेर से ज़्यादा या कम काटा या सौदागर का ख़ून ज़ाया (१७०) हुआ तो तुम्हें इक़दामे क़त्ल की सज़ा मिलेगी" –बोहलोल ने बहुत मज़े से कहा–

यहूदी का मुँह खुले का खुला रह गया– लोग अश–अश कर उठे और क़ाज़ी ने हुक्म दिया के यहूदी को सिर्फ़ रक़म अदा कर दी जाये–

"बहुत ख़ूब" – हारुन ने तौसीफ़ी अन्दाज़ में कहा "बहुत दूर की कौड़ी लाया बोहालोल"–

"आली–जाह– उसका दीवाना दिमाग़ अक्सर दूर की कौड़ी लाता है– अगर मुझे इजाज़त हो तो मैं बताऊँ के उसने एक बेवकूफ़ ग़ुलाम को क्या ख़ूब सबक़ सिखाया" –कोई दूसरा मुक़र्रब (१७१) बोला– "बयान करो" –हारुन ने इजाज़त दी–

चन्द रोज़ हुए यह ख़ाकसार कश्ती में बसरे गया– उसमें और लोगों के साथ बोहलोल भी सवार था– अचानक एक सौदागर का ग़ुलाम रोने और चिल्लाने लगा– "ख़ुदा के लिये मुझे कश्ती से उतारो– नहीं तो मैं मर जाऊँगा– ख़ुदा के

लिये इस क़श्ती को वापिस ले चलो– समन्दर की लहरें इसे उल्टा देंगीं हम सब डूब जायेंगें– तुम्हें ख़ुदा–व– रसूल का वास्ता कश्ती रोको" –

उसे एक लम्हा भी क़रार नहीं आ रहा था– और उसकी चीख़ व पुकार से कश्ती में सवार लोग बहुत परेशान हो रहे थे– कुछ मुसाफ़िरों नेउसे तसल्ली देने की कोशिश की– हर तरह से उसे समझाया बुझाया– लेकिन उसे किसी पल चैन नहीं था–

बोहलोल ने ग़ुलाम के मालिक से कहा– जनाब अगर आप इजाज़त दें तो मैं आपके ग़ुलाम का ख़ौफ़ दूर कर दूँ– बेचारा बहुत परेशान है"–

नेकी और पूछ–पूछ– भला इससे बेहतर और क्या बात होगी–

।– इसकी चीख़ पुकार हमारे दिमाग़ पर भी हथौड़े की तरह बरस रही है– अल्लाह तुम्हें जज़ा–ए–ख़ैर दे– इसे पुर–सुकून कर दो"– सौदागर ने जल्दी से कहा"–

बाक़ी लोगों ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलायी– बोहलोल ने क़रीब बैठे हुए लोगों से कहा– "भाइयों– तुम्हें ज़हमत तो होगी– ज़रा इस बेचारे ग़ुलाम को उठाकर समन्दर में तीन–चार डुबकियाँ तो दिलवा दो"–

लोग हँस पड़े– कुछ ने हैरान होकर उसकी तरफ़ देखा– ग़ुलाम और ज़्यादा चीख़ पुकार करने लगा बोहलोल बोला– भाइयों–जब इसके मालिक ने इजाज़त दे दी है तो तुम्हें क्यों ताम्मुल [१७२] है– शाबाश उठो– इसको समन्दर में दो चार ग़ोते दिलवा दो– चलो बिस्मिल्लाह करो"–

सौदागर ने उसकी ताईद [१७३] की– तो ग़ुलाम के क़रीब बैठे हुए लोगों ने उसको पकड़ लिया ग़ुलाम ने वा–वयला मचा कर आसमान सर पर उठा लिया– बहुत हाथ पैर मारे मगर उसकी एक न चली– कुछ आदमियों ने उसे मज़बूती से पकड़ लिया और समुंद्र में ग़ोते देने लगे– वह बचाओ बचाओ– का शोर मचाने लगा–

चन्द लम्हों बाद बोहलोल ने कहा– "यार इस बेचारे पर तरस खाओ और अब बस करो– इसका इलाज हो गया"–

मुसाफ़िरों ने उसे वापिस खींच लिया– उसने हाँपते–काँपते अपने नाक

और मुँह से पानी निकाला– बाल पोछे और एक किनारे पर बिल्कुल चुपचाप बैठ रहा– बाक़ी मुसाफ़िरों ने हैरत से उसकी ख़ामोशी को देखा– और बोहलोल से सवाल किया के "उसने यह नुस्ख़ा क्योंकर ईजाद किया जो इस क़द्र कारगर साबित हुआ"– ?

बोहलोल ने हँसकर जवाब दिया– "इस बेचारे को क़श्ती के आराम की क़द्र व क़ीमत का अन्दाज़ा ही नहीं था– समुंद्र में ग़ोते खाकर उसे यह नुक्ता समझ में आ गया है के कश्ती समुंद्र के मुक़ाबले में कितनी महफ़ूज़ है"–

हारुन मुस्कुराया– "इस मसख़रे का भी कोई ऐसा ही इलाज करना पड़ेगा– जो दीवाना बनकर दूसरों को दीवाना बनाता फिरता है"–

"ज़िल्ले–इलाही ने बजा फ़रमाया– हमारा अन्दाज़ा भी यही है के वह दीवाना नहीं है– बल्कि दूसरों को बेवकूफ़ बनाने के लिये ऐसी हरकतें करता है– कुछ रोज़ पहले तो हमें इसका सुबूत भी मिल गया के वह दीवाना– पागल और दनिशमन्द में तमीज़ करने की सलाहियत रखता है" –एक शख़्स ने कहा–

वह किस तरह– ? बयान करो" –हारुन ने मुताजस्सिस लहजे में कहा–

जब बोहलोल को पागलपन का दौरा पड़ा था तो एक ताजिर [१७४] ने ग़ालेबन फ़ाल लेने की ग़र्ज़ से बोहलोल से पूछा– हज़रत शेख़ बोहलोल साहब मेहरबानी फ़रमा कर मुझे मशाविरा दें कि मैं कौन सा माल खरीदूँ जो नफ़ा [१७५] बख़्श हो" – ?

बोहलोल ने बड़े इत्मीनान से कह दिया– "भाई तुम लोहा और रुई खरीद लो– अल्लाहताला बरकत देगा"–

दीवानों और दुर्वेशों [१७६] की बातों से अक्सर लोग फ़ाल लेते ही हैं, उसने भी बोहलोल की बात पर अमल किया– इत्तेफाक़न उसे बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा हुआ"–

दो ढाई माह बाद, उसने फिर माल ख़रीदने का इरादा किया तो सोचा के फिर बोहलोल की बातों से फ़ाल ली जाये– वह उसके पास आया– यह अपनी उन दीवानी हरकतों में लगा हुआ था– ताजिर ने उसे बुलाया– तो उसने अ'सा पर सवार होकर टख़–टख़ करता आया– उसने उसकी हालत देखकर कहीं कह

दिया–

"ओ, पागल बोहलोल– ज़रा यह तो बता के इस बार मैं तिजारत के लिय कौन सा माल खरीदूँ"–

बोहलोल फ़ौरन बोला– जा भाई प्याज़ और तर्बूज़ ख़रीद ले"–

"उस अहमक़ ने बग़ैर सोचे समझे अपना तमाम सर्माया प्याज़ तर्बूज़ ख़रीदने में लगा दिया–

फ़सल के दिनों में तो वैसे ही उनकी माँग नहीं थी– कुछ दिन ज़ख़ीरा किये– तो वह सड़ गये और उसे ख़सारा उठाना पड़ा– वह ग़ुस्से में भरा हुआ बोहलोल के पास आया और बोला– "ओ बोहलोल– तूने मुझे यह कैसा मशविरा दिया था–मेरा सारा सर्माया डूब गया– हालांकि पिछली बार तेरे मशविरे से मुझे बहुत मुनाफ़ा हुआ था"–

बोहलोल बोला– "हज़रत पहले रोज़ जब आपने मुझसे मशविरा माँगा था– तो जनाब शेख़ बोहलोल कहकर मुझे आवाज़ दी थी– गोया आपने मुझे दानिशमन्द समझकर मेरे वेक़ार का ख़याल रखा– मैंने भी दानिशमन्दी से मशविरा दिया–

लेकिन दूसरी बार आपको याद है के आपने क्या गौहर अफ़शानी (१७७) फ़रमायी थी"– ?

"नहीं" –ताजिर को याद नहीं था–

"आपने फ़रमाया था– ओ, पागल बोहलोल चूँकि आपने मुझे पागल समझकर मुख़ातब किया था– इसलिये मैंने भी आपको पागलपन से ही मशविरा दिया था"–

"बहुत ख़ूब– हारुन महज़ूज़ (१७८) हुआ– "यह तो होशमन्द दीवाना है– इसका कोई बन्दोबस्त करना ही पड़ेगा"–

"आपका फ़रमाना बजा– लेकिन हुज़ूर उसकी इस दीवानगी ने उसे अवाम से बहुत करीब कर दिया है– यह मुफ़्त में उनकी मुश्किलें हल करता है– उसपर ज़रा एहतियात से हाथ डालना होगा– "हर ग़रीब के साथ उठकर चल पड़ता

है वज़ीर ने इज़्हारे ख़याल किया–

"हूँ– तो फिर तुम ही बताओ के उस पर कौन सी फ़र्दे–जुर्म आयद [१७९] कि जाए के अवाम में कोई रद्दे अमल न हो" – ? हारुन ने पूछा–

जान की अमान पाऊँ– तो एक तजवीज़ पेश करूँ– एक मुशीर ने मोहतात् लहजे में कहा–

"अमान है" –हारुन ने शाहाना– निख़्वत [१८०] से गोया अहसान किया–

"उसपर इल्ज़ाम लगाया जा सकता है के वह अंबिया–ए–सलफ़ की तौहीन करता है– इसलिये इस्लाम से ख़ारिज है और वाजिबुल क़त्ल है"– उसने बताया–

"कोई सुबूत" – ?? हारुन ने रोबे शाही से कहा– इसका सुबूत भी मौजूद है और गवाह भी" –मुशीर बोला–

"बयान करो"– हारुन ने तहक्कुमाना [१८१] शान से कहा–

"कुछ लोगों ने बोहलोल से हज़रत लूत (अ०) के बारे में पूछा के वह किस कौम के पैग़म्बर थे ? तो वह कहने लगा– के उनके नाम से ज़ाहिर है के वह ऊबाशों [१८२] और अय्याशों के पैग़म्बर थे– लोग उस के पीछे पड़ गये के पैग़म्बरे ख़ुदा की शान में गुस्ताख़ी करता है– तो उसने यह कहकर अपनी जान बचाई के मैंने पैग़म्बरे ख़ुदा की शान में तो गुस्ताख़ी नहीं की–

मैंने तो उनकी क़ौम की बात की है– इसकी ताईद क़ुरानें पाक में मौजूद है"–

हारुन ज़ेरे लब मुस्कुराया– और बोला– "नहीं –नहीं उसपर यह इल्ज़ाम साबित नहीं किया जा सकता यह दीवाना बड़ा हाज़िर जवाब है और दूसरों को ला जवाब करने का हुनर ख़ूब जानता है"–

"आली–जाह– ऐसा वैसा हाज़िर जवाब– उसने तो आपके वज़ीरे ममलोकत का ऐसा नातेक़ा [१८३] बन्द किया था के मौसूफ़ बग़ले झाँकने लगे थे–

हालांकि वह ख़ुद को बहुत हाज़िर दिमाग़ समझते हैं"–

एक मुशीर ने वज़ीर ममलोकत का तज़किरा किया जो उस वक़्त महफ़िल में मौजूद नहीं था–

"वह क़िस्सा क्या है, बयान किया जाये" –हारुन ने इजाज़त दी

"आली–जाह– हुआ यूँ के एक रोज़ बोहलोल यहाँ आया तो इत्तेफ़ाकन वज़ीरे ममलोकत से मुलाक़ात हो गई– उन्होने मेज़ाहन (१८४) बोहलोल से कहा– "बोहलोल– मुबारक हो– अभी–अभी हुक्म आया है के ख़लीफ़ा ने तुझे कुत्तों, मुर्ग़ों और सूअरों का अमीर और हाकिम बना दिया है"–

बोहलोल ने एक लम्हा तवक्कुफ़ (१८५) नहीं किया और बड़े रोब से बोला– "ख़बरदार– अब हमारे हुक्म से सरताबी की जुर्अत न करना इस हुक्म से तू भी मेरी रय्यत (१८६) हो गया है" –उसने यह बात इतनी बेसाख़्तगी से कही के वहाँ मौजूद कोई भी अपनी हँसी पर क़ाबू नहीं पा सका और वज़ीरे ममलोकत को वहाँ से टलते ही बनी"–

हारुन हँसने लगा– तो उसके ख़ुश–गवार मेंज़ाज से शह पाकर मुशीर के किसी हासिद (१८७) ने मौक़ा ग़नीमत जानकर कहा– "आली–जाह, मुशीर साहब ने वज़ीरे ममलोकत का वाक़ेआ तो बयान कर दिया– लेकिन ज़रा उनसे भी तो पूछिये के पिछले हफ़्ते हज़रत बोहलोल ने उनके साथ क्या किया है" – ?

हारुन ने उसकी जानिब देखा– "बोलो क्या हुआ था"– ??

वह ख़फ़ीफ़–सा हो गया और उस शख़्स पर क़हर आलूद निगाह डाल कर बोला– ज़िल्ले इलाही हासिदों का काम दूसरों को नीचा दिखाना है"–

"तुमने वज़ीरे ममलोकत के साथ जो कुछ किया है उसका निशाना तुम्हारी अपनी ज़ात भी बन गयी है फ़ौरन वह क़िस्सा बयान करो" –हारुन ने सरज़निश की–

सरताबी की मजाल किसमें थी वह ख़जिल सा होकर अपना क़िस्सा आप ही कहने लगा– "आली–जाह– उस रोज़ मैंने खाने के साथ पनीर भी खाया था– शायद उसका कोई रेज़ा मेरी दाढ़ी में भी अटका रह गया– लेकिन मुझे इसकी ख़बर नहीं थी–

शूमिये क़िसमत के बोहलोल उस तरफ़ आ निकला और मुझसे पूछने लगा– "मुशीर साहब– आज आपने नाश्ते में क्या तनाव्वुल फ़रमाया है"– ?

मैंने हँसी–हँसी में कह दिया– "मैंने कबूतर खाया है" – ?

तो वह कहने लगा– "तब ही उसकी बीट आपकी रीशे मुबारक में अटकी हुई नज़र आ रही है–

हारुन बे साख़्ता हँस पड़ा– "वल्लाह कैसा मसख़रा है यह बोहलोल, कल उसे दरबार में तलब करो– हम ख़ुद उससे बात करेंगें"।

●

अगले रोज़ बोहलोल दरबार में हाज़िर था– हारुन अपने ज़र–निगार तख़्त पर शाही लिबास पहने बड़ी तमकेनत से बैठे हुआ था– बोहलोल अपनी बोसीदा पापोश और पेवंद लगी गुद्ड़ी के साथ उसके हुज़ूर में पेश किया गया– हारुन ने एक क़हर आलूद निगाह उसपर डाली और ख़श्मगीन (१८८) लहजे में बोला– "बोहलोल– तू बहुत होशियार बनता है– लेकिन हमें पता चला है के तू हुकूमत के बाग़ी मूसा बिन जाफ़र (अ०) के दोस्तदारों में से है– उन्हीं के हुक्म पर तू दीवाना बना हुआ है– ताकि अवाम को उनकी तरफ़ मुतावज्जेह करके हमारी हुकूमत का तख़्ता उल्ट दे– तू समझता है के पागल होने की वजह से तेरी कोई पूछ–ताछं नहीं होगी– लेकिन याद रख कि हुकूमत तेरी तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं है– तेरी सब सर–गर्मियों की ख़बर हमें बराबर मिलती है"–

बोहलोल ने मज़हका–ख़ेज़ सूरत बनाई "ज़ाहिर है के तुम्हारे नमक हलाल शिकारी कुत्ते सही इत्तेलाअ़ ही लेकर आये होगें– तो अब ख़लीफ़ा मुझसे कैसा सुलूक़ करेंगें"–

भरे दरबार में मज़ाक़ उड़ाने पर हारुन को और तैश आया– "तुम्हें ऐसा सबक़ सिखाया जायेगा के तुम दूसरों के लिए नमून–ए–इबरत बन जाओगे"–

उसने ग़ुस्से से कहा और अपने ग़ुलाम को पुकारा–मसरुर ले जाओ इस गुस्ताख़ को– इसके कपड़े उतार लो और इसपर गधे का पालान डाल दो– इसके मुँह में लगाम दो– इसे महल और हरम–सरा में फिराओ और उसके बाद मेरे सामने इसका सिरे पुर ग़ुरुर उड़ा दो"–

दरबार में सन्नाटा छा गया– दरबारी हैबते शाही से काँप गये– लेकिन बोहलोल शाने बेनियाज़ी से खड़ा मुस्कुराता रहा– मसरुर आगे बढ़ा और उसने बोहलोल की गुद्ड़ी घसीट कर परे उछाली– उसका बोसीदा लिबास

नोचकर उस-पे-गधे का पालान कस दिया- उसके मुँह में लगाम दी और उसे खींचता हुआ महल और हरम-सरा की तरफ़ ले गया-

शाही दरबारों और महल सराओं में इन्सानियत की तज़लील रोज़ का मामूल है- इसलिये बोहलोल की इस हैबते कज़ाई पर किसी को ताज्जुब नहीं हुआ- महल और हरम-सरा के मकीन, इन्सानियत की इस तौहीन को तमाशे की तरह देखते रहे- किसी ने सोचा के बोहलोल तो दीवाना है- इसलिये सज़ा का मुस्तौजब (१८९) नहीं लेकिन जान के ख़ौफ़ ने ज़बान को बन्द कर रखा था- कोई कुछ न कह सका-

मसरुर उसकी लगाम खींचता उसे दरबार में वापिस ले आया- और हारुन के सामने अद्ब से झुक कर बोला- "आली-जाह आपके हुक्म की तामील हुई- क्या इसकी गर्दन उड़ा दी जाये-

हारुन ने अभी जवाब नहीं दिया था कि नागाह उसका वज़ीर जाफ़र बर-मक्की दरबार में दाख़िल हुआ- "उसने हैरत से बोहलोल की यह हालत देखी और बोला-

बोहलोल ख़ैरियत तो है- ऐसा क्या कुसूर हो गया तुमसे जो यह हालत बनी है"- ?

बोहलोल हँसा- "जनाबे आली- यह तो कुछ भी नहीं अभी तो मेरी गदर्न भी मारी जायेगी"-

"मगर किस जुर्म में" - ? जाफ़र बर-मक्की ने पूछा

"मैंने एक सच्ची बात कह दी थी- जिसके इनाम में ख़लीफ़ा ने मुझे ख़ुल-अ़ते फाख़ेरा अता की है और जामे मर्ग मेरा इन्तेज़ार कर रहा है"-

हारुन को बे साख़्ता हँसी आ गयी- ख़लीफ़ा को हँसते देखकर दरबारी और जाफ़र बर-मक्की जो अपनी हँसी ज़ब्त कर रहे थे- वे भी हँस पड़े- हारुन का ग़ुस्सा काफ़ूर हो गया और उसने शाही हुक्म जारी किया- जैसा बोहलोल ने कहा है उसे वैसा ही ख़ुल्अ़ते फाख़रा अता किया जाये"-

"ख़लीफ़ा के इस करम का शुक्रिया मुझे अपनी पेवंद लगी गुद्ड़ी ही

ग़नीमत है"– बोहलोल ने अपनी गुद्ड़ी शाने–पे डाली–

"बोहलोल को दरहम व दीनार अता किये जायें"– शाही फ़रमान जारी हुआ–

"नहीं– मुझे अहले जहन्नम की पेशानियों और पुश्तों पर लगने वाली मोंहरों की ज़रुरत नहीं"– बोहलोल चलने पर तैयार हो गया–

हारुन ने उसे रोका– "बोहलोल– अगर तुम इस इनाम व इकराम को अपने इस्तेमाल में नहीं लाना चाहते तो ग़रीबों और मोहताजों में बाँट देना– उनका भला हो जायेगा"–

बोहलोल रुक गया और उसने रक़म की थैलियाँ ग़ुलाम से ले लीं– चन्द क़दम चला और रुक गया– कुछ सोचने लगा– फिर आगे बढ़ा और रुक गया– फिर कुछ सोचा और वापिस पलट आया–

उसने रक़म की थैलियाँ हारुन के सामने ढेर कर दीं– और बोला "हारुन– मैंने बहुत सोचा है के इन अशर्फ़ियों की सबसे ज़्यादा ज़रुरत किसको है लेकिन मुझे तुझसे ज़्यादा मुस्तहक़ कोई और नज़र नहीं आया– तुझसे ज़्यादा नादार और ज़रुरतमन्द शायद और कोई नहीं– क्योंकि मैं रोज़ देखता हूँ के तेरे कारिन्दे हर जगह लोगों को कोड़े मार मारकर उनसे टैक्स वुसूल करते हैं– तकि तेरे ख़ज़ाने पुर हों– सारे शहर में सबसे बड़ा ज़रुरतमंद तो तू ख़ुद है– इसलिये यह रक़म तू ही रख ले"–

ख़लीफ़ा दम–ब–ख़ुद (१९०) रह गया– अहलेदरबार सन्नाटे में आ गये– बोहलोल के अन्जाम को सोच कर उनके रोंग्टे खड़े हो गये– लेकिन बोहलोल इत्मीनान से चल खड़ा हुआ–

"रोको– रोको इस दीवाने को रोको"–

अचानक ख़लीफ़ा हारुन की आवज़ गूँजी–

अहलेदरबार इस तसव्वुर से ही काँप गये के अब बोहलोल का इताबे शाही से बचना मोहाल है–

दो ग़ुलाम तेज़ी से आगे बढ़े और बोहलोल को घसीट कर हारुन के

सामने ले आये"–

हारुन की आँखे नम थी और पशेमानी ने उसकी आवाज़ को पस्त कर दिया था– वह गहरी साँस लेकर बोला– "बोहलोल– तेरी दीवानगी हम जैसे होशमन्दों के लिये एक नेमत है–

तेरी इस बात ने मेरे दिल को नर्म कर दिया है मेरा जी चाहता है के तुझसे कुछ पंद व नसीहत की फरमाइश करूँ"–

गुलामों ने फ़ौरन ही बोहलोल को छोड़ दिया– वह अपनी मखसूस शाने बेनियाज़ी से गोया हुआ– "हारुन– पिछले ख़लीफ़ाओं के महलों और उन क़ब्रों को देखकर इबरत हासिल कर –तू ख़ूब जानता है कि ये लोग अर्स–ए–दराज़ तक उन महलों में ऐश व इशरत की ज़िंदगी गुज़ारते रहे– और अब क़ब्रों में पड़े पछताते और अफ़सोस करते हैं के काश– उन्होंने अपनी आख़ेरत के लिये कुछ नेक आमाल अपने साथ ले लिये होते– मगर अब उन्हें इस पछतावे से कुछ हासिल नहीं हो सकता– हम सब भी जल्द–या–ब–देर इसी अन्जाम को पहुँचने वाले हैं– जब यह शाही रोब व दबदबा और शान व शौकत कोई काम नहीं देगी"– हारुन पर कपकपी सी तारी हो गई– मुतास्सिफ़ (१९१) लहजे में बोला– "बोहलोल कुछ ऐसे आमाल बता जिनके बजा लाने से अल्लाह मुझसे ख़ुश हो जाये"–

"उसकी मख़लूक़ को ख़ुश कर– वह तुझसे राज़ी हो जायेगा" –बोहलोल ने जवाब दिया–

"अब इसकी तद्बीर भी बता दो के ख़ल्के ख़ुदा को किस तरह ख़ुश रखा जा सकता है"– हारुन ने पूछा

"अद्ल व इन्साफ़ में सबको बराबर का दर्जा दो जो अपने लिये मुनासिब नहीं समझते– दूसरों को भी उसका मुस्तहक़ न समझ– मज़लूम की फ़रियाद तवज्जोह से सुनो और इन्साफ़ से फैसला करो– "बोहलोल ने बुर्दबारी से कहा"

"आफ़रीन सद आफ़रीन बोहलोल–मरहबा– तुमने कैसी हक़ बात कही है– मरहबा हारुन ने तौसीफ़ी लहजे में कहा– उसकी हाँ में हाँ मिलाने वाले दरबारियों ने भी नारा–हाय–तहसीन बलन्द किये

हारुन ने हुक्मे शाही जारी किया– "हुक्म दिया जाता है के शाही ख़ज़ाने से बोहलोल के तमाम क़र्ज़ अदा कर दिये जायें"–

"हारुन क़र्ज़ से भी कभी क़र्ज़ अदा हुआ है"–

बोहलोल ने उसे मुख़ातब करके कहा– "शाही खज़ाने में जो कुछ है५ वह अवाम का माल है और ख़लीफ़ा पर क़र्ज़ है– तुम्हारे लिये यही मुनासिब है के अवाम का क़र्ज़ उन्हें लौटा दो– मुझे तुम्हारा यह एहसान नहीं चाहिये"–

"तो फिर बोहलोल कोई तो ख़्वाहिश करो– मैं दिल से चाहता हूँ के तुम्हारी कोई आरज़ू पूरी करूँ"– हारुन ने ज़ोर देकर कहा–

"तो फिर मेरी ख़्वाहिश और आरज़ू यही है के मेरी नसीहतों पर अमल करो– लेकिन अफ़सोस के दुनिया की शान शौकत और इक्तेदार का नशा बहुत जल्द मेरी इन नसीहतों को फ़रामोश कर देगा"–

यह कहता हुआ वह दरबार से बाहर निकल गया– हारुन और अहलेदरबार झुके हुए सरों के साथ ख़ामोश बैठे रह गये।

●

१०

बोहलोल अपने वीरान खण्डर में वापिस आया– तो देखा उसमे क़दमों के निशान हैं– यूँ मालूम होता था– जैसे कोई यहाँ आया है– उसने फ़ौरन एक खास जगह पर देखा– ताज़ा खुदी हुई मिट्टी जिसको हमवार किया गया था– बतर रही थी के उसका अन्दाज़ा सही था– उसने अपनी छड़ी से मिट्टी को हटाया५ उसकी जमाशुदा रक़म ग़ायब थी–

बोहलोल कुछ रक़म किसी हंगामी ज़रुरत के लिये मिट्टी में छिपाकर रखता था– ग़ालेबन किसी ने उसे रक़म छुपाते हुए ताड़ लिया था– उसने अपनी गुद्ड़ी उठाई और चल पड़ा और नज़दीक ही वाक़ेअ मोची की दुकान पर पहुँचा और बड़ी ख़ुश–तब–ई–से उसे सलाम किया–

"आओ– आओ बोहलोल– कैसे आना हुआ" – ? मोची ने ख़ुशी से पूछा–

"मैंने सोचा के तुमसे मिला आऊँ– फिर तुम से एक काम भी है"– बोहलोल ने कहा–

कैसा काम है"– ?? मोची ने पूछा– "तुम एक अच्छे इन्सान हो– मुझ जैसे दीवाने के साथ भी ख़ुश–अख़लाक़ी से पेश आते हो– मैं तुमसे एक मशविरा लेना चाहता हूँ"– बोहलोल ने कहा–

"यह तुम्हारी मेहरबानी है के तुम ऐसा समझते हो"– मोची ने ख़ुश होकर कहा–

बोहलोल ज़रा क़रीब हुआ और बोला– "तुम तो जानते हो के मैं वीरानों खण्डरों और ख़ाली मकानों ही में रहता हूँ– मैं जहाँ भी रहा– वहाँ थोड़ी बहुत रक़म अपने बुरे वक़्त के लिये बचा कर ज़मीन में दफ़्न कर दी– तुम ज़रा हिसाब लगाकर मुझे बता दो के ये रक़म कुल कितनी होती है"–

"हाँ–हाँ क्यों नहीं– तुम बताओ मैं हिसाब कर देता हूँ" –मोची ने

फ़ेराख़दिली से कहा–

ख़ुदा तुम्हारा भला करे– शहर के मश्रिक़ी (१९२) गोशे में जो खण्डर है– वहाँ मैंने शायद सौ सिक्के दबा रखे हैं– क़ब्रिस्तान में तक़रीबन ढ़ाई सौ सिक्के होगें और एक मकान के सहन में तो पूरे पाँच सौ हैं– हाँ याद आया नहर के किनारे भी पचास सिक्के दफ़्न हैं– तो यह सब मिलाकर कुल कितने हुए" ? बोहलोल ने पूछा–

"अगर ये सिक्के सोने के हैं तो इनकी मालियत दो हज़ार के लगभग ज़रुर है" –मोची ने हिसाब लगाकर बताया–

बोहलोलल कुछ देर सोचता रहा फिर सर उठाकर बोला– "यार– मैं–चाहता हूँ के इन सब जगहों से वे तमाम सिक्के निकाल लाऊँ और इस वीराने में छुपा दूँ– यहाँ आमद–व–रफ़्त कम है" मेरा ख़याल है यह जगह ज़्यादा महफ़ूज़ है"–

यह तो बहुत अच्छा ख़याल है– तमाम रक़म एक जगह रखें ताकि जब ज़रुरत पड़े तो निकालने में आसानी हो" –मोची ने दिल ही दिल में ख़ुश होते हुए मशविरा दिया–

बोहलोल अपनी छड़ी के सहारे उठा– "अच्छा तो भाई मैं चलता हूँ– आज ही यह काम कर लूँ तो अच्छा है– सारे सिक्के निकाल कर ले आऊँ और यहाँ गाड़ दूँ– मेरे लिये दुआ करना"–

"हाँ–जाओ अल्लाह तुम्हारा निगेहबान हो" –मोची ने उसे अलविदा कहा–

वह चला गया– तो मोची ने सोचा के उसने बोहलोल के जो सिक्के ज़मीन खोदकर चुराये थे–

उन्हें वापिस रख आये ताकि जब बोहलोल अपने बाक़ी सिक्के लेकर

आये तो उसे शक न हो– और वह अपनी बाक़ी दौलत भी यहाँ गाड़ दे–उसके बाद वह मौक़ा देखकर सारी रक़म निकाल लेगा–

वह जल्दी से गया और उसी जगह बोहलोल की रक़म दबाकर वापिस आ गया–

बोहलोल कहीं शाम को वापिस आया– उसने मिट्टी हटाकर अपनी रक़म निकाल ली और वह वीराना छोड़ कर चला गया– मोची बेचारा उसका इन्तेज़ार ही करता रह गया–

वह अपनी रक़म निकालकर उस वीराने से निकला और कोई दूसरा ठिकाना तलाश करने लगा–

इत्तेफ़ाक़न उसे एक शिकस्ता मकान नज़र आया जो ख़ाली पड़ा था– तमाम शहर जानता था के वह वीरानों से मानूस है– और ऐसी ही जगहों पर रहता है– इसलिये ओमूमन (१९४) कोई उससे तार्रुज़ (१९५) नहीं करता था– उसकी बे–सर–व सामानी ही उसका असासा (१९६) था उसने उस शिकस्ता मकान का एक गोशा साफ़ किया और वहीं डेरा जमा लिया–

अभी उसे वहाँ बसेरा किये ज़्यादा देर नहीं हुई थी के टूटे दरवाज़े से एक शख़्स अन्दर दाख़िल हुआ उसने सलाम किया और बोला– "वाह–वाह–

बहुत ख़ूब– यह देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई है के बोहलोल जैसा नामूर शख़्स मेरा नया किरायेदार है"–

बोहलोल सीधा हो बैठा– "मुझे भी इसं आलीशान मकान के मालिक से मिलकर बे–हद ख़ुशी हुई है"

"मुझे उम्मीद है के आप इस माह का किराया अदा कर देंगे" मालिक मकान ने कहा–

बोहलोल ने मकान की लरज़ती हुई छत और शिकस्ता दीवारों की जानिब

इशारा किया– "जनाब ने अपने इस शानदार महल की हालत को मुलाहिज़ा फ़रमाया है के ज़रा सी हवा चले तो इसकी छत और दीवारे बोलने लगती है।

बेशकं– बेशक– आप दुरुस्त फ़रमाते हैं– आप जैसा बुज़ुर्ग यह भी जानता होगा के तमाम मौजूदाते–आलम ख़ुदा की हम्द व सना (१९७) करते हैं– यह जो आवज़ आप सुनते हैं यह इस मकान की तसबीह करने की सदा (१९८) है" –वह बोला

बोहलोल ने अपना असा सँभाला और फ़ौरन ही उठ खड़ा हुआ और बोला– "हज़रत आप जैसे दानिशमन्द इन्सान को यह तो मालूम होगा के मौजूदात हम्द व सना और तसबीह व तहलील के बाद सजदा भी करते हैं और मैं आपके इस इस मकान के सजदा करने से पहले ही यहाँ से रुख़सत हो जाना चाहता हूँ" –उसने गुद्ड़ी सँभाली और मकान से बाहर निकल आया।

●

११

हारुन ने अपनी सी बहुत कोशिश की के किसी तरह बोहलोल पर गिरफ़्त की जा सके लेकिन उसकी हाज़िर दिमाग़ी, उसकी पुर-हिकमत गुफ़्तुगु और अवाम के साथ उसकी क़ुर्बत ने उसे इसका मौक़ा नहीं दिया- वह अपने जासूसों को उसके पीछे लगाये रखता ताकि उसकी सरगर्मियों से बा-ख़बर रहे- किसी वक़्त सख़्ती से उसकी बाज़ पुर्स (१९९) करता- लेकिन अक्सर मुश्किल मौक़ो पर बोहलोल ही काम आता-

एक बार एक सय्याह (२००) बग़दाद में आया- उसने घाट-घाट का पानी पिया था- मुल्कों-मुल्कों घूमा था जब वह हारुन के दरबार में हाज़िर हुआ तो उसने ख़लीफ़ा के वज़ीरों और दानिशवरों से कुछ सवालात किये लेकिन कोई भी उसका जवाब न दे सका-

हारुन अपने मुक़र्रबीन की नालाएक़ी पर बहुत शर्मिन्दा हुआ- सय्याह रुख़सत हुआ तो वह अपने वज़ीरों और मुशीरों पर बरस पड़ा- "तुम सब लोग मेरे लिए बायसे नंग-व-आर (२०१) हो- आज इस सय्याह ने तुम्हें कैसा आजिज़ किया- यूँ मालूम होता था जैसे तुम इसके मुक़ाबले में तिफ़्ले मकतब (२०२) हो"-

दरबारियों के सर शर्म से झुक गये- उनके पास अपनी सफ़ाई में कहने के लिये कुछ भी नहीं था इताबेशाही और जोश में आया- "कल इस सय्याह को दरबार में तलब किया जायेगा अगर तुम लोग उसके सवालों का जवाब न दे सके तो तुम्हारी सब जायदाद और माल व दौलत उसके हवाले कर दिया जायेगा"-

हारुन ने दरबार बर्ख़ास्त कर दिया- दरबारियों में खलबली मच गयी उनकी परेशानी का कोई ठिकाना नहीं था- वे सब एक जगह जमा होकर सोचने लगे के बादशाह के इताब से क्योंकर बचा जा सकता है- आख़िर एक शख़्स

को अचानक याद आया और ख़ुशी से बोला–

दोस्तों– इस मुश्किल को हल करने के लिये हमारे पास बोहलोल जो मौजूद है– मुझे यक़ीन है के वह सय्याह को ला–जवाब कर देगा–

और उसके सब सवालों के जवाबात ठीक–ठीक देगा"–

बाक़ी सब लोगों की भी जान में जान आयी और वे सब मिलकर बोहलोल के पास पहुँचे – उसे तमाम माजरा सुनाया– तो उसने उन्हें तसल्ली दी के वह अगले दिन दरबार में पहुँचकर सय्याह के सवालो के जवाबाब ज़रुर देगा"–

अगले रोज़ दरबार आरास्ता हुआ– वज़ीर,मीर, मुशीर ज़र्रीं–कुसियों पर बैठे– हारुन अपने ज़र–निगार तख़्त पर मुतामक्किन हुआ–

सय्याह को भी एक कुर्सी पेश की गई– हारुन ने अहलेदरबार पर निगाह डाली और बोला तुममे से कौन इस मोअज़्ज़ज़ (२०३) सय्याह के सवालों का जवाब देगा"– ?

अहलेदरबार ने आँखों ही आँखों मे एक दूसरे की तरफ़ देखा के बोहलोल का नाम किस तरह ले– कहीं उसका नाम हारुन को ना–गवार न गुज़रे– के उसी वक्त़ बोहलोल की आवाज़ गूँजी–

"यह दीवाना हाज़िर है– अहले दरबार को ज़हमत करने की ज़रुरत नहीं" –वह अपनी लाठी पटख़्ता– गुद्ड़ी शाने पे डाले दाख़िले दरबार हुआ और सय्याह के क़रीब जा बैठा–

हारुन कुछ हिचकिचाया– लेकिन पहलु में बैठे हुए वज़ीर ने उसके कान में कुछ कह दिया– जिससे उसके चेहरे पर इत्मीनान की झलक नज़र आयी– सय्याह ने बोहलोल की हैबते कज़ाई (२०४) की तरफ़ देखा और क़द्रे ताज्जुब से बोला– "क्या मैं आपसे सवालात करुँ" ?

ब–सर–व–चश्म– बोहलोल ने मुस्तैदी (२०५) से जवाब दिया– वह सय्याह उठा और अपनी छड़ी से ज़मीन पर एक दायरा (२०६) खींच दिया

बोहलोल ने फ़ौरन ही उठ कर अपने असे से उस दायरे के दरमियान में एक लकीर खींच कर उसे दो हिस्सों में बाँट दिया–

सय्याह के चेहरे पर मुस्कुराहट आयी और उसने एक और दायरा खींच दिया– बोहलोल ने इस मर्तबा दायरे को चार हिस्सों में बाँटा और एक हिस्से पर छड़ी रखकर खटखटाई– सय्याह ने क़द्रे हैरत से उसकी जानिब देखा और ज़मीन पर अपना हाथ उल्टी तरफ रखकर उँगलियाँ आसमान की तरफ़ उठा दी– बोहलोल ने उठकर अपना हाथ ज़मीन पर इस तरह रखा के उसके हाथ की पुश्त ऊपर थी–

सय्याह अपनी नशिस्त पर आ बैठा और तौसीफ़ी लहजे में बोलाः "मरहबा– आफ़रीं

आली–जाह मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ के आपके यहाँ ऐसा दानिशमन्द–आलिम मौजूद है जिसपर फ़ख्र किया जा सकता है ऐसे शख़्स की क़द्र की जानी चाहिये"–

"क्या बोहलोल ने तुम्हारे सब सवालों का जवाबात ठीक–ठीक दिये हैं"– हारुन ने पूछा–

"यक़ीनन– उसने किसी बहुत अज़ीम दर्सगाह से तालीम हासिल की है जो उसके पास इतना इल्म है के यह मेरे इशारे फ़ौरन समझ गया है"– सय्याह बोला–

बोहलोल मुस्कुराया– उस अज़ीम दर्सगाह का नाम मत पूछना क्योंकि उसे सभी जानते हैं"–

बोहलोल का इशारा सब समझ रहे थे–

लेकिन सय्याह कुछ नहीं समझा और चाहता था के कोई सवाल करे के हारुन ने फ़ौरन पूछ लिया–

"अगर तुम इन इशारों को ज़रा खोल कर बयान करो तो अहलेदरबार भी

महज़ूज़ हो सकेंगें और सीख भी लेंगे"-

सय्याह बोला- "आपने देखा के मैंने ज़मीन पर दायरा खींचा था- मेरा मक़सद ज़मीन का कुरा (२०७) दिखाना था- आपका आलिम फ़ौरन समझ गया और उसने दायरे के दो बराबर हिस्से करके मुझ पर ज़ाहिर कर दिया के वह ज़मीन के गोल होने पर यक़ीन रखता है और उसके असरार व रोमूज़ (२०८) से भी वाक़िफ़ है- उसने इस लकीर से खत्ते-इस्तेवा (२०९) को दिखाया जिससे ज़मीन शुमाली (२१०) और जुनूबी (२११) कुरे में बँट गई"-

फिर आपने देखा के मैंने एक और दायरा खींचा- आपके आलिम ने उसके चार हिस्से बनाये- और उस ने चार हिस्से करके मुझे समझा दिया के ज़मीन में तीन हिस्से पानी और एक हिस्सा ख़ुश्की है- और जब मैंने हाथ की उँगलियों से ज़मीन पर उगने वाली नबातात (२१२) की तरफ़ इशारा किया तो उसने बारिश और सूरज की निशानदेही की जो नबातात की बालीदगी और नशो नुमा का ज़रीया हैं- मैं एक बार फिर कहता हूँ के आपको ऐसे दानिशमन्द पर फख्र करना चाहिये"।

१२

हारुन को अन्दाज़ा हो गया था के बोहलोल एक बे–ज़रर और मुफ़ीद इन्सान है– उसकी शेगुफ़्ता–बातों की हिकमत तफ़न्नुने तबअ़ (२१३) का ज़रिया भी बनती थी– वह बग़दाद शहर का एक पंसदीदा और हरदिल अज़ीज़ किरदार था– जब भी हारुन उसके साथ सख़्ती करना चाहता– उसकी शोख़ी में छुपी हुई दानिशमन्दी उसे साफ़ बचा ले जाती– बोहलोल की तमाम जिन्दगी इसी आँख–मिचोली में गुज़री– हारुन कोशिश करता रहा के उसे किसी तरह फाँस ले या उसका क़िस्सा ही तमाम कर दे–

मगर जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे– बोहलोल अपनी दीवानगी का लिबादा ओढ़े उसके और उसके वज़ीरों के सामने खड़ा उन्हें आईना दिखाता रहा– वह अपने पागलपन की आड़ में न सिर्फ़ अपनी जान बचाता रहा– बल्कि उन्हें इल्म–व–हिकमत की तालीम भी देता रहा और अपने जुनून का सहारा लेकर अवाम की मुशकिलें हल करता रहा–

एक मर्तबा ख़ुरासान का एक मशहूर फ़क़ीह (२१४) बग़दाद आया– हारुन को भी उस से मुलाक़ात का इश्तियाक़ हुआ– उसने उसे दरबार में बुलाया– गर्म–जोशी से उसका ख़ैर मक़दम किया और बड़ी क़द्र व–मंज़िलत के साथ अपने पास बैठाया–

फ़क़ीह इस इज़्ज़त अफ़ज़ाई पर फूले नहीं समा रहा था और हारुन पर अपने इल्म की धाक बैठने की कोशिश कर रहा था के अचानक बोहलोल कहीं से फिरता–फिराता दरबार में आ निकला–

उसने सलाम किया– हारुन ने उसे बैठने के लिये कहा– फ़क़ीह ने उसका मामूली लिबास बोसीदा गुदड़ी और धूल में अटी हुई जूतियाँ देखी और क़द्रे हैरत से बोला– "आप बहुत मेहरबान और फेराख़दिल है के मामूली लोगों को भी अपने दरबार में जगह देते हैं"–

बोहलोल अपनी जगह से उठा और अपना असा खटखटाता उसके क़रीब पहुँचा और बोला–

"क़िब्ला– गुस्ताख़ी माफ़ आप अपने नाक़िस इल्म पर क्यों इतना मग़रुर हैं– आप मेरी ज़ाहिरी हालत का ख़याल न कीजिये और मेरे साथ इल्मी मुबाहिसा करने के लिये तैयार हो जाइये ताकि आपको पता चल जाये के आप तो कुछ भी नहीं जानते"–

फ़क़ीह ने एक निगाहे ग़लत अन्दाज़ उस पर डाली– "मैंने सुना है के तू पागल है और मैं पागलों से मुबाहिसा नहीं किया करता"–

मैंने कब कहा कि मैं पागल नहीं हूँ– मैं तो अपने मागलपन का ख़ुद इक़रार करता हूँ

मगर आप हैं के आपको अपनी कम इल्मी का कुछ पता ही नहीं" –बोहलोल ने मज़े से कहा–

हारुन ने क़हर–आलूद निगाहों से बोहलोल की तरफ़ देखा–

"बोहलोल ख़ामोश रहो– तुम्हें मालूम नहीं के यह ख़ुरासान के नामूर फ़क़ीह हैं"–

"इसलिये तो चाहता हूँ के यह मुझसे इल्मी मुबाहिसा कर लें "बोहलोल ने इत्मीनान से कहा–

हारुन भी इल्मी मुबाहिसों और मुनाज़िरों का शायक़ (२१५) था– वह उस फक़ीह से बोला– "क्या मुज़ाएक़ा है– तुम्हें बोहलोल की दावत क़ुबूल कर लेनी चाहिये"–

"तो फिर मेरी एक शर्त होगी "फ़क़ीह बोला "इजाज़त है– तुम जैसी चाहो शरायत (२१६) तय कर लो हारुन ने इजाज़त दी–

फ़क़ीह बोला– "मेरी शर्त यह है कि मैं बोहलोल से एक मोअ़म्मा पूछूँगा– अगर इसने दुरुस्त जवाब दे दिया–

तो इसे एक हज़ार अशर्फियाँ दूँगा और अगर यह नाकाम रहा तो मुझे एक हज़ार अशर्फियाँ देने का पाबंद होगा"–

बोहलोल मुस्कुराया– "हम फ़क़ीरो के पास माले दुनिया कहाँ ? हाँ मैं ख़ुद को आपके सुपुर्द कर सकता हूँ के आप एक गुलाम की तरह मुझसे काम लें और अपनी एक हज़ार अशर्फ़ी पूरी कर लें और अगर मैं एक हज़ार अशर्फ़ी जीत गया– तो वह तो नादारों और मोहताजों का हिस्सा है ही– के अमीरुल मोमेनीन अली–ए–मुर्तज़ा (अ०) फ़रमाते है के जहाँ भी दौलत ज़रुरत से ज़्यादा है– वहाँ यक़ीनन किसी हक़दार का हक़ ज़ाया हो रहा है"५

"मुझे मन्जूर– और क्या तुम तैयार हो के मेरा मोअम्मा हल करो"– फ़क़ीह ने कहा–

"ब–सर–व–चश्म" –बोहालेल ने जवाब दिया–

"आली–जह– आपकी भी इजाज़त है"– ? फ़क़ीह ने हारुन से पूछा–

"इजाज़त है" हारुन ने शाहाना तमकेनत से कहा–

फ़क़ीह ने अपना मोअम्मा पेश किया– "एक घर में एक औरत अपने शरई शौहर (२१७) के साथ बैठी है– उसी घर में एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है और दूसरा रोज़े से है– अचानक दरवाज़े पर दस्तक होती है और एक ऐसा शख़्स अन्दर दाख़िल हुआ जिसके आ जाने से शौहर और बीबी एक दूसरे पर हराम हो गये– नामाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ बातिल हो गयी– और रोज़दार का रोज़ा भी बातिल हो गया– क्या तुम बता सकते हो के बाहर से आने वाला शख़्स कौन है"– ?

दरबार में सन्नाटा छा गया– लोग एक दूसरे का मुँह तकने लगे– बोहलोल ने बर्जस्ता कहा– – "घर में दाख़िल होने वाला शख़्स उस औरत का पहला शौहर है– जो सफ़र पर गया हुआ था– जिसके बारे में यह ख़बर मिली थी के दौराने सफ़र इन्तेक़ाल कर गया है– उस औरत ने हाकिमे शरअ की इजाज़त से उसी मर्द से अक़्द (२१८) कर लिया था जो उसके बराबर बैठा हुआ था– उन्होंने दो अशख़ास को उजरत दी थी के वे मरहूम शौहर की क़ज़ा नमाज़े अदा करें और रोज़े रखें– इसी अस्ना में पहला शौहर सफ़र से वापिस आ गया– क्योंकि उसकी मौत की ख़बर ग़लत थी– चुनाँचें उसके आते ही दूसरा शौहर उस औरत पर हराम हो गया– उन दोनों अशख़ास के नमाज़ और रोज़े

बातिल हो गये– जो शौहर को मुर्दा समझकर पढ़ी और पढ़ी और रखे जा रहे थे"–

"मरहबा– मरहबा– बहुत ख़ूब बोहलोल बाज़ औक़ात तुम्हारी दीवानगी फ़र्ज़ानों को भी मात दे देती है"– हारुन ने सताएश(तारीफ़)की–

बाक़ी वज़ीर और अमीर भी दादे तहसीन देने लगे– शोर कुछ कम हुआ– तो बोहलोल कहने लगा–

"क्या आली–जाह की इजाज़त है के मैं भी हज़रत फ़क़ीह से सवाल करूँ–

"इजाज़त है" हारुन ने कहा–

'क्या आप तैयार हैं"–? बोहलोल ने पूछा–

ज़रुर पूछो" –फ़क़ीह ने निख़्वत से कहा– फ़र्ज़ करें के हमारे पास एक मटका शीरा और एक मटका सिर्का मौजूद है– हम उससे सेकन–जबीन तैयार करने के लिये एक प्याला सिरका और एक प्याला शीरा मट्कों से निकालते हैं और दोनों को किसी बर्तन में मिला देते हैं– उस वक़्त पता चलता है के उसमें तो एक चूहा मरा पड़ा है– क्या आप बता सकते हैं के वह मरा हुआ चूहा सिरके के मट्के में था या शीरे के मट्के में"– ??

हारुन महज़ूज़ हुआ– अहलेदरबार भी मुस्कुराये सब की निगाहें फ़क़ीह पर लगी हुई थीं के वह इस मोअ़म्मे को किस तरह हल करता है– वह गहरी सोच में मुस्तग़रक़ (२१९) हो गया और बहुत देर तक एक लफ़्ज़ भी न बोल सका–

हारुन इतना इन्तेज़ार न कर सका और बोला– "बोहलोल ने तुम्हारा मोअ़म्मा हल करने में एक लम्हा भी नहीं लगाया– तुम्हें भी उसके सवाल का जवाब इसी तरह देना चाहिये"–

फ़क़ीह नादिम सा हो गया– उसकी निगाहें झुक गयी– उसे अपनी कम इल्मी का एअ़तेराफ़ करना ही पड़ा–

"आली--जाह– मैं यह मोअ़म्मा हल नहीं कर सकता" –उसकी पेशानी

अर्क़आलूद [२२०] थी–

हारुन ने बोहलोल की तरफ़ देखा– "बोहलोल बेहतर यही है के तुम ख़ुद इस मोअम्मे को हल कर दो"–

बोहलोल मुस्कुराया– "क्या हज़रत फ़क़ीह अब भी अपनी ना–समझी के क़ायल हुए हैं या नहीं"– ?

फ़क़ीह बोला– "बोहलोल तुमने मुझे एहसास दिला दिया है के इल्म की कोई हद नहीं– किसी की ज़ाहिरी–हालत को देखकर उसे कमतर ख़याल नहीं करना चाहिये"–

"तो सुनिये जनाब के हमें चाहिये के उस चूहे को सेकन–जबीन से निकाल कर अच्छी तरह धो लें–

फिर उसका पेट चाक करें– अगर उसके पेट में सिर्का हुआ– तो समझें के वह सिर्के के मटके में था– अगर शीरा हुआ– तो फिर उसने शीरे में डुबकी लगाकर जान दी है– लिहाज़ा जो कुछ भी उसके पेट में हो उस शय [२२१] के मटके को ज़ाया कर देना चाहिये"–

अहलेदरबार इश,इश कर उठे– हारुन बहुत महज़ूज़ हुआ– उसने बोहलोल को आफ़रीन कही–

फ़क़ीह ने सर झुकाया और एक हज़ार अशर्फ़ियाँ उसके सामने ढेर कर दीं– बोहलोल ने तमाम अशर्फ़ियाँ समेट कर अपनी झोली में डाल लीं– और महल से निकलते ही उन्हें ज़रुरतमन्दों में बाँटने लगा जब वह अपने बसेरे पर पहुँचा तो उसकी झोली ख़ाली थी–

कुछ दिन गुज़रे थे के हारुन ने बोहलोल को तलब किया– वह उसके महल में पहुँचा– तो देखा के वह शराब के नशे में मख़्मूर [२२२] दज्ला [२२३] के किनारे अपने शानदार महल के झरोके में बैठा शोर मचाती लहरों का तमाशा देखने में महो [२२४] है– बोहलोल–उस रोज़ तो तूने उस बेचारे फ़क़ीह का नातेक़ा बन्द कर दिया था– इत्तेफ़ाक़न तेरा दाँव लग गया था और वह अहमक़ भी निरा गाउदी [२२५] निकला मगर आज मैं तुझे आजिज़ करके रहूँगा– और

इस झरोके में से तुझे दजला में फिकवा दूँगा और तू इसी तरह दजला की मौजों में ग़ोते खायेगा जिस तरह तेरे मोअम्मे में चूहा शीरे और सिर्के के मट्के में डुबकियाँ लगाता रहा था"–

"अगर–मैंने मोअम्मा बूझ लिया तो बोहलोल ने कहा–

"तो फिर एक हज़ार अशर्फियाँ इनाम मे मिलेंगीं" – उसने बड़ी शान से कहा–

"जनाबे–आली– मुझे अशर्फ़ियों की क़तअन कोई ज़रुरत नहीं– हाँ मेरी एक और शर्त है अगर वह मन्जूर हो– तो कोई बात भी है" –बोहालोल बोला– "बयान करो" हारुन ने हुक्म दिया–

"अगर मैंने मोअम्मे का सही जवाब दिया– तो उसके बदले में सौ क़ैदियों को रिहा करना होगा– मगर वह जिनके नाम मैं बताऊँगा" –बोहलोल ने अपनी शर्त पेश की–

हारुन हँसा– "यह बात तो बाद की है– मगर मुझे मन्जूर है– पहले तुम मोअम्मा तो बूझ लो– देखो– तुम्हें ग़ोते दिलाने के लिये दजला की मौजें कितनी बेक़रार हैं"–

"मौजों की बेक़रारी की ज़बान तो वही समझ सकतेहैं– जो दरियाओं का रुख़ मोड़ देने की ताक़त रखते हैं– आप अपना मोअम्मा पूछें– बोहलोल ने कड़े लहजे में कहा–

हारुन गोया हुआ– "तो सुनो–अगर किसी शख़्स के पास एक बकरी, एक भेड़िया और घास का गट्ठा है और वह चाहता है के दरिया पार करे– तो उसे क्या तरीक़ा इख़्तेयार करना चाहिए के न बकरी घास को खाये और न भेड़िया

बकरी को"–

बोहलोल ने एक लम्हा नहीं सोचा और बर्जस्ता कहा– "उस शख़्स को चाहिये के भेड़िये और घास को किनारे पर छोड़े और बकरी को दरिया के पार ले जाये– फिर वह वापिस आकर घास को ले जाये और घास को तो उस किनारे पर छोड़ दे– लेकिन बकरी को वापिस ले आये– अब बकरी को तो उस किनारे पर छोड़ दे– लेकिन भेड़िये को पार ले जाये– वापिस आकर वह बकरी को ले जा सकता है– इस तरह न बकरी घास खायेगी–न भेड़िया बकरी को खा सकेगा"–

हारुन हैरान हुआ– "बहुत ख़ूब– बोहलोल आज तो सितारे तुम्हारे हक़ में थे"–

सितारे नाहक़ कुछ भी नहीं करते क्योंकि वे तो हक़ को पहचानते हैं– अब आलीजाह भी मेरे हक़ को पहचानें और अपना वायदा पूरा करें"– बोहलोल ने जुर्अत से कहा–

"दुरुस्त–मुझे अपना वायदा याद है तुम मुंशी को उन क़ैदियों के नाम लिखवा दो– वह दरोग़–ए– ज़िन्दान को दे देगा, ताकि उन क़ैदियोंको रिहा कर दें"– हारुन ने फ़ेरारवदिली से कहा–

बोहलोल ने उन अश्ख़ास के नाम लिखवा दिये और चला आया– हारुन का नशा उतरा– तो उसके मुक़र्रब ने उसे वह फ़ेहरिस्त दिखाई– जो बोहलोल ने लिखवाई थी और बोला–

"हुज़ूर ने बोहलोल के साथ कुछ ज़्यादा ही फ़य्याज़ी का बर्ताव किया है– अगर आप इस फ़ेहरिस्त को एक मर्तबा मुलाहिज़ा फ़रमा लें तो बहुत मुनासिब होगा"–

हारुन ने फ़ेहरिस्त देखी– तो होश में आ गया– "ओ बोहलोल तू कैसा ज़ब का शरीर और फ़सादी है– ये सब तो उन लोगों के नाम हैं– जिन्हें ग़ावत के जुर्म में क़ैद किया गया है– ये लोग मूसा बिन जाफ़र (अ०) के स्तदार हैं– और ख़िलाफ़त हाश्मियों का हक़ समझते हैं"–

आली जाह मैं भी इस फ़ेहरिस्त को देखकर खटक गया था– इसलिये ने यही मुनासिब समझा के हुज़ूर इस पर एक निगाह डाल लें – ये सब के ब तो बाग़ी हैं"– मुक़र्रब ने कहा–

"मगर हम वायदा कर चुके हैं– ऐसा न हो के वह दीवाना हमें बद्नाम रे"– हारुन ने फिक्र मन्दी से कहा–

"इसमें परेशान होने की ज़रुरत नहीं हुज़ूर दस आदमियों की रिहाई ा हुक्म सादिर फ़रमायें– जिनका जुर्म ज़रा कम संगीन है– सिफ़र(२२६) हम ाथ ख़ुद बढ़ा लेगें"– मुक़रर्ब ने होशियारी से कहा

हारुन मुस्कुराया– "इस दीवाने के साथ यही होना चाहिये।

●

१३

एक रोज़ बोहलोल अपने फक्र [२२७] की शान में मस्त क़दम उठाता– हारुन के महल में पहुँचा और बे बाकी से आगे बढ़ता–हारुन के बराबर जा बैठा– हारुन के निख़्वत और ग़ुरुर को उसकी यह अदा पसंद नहीं आयी उसने सोचा के किसी तरह उसको ज़िच [२२८] करे– इसलिये उससे मुख़ातब होकर बोला–

"क्यों बोहलोल– मेरे मोअम्मेका जवाब दोगे"–

"जरुर दूँगा– बशर्ते के आप अपने क़ौल पूरे उतरें और पहले की तरह वायदा ख़िलाफ़ी न करें"– बोहलोल न वाज़ेह किया–

"ओर तुम भी सुन रखो के अगर तुमने मेरे मोअम्मे को फ़ौरन हल कर लिया तो तुम्हारा इनाम एक हज़ार अशर्फ़ी होगा– और अगर तुम जवाब न दे सके तो तुम्हारी दाढ़ी की ख़ैर नहीं उसे मुंडवाने और गधे की सवारी के लिये तैयार हो जाओ–

"मुझे अशर्फ़ियाँ क्या करनी हैं–मेरी शर्त तो कुद और है"– बोहालोल बोला–

शर्त बयान की जाये"– हारुन ने कहा–

"मेरी शर्त यह है के अगर मैंने मोअम्मे को हल कर लिया– तो आली–जाह मक्खियों को हुक्म दे दें के वे मुझे न सताया करें– मक्खियाँ मुझे बहुत तंग करती हैं"– बोहलोल ने बड़ी संजीदगी से दरख़ास्त की अहलेदरबार के होंठों पर मुस्कुराहट आयी– लेकिन वे हारुन के खौफ़ से ज़ब्त कर गये–

हारुन बग़लें झाँकने लगा और उसे कहना पड़ा– "किसी–किसी वक़्त तो तुम्हारी अक़्ल बिल्कुल ही ख़ब्त हो जाती है– मक्खियाँ तो मेरी मुतीअ नहीं हैं– जो उनपर हुक्म चलाऊँ"–

"अफसोस के हमारा बादशाह मक्खियों के मुक़ाबले में भी आजिज़ – तो उसके इक्तेदार का क्या फ़ायदा" ? बोहलोल ने मेज़ाहिया लहजे में कहा–

दरबारियों की आँखों से हैरत और हँसी झाँकने लगी– वे नज़रों ही नज़रों में बोहलोल की इस जुर्अत की दाद देने लगे– हारुन भी शर्मिन्दा–सा हो गया और उसके जवाब में कुछ भी नहीं कह सका– तो बोहलोल ने उसकी ख़िफ़्फ़त मिटाने को कहा– "अच्छा–अब मैं कोई शर्त नहीं रखता और तुम्हारे मोअम्मे का जवाब देता हूँ"–

हारुन ने पूछा– "वह कौन–सा दरख़्त है– जिसकी उम्र एक साल है– उसमें बारह शाखें हैं– हर शाख़ पर तीस–तीस पत्ते लगे हुए हैं और उन पत्तों का एक रुख़ रौशन है और दूसरा तारीक" ?

बोहलोल ने हस्बे–आदत फ़ौरन जवाब दिया– "यह दरख़्त महीना दिन और रात का है– इसलिये के साल में बारह महीने होते हैं– हर महीने में तीस दिन होते हैं जो आधे दिन हैं और आधे रात हैं"।

हारुन को बे साख़्ता दाद देनी पड़ी– अहलेदरबार भी उसकी तारीफ़ करने लगे।

१४

बोहलोल सरे राह खड़ा था– देखा कि हारुन की सवारी आ रही है– उसने मुँह के गिर्द दोनों हाथ रखे और ज़ोर से पुकारा "हारुन– हारुन– हारुन" हारुन इस आवाज़ पर चौंका– उसे गुस्सा भी आया उसने अपने ख़ुद्दाम से पूछा– "यह कौन गुस्ताख़ है– जो मुझे इस तरह पुकार रहा है"– (२२९)

हुज़ूर–यह दीवाना बोहलोल है– मालूम होता है आज इसका दिमाग़ बिल्कुल ही काम नहीं कर रहा है किसी ग़ुलाम ने बोहलोल को बादशाह के इताब से बचाने की कोशिश की–

हारुन ने सवारी ठहराने को कहा और बोला "बुलाओ उसको" –बोहलोल क़रीब आया तो ग़ुस्से से बोला – "तू जानता है के मैं कौन हूँ"– ?

"बिल्कुल जानता हूँ" –बोहलोल ने सर हिलाया– "आप ऐसे इन्सान हैं के अगर मश्रिक़ में किसी कमज़ोर पर ज़ुल्म हुआ– तो बाज़ पुर्स आपसे होगी"–

हारुन लरज़ गया– उसकी आँखों के गोशे नम हो गये– उसका ग़ुस्सा फ़रो हो गया और वह नर्मी से बोला– बोहलोल तूने ऐसी बात कही है– जो मेरे दिल पर जाकर लगी है– तेरी कोई हाजत हो तो बयान करो"–

"मेरी हाजत यह है के आप मेरे गुनाह माफ़ करके मुझे जन्नत में दाख़िल कर दें" –बोहलोल ने कमाले सन्जीदगी से कहा–

गिर्द व पेश खड़े लोग मुस्कुराने लगे– हारुन नेएअ़तेराफ़ किया– "बोहलोल– तुमने ऐसी बात कही है जो मेरे बस में नहीं– हाँ मैं तुम्हारे क़र्ज़े चुका सकता हूँ"–

"नहीं–आप यह भी नहीं कर सकते" –बोहलोल ने ज़ोर देकर कहा–

"क्यों" – ?? हारुन ने तुर्शी से सवाल किया "एक क़र्ज़ा दूसरे क़र्ज़े से अदा नहीं हो सकता–

आप तो ख़ुद अवाम के क़र्ज़दार हैं– आप उनका क़र्ज़ वापिस करें– यह मुनासिब नहीं के उनका माल मुझे दे डालें"–

बोहलोल के अन्दाज़ में सच था–

हारुन मुज़तरिब हुआ और बात बदलने को बोला– "तो फिर ठीक है– मैं हुक्म देता हूँ के तुम्हें कुछ जायदाद दे दी जाये ताकि तुम्हारी गुज़र बसर सुहूलत से हो"

बोहलोल हँसा– "सब का राज़िक़ ख़ुदा है– हम सब बन्दे उसी से वज़ीफ़ा पाते हैं– ऐसा तो मुमकिन नहीं के वह बादशाह को तो फ़ेराख़ी से रिज़्क़ अता करे और इस दीवाने को भूल जाये"–

हारुन ला जवाब सा हो गया और बोहलोल से बोला– "मैं अमीन व मामून के मकतब जा रहा हूँ– ज़रा उनके उस्ताद से उनकी तालीम की बाबत मालूम करुँगा– आओ–तूम भी मेरे साथ चलो"–

बोहलोल राज़ी हो गया और सवारी मकतब पहुँची– उस्ताद दौड़ा हुआ आया और हारुन को सलाम किया– "ज़े है नसीब के ख़लीफ़ा इस नाचीज़ के मकतब में तशरीफ़ लाये हैं"–

"हम अमीन और मामून की तालीम के बारे में मालूम करने आये हैं के दोनो कैसे तालिबे इल्म हैं" –हारुन ने कहा–

"जान की अमान पाऊँ तो कुछ अर्ज़ करुँ"– उस्ताद बोला–

"हाँ तुम्हें अमान है– हमें दोनों की तालीमी कैफ़ियत सही–सही बताओ" –हारुन बोला–

आली–जाह– आपका बेटा अमीन– औरतों की सरदार, मल्का जुबैदा जैसी क़ाबिल और ज़ेहीन ख़ातून का बेटा है" –लेकिन कुन्द ज़ेहन है–

मगर इसके बर–अक्स आपका बेटा मामून बहुत ज़ेहीन दानिशमन्द और बा–तेक़ार है"–

यह तुमने अजीब बात कही है– मैं इसे तसलीम नहीं कर सकता" –हारुन ने हैरत से कहा–

"मैं इसका सुबूत मोहय्या कर सकता हूँ"– उस्ताद ने जवाब दिया–

"यक़ीनन" –तुम्हें शहज़ादों के बारे में इतनी बड़ी बात बिला सुबूत नहीं कहनी चाहिये"–

हारुन ने ना–गवारी से कहा–

"मैंने यह बात तजुर्बे के बाद कही है– "उस्ताद बोला–

इस वक्त अमीन और मामून थोड़ी तफ़रीह लेने बाहर गये हैं– मैं यह काग़ज़ मामून के "बैठने की जगह" फर्श के नीचे रखता हूँ और अमीन के बैठने की जगह यह ईट रख रहा हूँ–

जब वे आ जायें– तो आप मुलाहेज़ा फ़रमाइये के मेरी राय किस हद तक दुरुस्त है"–

थोड़ी ही देर में अमीन और मामून वापिस आ गये– हारुन को देखकर दोनों हैरान हुए और उसे आदाब किया– हारुन ने उन्हें बैठने–की इजाज़त दी हारुन दोनो का ब–ग़ौर मुशाहेदा कर रहा था

मामून बैठते ही कुछ मुज़तरिब सा हुआ उसने कुछ परेशान सा होकर छत की तरफ़ देखा–

फिर दायें बायें देखा–और कई बार पहलू बदला– और बेचैन–सा नज़र आने लगा– उस्ताद ने शफ़क़त से पूछा–

"क्यों मामून– "ख़ैरियत तो है– मैं तुम्हें कुछ परेशान सा देख रहा हूँ"–

"उस्तादे मोहतरम– मैं अपने बैठने की जगह पर कुछ तबदीली सी महसूस कर रहा हूँ"– मामून ने कुछ सोचते हुए जवाब दिया–

"कैसी तबदीली" – ?? उस्ताद ने पूछा–

ऐसा महसूस होता है उस्तादे मोहतरम– जैसे मेरे बैठने की जगह एक काग़ज़ भर ऊँची हो गई है– या छत काग़ज़ भर नीची हो गई है" –मामून

बोला–

"अमीन– क्या तुम्हें भी ऐसा ही महसूस होता है– जैसे तुम्हारा भाई कहे हैं"– ?? उस्ताद ने अमीन को मुख़ातब किया–

"नहीं– ऐसी तो कोई बात नहीं" –अमीन ने जवाब दिया–

उस्ताद ने माना–ख़ेज़ निगाहों से हारुन की तरफ़ देखा और बोला– "आली–जाह पसन्द फ़रमायें–तो दूसरे कमरे में तशरीफ़ रखें

हारुन ने इजाज़त दी और उस्ताद के साथ दूसरे कमरे में चला आया– बोहलोल भी उनके हमराह था– उस्ताद ने मुतमईन लहजें में कहा–

"अलहम्दो लिल्लाह– के मैंने आपके सामने अपनी राय का सुबूत भी पेश कर दिया"–

"हैरत है– हैरत है– अमीन की माँ अरब की ज़ेहीन औरतों में से है– कोई उसका हमसर नहीं– लेकिन उसका बेटा" –हारुन ने जैसे अपने आप से कहा– समझ में नहीं आता के इसका क्या सबब् है"–

"बोहलोल आगे बढ़ा– इसका सबब् मुझे मालूम है– अगर आली जाह को नागवार न हो– तो बयान करूँ"–

"बयान करो– मैं सख़्त तरीन उल्झन में हूँ– हारुन ने कहा–

बोहलोल बोला– "औलाद की दानिशमन्दी और ज़ेहानत के असबाब दो हैं– अव्वल (२३०) यह के औरत और मर्द के दरमियान रग़बत और फ़ितरी ख़्वाहिश हो– तो उनकी औलाद ज़ेहीन, होशियार और अक़्लमन्द होती है– दोम (२३१) यह के मर्द और औरत मुख़्तलिफ़ ख़ून और नस्ल से ताल्लक़ रखते हों– तो उनकी औलाद में अक़्ल व दानिश की फ़रावानी होगी"–

"कोई दलील दो" –हारुन नें ग़ौर करते हुए कहा–

"इसकी मिसाल दरख़्तों और जानवरों में नज़र आती है– मसलन अगर फल के दरख़्त में दूसरे फलदार दरख़्त का पेवंद लगाया जाये– तो निहायत लज़ीज़ और उमदा फल पैदा होते हैं– इसी तरह गधे और घोड़े के मिलाप से ख़च्चर पैदा होता है जिसकी होशियारी, ताक़त और फ़ुर्ती का जवाब नहीं– अब आली–जाह समझ सकते हैं के– अमीन में जो ज़ेहानत की कमी महसूस होती है

इसका सबब् उसकी वालिदा और आपकी रिश्तेदारी है –जबकि मामून की माँ मुख़्तलिफ़ नस्ल और क़बीले से ताल्लुक़ रखती है– ख़ून के लिहाज़ से आपमें और उसमें जो फ़र्क़ है वही सबब् मामून की ज़ेहानत और दानिशमन्दी का भी हैं"–

हारुन उसकी बात पर ग़ौर करता रहा उस्ताद भी कायल नज़र आता था– लेकिन मुँह से कुछ नहीं कह रहा था– के मबादा (२३२) ख़लीफ़ा उसे गुस्ताख़ी तसव्वुर करें– हारुन ने बोहलोल की तरफ़ देखा और हस्बे आदत उसके कमाल को कमतर करने के लिये बोला– "हो न तुम दीवाने– पागल बेचारा ऐसी बातों के अलावा और कर भी क्या सकता हैं"।

●

१५

एक रोज़ बोहलोल दरबार में आया– तो देखा इल्मे नुजूम [२३३] पर गुफ्तुगु हो रही है और एक शख़्स इल्मे नुजूम का माहिर होने का दावा कर रहा है– बोहलोल सलाम करके ख़ामोशी से उसके पास जा बैठा और उसकी बातें सुनने लगा– जब वह अपने बारे में बहुत कुछ कह चुका– तो बोहलोल ने कहा–

"हज़रत– माशाल्लाह आपकी महारत के क्या कहने– लेकिन क्या आप बता सकते हैं के आपके पास कौन बैठा हुआ है" ?

नुजूमी बोहलोल से वाक़िफ़ नहीं था– इसलिये उसने ला इल्मी का इज़्हार किया– "नहीं मैं नहीं जानता"–

बोहलोल मुस्कुराया– "अगर अपने बराबर बैठने वाले को नहीं जानते–तो फिर आसमान के सितारों के बारे में कुछ जानने का दावा किस तरह कर सकते हैं"–

वह शख़्स ला जवाब सा हो गया और थोड़ी देर बाद उठकर चला गया– दरबार अभी मुनक़्क़िद [२३४] था के हाजिब ने सदा दी के कोई सय्याह हाज़िरे ख़िदमत होना चाहता है– हारुन ने इजाज़त दी–

वह आया और हारुन को ताज़ीम दी–

हारुन ने उससे मुख़्तलिफ़ मुल्कों के बारे में सवालात किये जहाँ–जहाँ वह जा चुका था– वह गुफ्तुगु के फ़न में माहिर था– उसने मुख़्तलिफ़ मुल्कों की पैदावार जवाहरात, और मसनूआ़त [२३५] के बारे में तफ़सीली तौर पर बताया और हिन्दुस्तान का तज़किरा करते हुए बोला–

"आली–जाह– हिन्दुस्तान एक अजीब जादूनगरी है– वहाँ इल्म व हिकमत का बड़ा शोहरा [२३६] है– शायद मेरी बात पर आपको यक़ीन न आये के

हिन्दुस्तान में एक ऐसी माजून बनायी जाती है– जिसके बा–क़ायदा इस्तेमाल से इन्सान में जवानी की क़ुव्वत अज़सरे (२३७) नौ बहाल होती है– अगर साठ साल का बूढ़ा वह माजून इस्तेमाल करे– तो ख़ुद को बीस बरस का जवान पायेगा"–

"कमाल है– उस इलाके में तिब के ऐसे मोअजिज़े भी मिलते हैं" –हारुन ते ताज्जुब से कहा–

"हुज़ूर अगर पसंद फ़रमायें– तो मैं हिन्दुस्तान से वह माजून तैयार करवा कर ला सकता हूँ" –सय्याह मोअद्दब लहजे में बोला–

हारुन के दिल में पहले ही इश्तेयाक़ पैदा हो चुका था– उसने सय्याह से पूछा–

"वह माजून तैयार करने पर कितना ख़र्च उठेगा"– ?

"ज़िल्ले सुबहानी– इसमें बहुत सी क़ीमती जड़ी बूटियाँ और जवाहरात के कुश्ते शामिल किये जाते हैं– इसकी तैयारी पर इख़राजात कुछ ज़्यादा ही उठते हैं"– सय्याह ने बताया–

"तुम्हारा क्या ख़याल है के हम वे इख़राजात अदा नहीं कर सकेंगें" हारुन ने दुरुश्ती से कहा–

"नऊज़ो–बिल्लाह– आली–जाह यह हक़ीर तो ऐसा ख़याल भी दिल में नहीं ला सकता– मैंने तो इसलिये यह कहा है के कहीं अहलेदरबार में से कोई इसे झूठ या ग़लत न समझे" –उसने घबराकर जवाब दिया–

"अहलेदरबार में ऐसी हरकत करने की जुर्अत नहीं है अल्लाह ताला ने हर हाल में जान बचाने का हुक्म दिया है"–

बोहलोल ने चुपके से कहा –

बताओ इस पर कितना ख़र्च उठेगा" हारुन ने इस्तेफ़सार किया–

"आली जाह– इसके लिये पचास हज़ार दीनार दरकार होंगें" –सय्याह

ने बताया–

"रक़म दे दी जाये" –हारुन ने खज़ांची को हुक्म दिया–

खज़ांची ने उसको रक़म दे दी और वह खाना हो गया–

इस वाक़ेये को एक अर्सा हो गया– मगर वह लौटकर नहीं आया– हारुन को भी अन्दाज़ा हो गया था के वह कोई धोके–बाज़ था– जो उसे फ़रेब देकर रक़म हथिया ले गया– एक रोज़ दरबार में फिर उस शख़्स का तज़किरा हुआ– हारुन ने मुताअस्सिफ़ लहजे में कहा–

"उस शख़्स ने कैसे हमारी आँखों में धूल झोंकी है– अगर वह कहीं हाथ लग जाये– तो उससे कई गुना ज़्यादा रक़म वुसूल की जायेगी और उस कम्बख़्त का सर काटकार बग़दाद के दरवाज़े पर आवेज़ा किया जायेगा ताकि दूसरे लोग इबरत हासिल करें"–

बोहलोल भी दरबार में मौजूद था– वह बेसाख़्ता हँस दिया– हारुन ने खश्मगीन नज़रों से बोहलोल की तरफ़ देखा– "बोहलोल इस बेमौक़ा हँसी का सबब् क्या है– ? क्या तुम इस गुस्ताख़ी की वजह बयान कर सकते हो"– ??

बोहलोल की हँसी नहीं रुकी– "हुज़ूर मुझे एक क़िस्सा याद आ गया है"–

कौन सा क़िस्सा"– ? हारुन ने इस्तेफ़्सार किया–

बोहलोल ने हँसी रोककर कहा– इस धोके बाज़ सय्याह का क़िस्सा बिल्कुल ऐसा ही है– जैसा मुर्ग़ बुढ़िया और लोमड़ी का क़िस्सा है"–

"बयान करो" हारुन ने तहक्कुम से कहा– बोहलोल बोला– "क़िस्सा कुछ यूँ है के एक जंगली बिल्ली ने एक बुढ़िया का पालतू मुर्ग झपट लिया– बुढ़िया उसके पीछे दुहाई देती दौड़ी–

"अरे–अरे– पकड़ो– इस चोट्टी बिल्ली को पकड़ो– ज़ालिम मेरा दो मन का मुर्ग़ लेकर भागी जाती है और कोई मेरी मद्द करो– इस बिल्ली को पकड़ो– हाय मेरा नाज़ो का पला– मुर्ग़– अरे यह पूरे दो मन का है"–

इत्तेफ़ाक़न एक लोमड़ी क़रीब से गुज़र रही थी– वह बिल्ली से बोली– "बहिन तुम क्यों परेशान होती हो– ज़रा मुर्ग़े को मुझे दो– मैं अभी तोलकर बता देती हूँ के यह दो मन का है या नहीं"–

बिल्ली ने मुर्ग़ लोमड़ी को दे दिया– उसने मुर्ग़ दबोचा और यह कहकर ग़ायब हो गई के बहिन बिल्ली– बुढ़िया से कह देना के उसका मुर्ग़ तीन मन का है"–

हारुन अपनी हँसी नहीं रोक सका– अहलेदरबार भी मुस्कुराने लगे– हारुन बोला

"बोहलोल तुम्हारे इस क़िस्से ने हमारी अफ़्सुरदगी को ज़ायल कर दिया है"।

●

१६

ख़लीफ़ा हारुन रशीद अपनी मल्का जुबैदा के हमराह शतरंज खेल रहा ा–बोहलोल भी क़रीब बैठा था उसी वक्त चोबदार ने सदा दी– "एक शिकारी ारयाबी की इजाज़त चाहता है"–

"इजाज़त है"– हारुन ने इजाज़त दी–

शिकारी अन्दर आया और ज़मीन चूम कर बोला–

"मैं ख़लीफ़ा के लिए एक बहुत उमदा मछली लेकर आया हूँ"–

हारुन ने जुबैदा से कहा– "यह इनाम की आस में मेरे पास यह हदिया ाया है– इसे इनाम में चार हज़ार दरहम दे दिये जायें तो क्या मुनासिब हेगा"–

जुबैदा बोली– "नहीं आली जाह– शिकारी का यह मनसब नहीं के उसे तना ज़्यादा इनाम दे दिया जाये– आप फौजियों और मोअज़्ज़ज़ शहरियों को ो इनाम व इकराम अता करते हैं– अगर आप उन्हें इससे कम देंगे तो वे शिकवा रेंगें के हम शिकारी के बराबर भी नहीं हैं– अगर ज़्यादा देने की रस्म पड़ ई– तो ख़ज़ाना ख़ाली हो जायेगा"–

यह बात हारुन के दिल को लगी और वह बोला "मगर इसको कुछ तो ना है"–

"तो आप इस तरह करें के शिकारी से पूछे के यह मछली नर या मादा गर वह कहे मादा है– तो कहें हमें यह पसन्द नहीं– और अगर वह कहे नर है– ो भी आप कह दें के यह हमें नही चाहिये इस तरह वह मछली वापिस ले ायेगा और इनाम् भी नहीं देना पड़ेगा"– जुबैदा ने तजवीज़ पेश की–

बोहलोल ने आहिस्तगी से कहा– "शिकारी इतनी दूर से बड़ी आस लेकर

आया है– यह मुनासिब नहीं के मल्का की बातों में आकर आप उसे नामुराद लौटा दें और वह रंजीदा हो"–

हारुन ने बोहलोल की बात पर तवज्जोह नहीं दी और चोबदार से बोला– "शिकारी को हमारी ख़िदमत में पेश करो"–

शिकारी क़रीब आया तो हारुन ने सवाल किया–

"ऐ शिकारी क्या तू बता सकता है के यह मछली नर है या मादा"–

शिकारी ताज़ीमन झुका और बोला– "आलीजाह न यह नर है न मादा– यह मछली तो मोख़न्नस है"–

हारुन बेसाख़्ता हँसा और बोला– "तुम्हारी हाज़िर जवाबी हमें पसन्द आयी– तुम्हें चार हज़ार दरहम इनाम में दिये जायेंगें"–

हुज़ूर का इक़बाल बलन्द हो" –शिकारी दरहम लेकर दुआएं देता हुआ रुख़सत हुआ

जब वह महल की सीढ़ियाँ उतर रहा था– तो एक दरहम ज़मीन पर गिर पड़ा– शिकारी रुक गया और उसने दरहम उठाकर जेब में रख लिया–

हारुन और ज़ुबैदा भी उसे देख रहे थे– ज़ुबैदा जो इतनी रक़म जाने पर आमसुरदा थी–

हारुन से बोली– "आली जाह– आपने मुलाहिज़ा फ़रमाया के यह शिकारी किस क़द्र लालची और कमीना है–

इसने एक दरहम भी नहीं छोड़ा– क्या हर्ज था अगर उसे महल का कोई और मुलाज़िम ही उठा लेता"–

हारुन को भी मल्का की बात लायक़े तवज्जोह महसूस हुई– उसने पुकार कर कहा–

"शिकारी को बुलाया जाये"–

क़रीब बैठे हुए बोहलोल ने दबी ज़बान में कहा– "आलीजाह मल्का के कहने पर शिकारी को न रोकिये"–

हारुन ने तवज्जोह नहीं दी– तब तक चोबदार शिकारी को बुला लाया और हारुन की ख़िदमत में पेश किया–

हारुन बोला– "ऐ सय्याद हमें तेरी यह हरकत बहुत नाग–वार गुज़री है– के तेरे पास चार हज़ार दरहम मौजूद हैं– अगर इनमें से एक गिर गया था– तो तूने यह भी गवारा नहीं किया के उसे छोड़ दे– शायद वह किसी ग़रीब को मिल जाये और वह उससे अपना काम निकाल ले"–

शिकारी ताज़ीमन झुका और बोला– "जान की अमान पाऊँ तो कुछ अर्ज़ करूँ"–

"अमान है– हारुन ने अमान दी–

शिकारी मोअद्दब लहजे में बोला– "हुज़ूर यह नाचीज़ पस्त फ़ितरत नहीं है– बल्कि नमक की क़द्र करना जानता है– मैंने इसलिये वह दरहम उठा लिया था के उसके एक तरफ़ आयाते क़ुर्आनी कन्दा हैं और दूसरी जानिब आपका इस्में गिरामी– मैं नहीं चाहता था के यह ज़मीन पर पड़ा रहे और किसी के पाँव तले आ जाये– और बे अद्बी हो"–

ख़लीफ़ा को उसकी हाज़िर जवाबी ने महज़ूज़ किया– उसने ख़ुश होकर हुक्म दिया–

"शिकारी को चार हज़ार दरहम और दिये जायें"–

शिकारी रुख़सत हो गया तो बोहलोल ने कहा– "आलीजाह क्या मैंने आपको नहीं रोका था के शिकारी को वापिस न बुलायें"–

हारुन हँसा– "बोहलोल आज तो मैंने तुझेसे भी ज़्यादा दीवानगी का मुज़ाहेरा किया है– तुमने मुझे दोनों बार – रोका लेकिन मैंने तवज्जोह नहीं दी– और मल्का की बात पर कान धरने का यह नुक़सान हुआ के चार हज़ार के बजाये आठ हज़ार दरहम ख़ज़ाने से गये"।

●

१७

कहते हैं के एक बार हारुन ने यूनान से किसी हकीम को बुलवाया जब वह बग़दाद पहुँचा– तो हर तरफ़ उसका शोहरा हो गया– हारुन ने उसे दरबार में बड़ी इज़्ज़त दी–जिसकी वजह से उसके ओमरा और मोअज़्ज़ेज़ीने शहर हकीम से ख़ास तौर पर मिलने गये– बोहलोल को भी ख़बर हुई– वह भी अपनी दीवानगी का लिबास पहने दरबार में पहुँचा– देखा के हकीम दरबार में बड़ी शान से बैठा है– वज़ीर, अमीर उसकी तारीफ़ों के पुल बाँध रहे हैं--

बोहलोल कुछ देर चुपका बैठा रहा– फिर हकीम से बोला– "आप क्या काम करते हैं"–

हकीम उसकी हैबते कज़ाई (२३९) देखकर उसे पागल समझा और उसकी हँसी उड़ाने को बोला– "जनाब– मैं हकीम हूँ और मेरा काम मुर्दों को ज़िन्दा करना हैं"

दरबार में दबी–दबी हँसी की आवाज़ सुनाई देने लगी– बोहलोल ने मुस्कुरा कर उसकी तरफ़ देखा और बड़े मज़े से बोला– "जनाब हकीम साहब क़िब्ला बरा–ए–करम आप ज़िन्दों के हाल पर रहम करें– उनकी जान बख़्शी कर दें– बाक़ी रहे मुर्दे– तो उनका ज़िन्दा करना आपका हदिया है"–

दबी–दबी हँसी क़हक़हों में बदल गई– हारुन भी उनमें शामिल था– हकीम इतना ख़जिल हुआ के वापिस यूनान चला गया।

●

१८

हारुन ने महफ़िले मैं–नैशी सजा रखी थी वज़ीर अमीर बैठे थे मुसलमानों का ख़लीफ़ा कनीज़ों के हाथों से जामे मैं (शराब के जाम) लेकर ख़म के ख़म लुँढा रहा था के बोहलोल भी वहाँ पहुँचा– उसने ख़लीफ़ा की हरकतों को ख़ामोश निगाहों से देखा तो हारुन को उसकी नसीहतें याद आयीं– नशे के तरंग में उसने सोचा के इससे पहले के बोहलोल कोई ऐसी बात कह दे– जो उसका सर झुका दे– वह पहल करे– उसने बोहलोल को देखा और बोला–

"बोहलोल– मेरे एक सवाल का जवाब दोगे"– "मैं तैयार हूँ" बोहलोल ने जवाब दिया–

"बोहलोल– यह बताओ के अगर कोई शख़्स अंगूर खा रहा हो तो क्या हराम है"– ? हारुन ने संवाल किया–

"नहीं– बिल्कुल नहीं" –बोहलोल ने कहा–

"अगर वह अंगूर खाकर पानी पी ले– "तो– ? हारुन बोला– "कोई हर्ज नहीं" –बोहलोल ने बताया–

"अब यही शख़्स अंगूर खाने और पानी पीने के बाद धूप में बैठ जायें तो फिर"– ??

"कोई मुज़ाएक़ा नहीं– जितनी देर चाहे बैठे"– बोहलोल ने जवाब दिया"

तो फिर बोहलोल– तुम ख़ुद ही बताओं के यही अंगूर और पानी– कुछ अरसा धूप में रख दिये जायें– तो हराम क्यों हो जाते हैं"– ? हारुन ने बड़े फ़ख्र से अपना फ़ल्सफ़ा बयान किया–

"अगर इज़ाज़त हो तो मैं भी ख़लीफ़ा से चन्द सवाल कर लूँ– उम्मीद है इन्हीं सवालात में ख़लीफ़ा को अपने सवाल का जवाब मिल जायेगा"– बोहलोल ने इत्मीनान से कहा–

"इजाज़त है" –हारुन झूमता हुआ बोला–

बोहलोल बोला– "क्या आलीजाह बतायेंगें के अगर किसी आदमी के सर पर थोड़ी सी मिट्टी डाल दी जाये तो क्या उसे कोई– नुक़सान पहुँचेगा"– ?

"नहीं" –ख़लीफ़ा ने फ़ौरन जवाब दिया–

इसके बाद उसके सर पर थोड़ा सा पानी डाल दें– तो क्या उस शख़्स को कोई तकलीफ़ होगी"– ?

"नहीं –बिल्कुल नहीं" –हारुन बोला–

"लेकिन– बोहलोल ने उसे मुतावज्जेह किया "अगर इस मिट्टी और पानी को मिलाकर ईट बना ली जाये और वह उस शख़्स के सर पर मारी जाये– तो क्या कोई नुक़सान होगा"– ?

"तुम भी अजीब बातें करते हो बोहलोल"– ख़लीफ़ा हँसा– "उसका तो सर फट जायेगा"–

"तो फिर आलीजाह ग़ौर फ़रमायें तो उन्हें मालूम होगा के जिस तरह मिट्टी और पानी मिलकर इन्सान का सर फोड़ सकते हैं– उसी तरह अंगूर और पानी मिलकर भी ऐसी चीज़ बना देते हैं जो हराम और नापाक हैं– जिसके पीने से इन्सान की अक़्ल मारी जाती है– उसे बुरे भले की तमीज़ नहीं रहती– इसलिये इस्लाम ने उसके पीने वाले पर सज़ा वाजिब की है"–

हारुन का नशा हिरन हो गया– वह मुज़्तरिब होकर उठा और पशेमानी

से बोला–

"शराब की यह महफ़िल बर्ख़ास्त की जाती है"

एक रोज़ हारुन हमाम गया– तो बोहलोल भी हमराह था– हारुन को मज़ाक़ सूझा– तो बोहलोल से बोला– "बोहलोल–अगर मैं ग़ुलाम होता– तो मेरी क्या क़ीमत लगती"– ?

बोहलोल ने बहुत मज़े से कहा– "आलीजाह– सिर्फ़ पचास दीनार–

ख़लीफ़ा को इसकी उम्मीद नहीं थी– उसका नाज़ुक शाही मेज़ाज बिगड़ा "हो न तुम दीवाने– इन्सान की क़द्र व क़ीमत का तुम्हें अन्दाज़ा ही नहीं– अहमक़ जानते हो के यह तहमद् जो मैंने पहन रखी है– पचास दीनार तो सिर्फ़ इसकी क़ीमत है"–

"मैंने भी तो सिर्फ़ तहमद् की ही क़ीमत लगाई है सरकार! वरना ख़लीफ़ा की कोई क़ीमत नहीं है"– बोहलोल ने हँसकर कहा।

●

१९

ख़लीफ़ा बड़े तुजुक व एहतेशाम से शिकार पर खाना हुआ– अमीर वज़ीर हमराह थे– ग़ुलाम तीरकमान उठाये साथ–साथ चल रहे थे–

बोहलोल भी मौजूद था– अचानक एक हिरन नज़र आया– ख़लीफ़ा ने फ़ौरन कमान उठाई और हिरन का निशाना लेकर तीर छोड़ा– लेकिन निशाना ख़ता कर गया– हिरन चौकड़ियाँ भरता निगाहों से ओझल हो गया–

"बहुत ख़ूब– बहुत ख़ूब– "सुब्हानल्लाह"– बोहलोल ने बे साख़्ता दाद् दी–

ख़लीफ़ा को ना–गवार गुज़रा– ग़ुस्से से बोला– "बोहलोल– तू मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा हैं"–

नहीं आलीजाह– यह नाचीज़ तो ऐसी जसारत करने का तसव्वुर भी नहीं कर सकता बोहलोल ने आजिज़ी से कहा–

"तो फिर यह दाद् किसको दे रहे थे"– ? हारुन ने दुरुश्ती से पूछा–

"जहाँपनाह– मैंने हिरन को दाद् दी है के वह आपके तीर से कितनी ख़ूबसूरती से बचा हैं"।

●

२०

बोहलोल अक्सर क़ब्रिस्तान में बैठा रहता था– एक रोज़ हारुन का इसी तरफ़ से गुज़र हुआ–बोहलोल पर निगाह पड़ी– तो सवारी ठहराई और बोला– बोहलोल यहाँ क्या कर रहे हो"– ?

' मैं ऐसे लोगों की मुलाक़ात को आया हूँ– जोन लोगों की ग़ीबत करते हैं– न मुझसे कोई उम्मीद या तवक़्को रखते हैं और न किसी को कोई तकलीफ़ देते हैं"– बोहलोल ने वज़ाहत की–

हारुन ने गहरी साँस ली– "बोहलोल क्या तुम मुझे पुले सिरात से गुज़रने और उस दनिया में सवाल व जवाब की कुछ ख़बर दे सकते हो"–

"यक़ीनन" –लेकिन इसके लिए थोड़ा एहतेमाम करना होगा– क्या आलीजाह उसका इन्तेज़ाम कर देगें" –? बोहलोल ने कहा

"हाँ–हाँ–तुम बताओ– मैं अभी हुक्म देता हूँ" –हारुन ने जवाब दिया–

फिर आलीजाह– अपने मुलाज़िमों को हुक्म दें के यहाँ आग जलायें– उसपर एक बड़ा तवा रखें उस तवे को गर्म होकर सुर्ख़ हो जाने दें"–

बोहलोल ने बताया–

बोहलोल की फ़रमाइश पूरी की जायें" –हारुन ने फ़रमाने शाही जारी किया–

मुलाज़िमों ने फ़ौरन आग जलायी तवा लाया गया और गर्म होने के लिये आग पर रख दिया गया– लोगों की नज़रें उसी जानिब थीं और हैरत में सोच रहे थे के इससे बोहलोल का क्या मक़सद है– यहाँ तक कि तवा ख़ूब गर्म हो गया–

बोहलोल ने कहा– आलीजाह– पहले मैं इस तवे पर नंगे पाँव खड़ा हूँगा

और अपना तआ़रुफ़ तआ़रुफ़ कराऊँगा५ यानि मेरा नाम क्या है– मेरा लिबास क्या है और मेरी ख़ूराक क्या है इसके बाद इसी तरह आप भी तवे पर खड़े होकर अपना तआ़रुफ़ करायें"–

हारुन को तम्मुल तो हुआ– लेकिन उसने मन्ज़ूर कर लिया और बोहलोल से बोला– "चलो– तुम पहल करो"–

बोहलोल तेज़ी से तवे पर खड़ा हो गया और जल्दी से बोला– बोहलोल खिर्क़ा, जौ की रोटी, और सिरका"– ये तीन लफ़्ज़ कहकर वह झठ तवे से नीचे उतर आया– इन चन्द लम्हों में उसके पैर जलने से महफ़ूज़ रहे–

अब हारुन की बारी आयी– वह तवे पर चढ़ा और शाही अल्क़ाब के साथ अभी अपना नाम भी नहीं बता पाया था के उसके पैर जलने लगे– वह गिरता पड़ता तवे से नीचे उतर आया और बोला–

"बोहलोल– तुमने मुझे किस अज़ाब में डाल दिया था"–

बोहलोल मुस्कुराया– "आपने ही तो फ़रमाइश की थी के आपको क़यामत के सवाल व जवाब के बारे में बताया जाये– तो आपने देखा के गर्म तवे पर क़दम रखना कितना मुश्किल है इसी तरह जो लोग ख़ुदा परस्त है– दुनिया के जा–व–हशम से दूर हैं– लालच और तमअ़ नहीं रखते– तो पुले सिरात पर से आराम के साथ गुज़र जायेंगे– और जो दुनियावी शान व शौकत में डूबे हुए हैं उन्हें इसी तरह अज़ाब से गुज़रना होगा– जिस तरह अभी आपको महसूस हुआ"।

२१

बयान किया जाता है के एक रोज़ हारुन का वज़ीर फ़ज़ल बिन रबीअ़ एक रास्ते से गुज़र रहा था– देखा के बोहलोल एक तरफ़ बैठा– कुछ सोच रहा है– फ़ज़ल ने उसका नाम लेकर उसे पुकारा– "बोहलोल क्या सोच रहे हो"– ?

बोहलोल ने चौंक कर सर उठाया५ देखा के फ़ज़ल बिन रबीअ़ खड़ा है– बोला– "तेरे अन्जाम के बारे में सोच रहा हूँ"–

फ़ज़ल चौंक गया– "क्यों– ख़ैरियत तो है बोहलोल"– ?

"सारे वज़ीर एक जैसे ही होते हैं– इसलिये उनका अन्जाम भी मिलता जुलता ही होता है– मुझे अन्देशा है के कहीं तेरा भी अन्जाम जाफ़र बर–मक्की का सा न हो"–

फ़ज़ल काँप गया और बोला– "बोहलोल मैंने जाफ़र बर–मक्की के बारे में सुना तो है– लेकिन दूसरे लोगों की ज़बानी– न जाने इसमें कितना झूठ है और कितना सच– मैं चाहता हूँ के तू मुझे उसके बारे में बता के आख़िर हारुन ने उसके क़त्ल का हुक्म क्यों दिया था"

बोहलोल ने कहा– "तो फिर बैठ जा और कान धर कर सुन" –फ़ज़ल बैठ गया और बोहलोल ने कहना शुरु किया– "तुम जानते हो–ना के मन्सूर के बेटे महदी के ज़माने में ख़ालिद बर मक्की का बेटा यहिया बर–मक्की हारुन रशीद का कातिब मुक़र्रर हुआ था"–

फ़ज़ल ने हुंकारा भरा– हाँ– मैंने यह भी सुना है के हारुन यहिया और उसके बेटे जाफ़र की लियाक़त देखकर उन्हें बहुत पसन्द करने लगा था"–

बादशाह की पसन्द व ना–पसन्द हमेशा ज़वाल का बायस बनती है– हारुन का जाफ़र बर– मक्की के साथ इतनी मोहब्बत हो गयी के उसने अपनी

हमशीरा [२४१] अब्बासा का निकाह जाफ़र बर मक्की से कर दिया– लेकिन उसे यह भी ताकीद कर दी के वह अब्बासा को अपनी बीवी न बनाये– और ख़लीफ़ा की बहिन समझकर उसपर दस्तदराज़ी की कोशिश न करे– जाफ़र बर–मक्की ने क़ौल तो दे दिया– लेकिन उसपर पूरा न उतर सका– इसकी इत्तेलाअ़ हारुन को भी हो गई – और उसकी मोहब्बत दुश्मनी में बदल गई"

उसने अपने ग़ुलाम मसरुर से कहा– "आज तुम्हारे सुपुर्द एक अहम् काम है– जिसकी तकमील हर सूरत में होनी चहिये"–

मसरुर ने सरे तसलीम ख़म किया तो हारुन बोला– आज रात जाफ़र बर–मक्की का सर काट कर हमारी ख़िदमत में पेश करो"–

मसरुर हक–बक रह गया– उसकी ज़बान गुँग हो गई और उसका सर झुक गया– उसके चेहरे पर तश्वीश के आसार देखकर हारुन ने कड़े लहजे में कहा– "मसरुर– तू परेशान क्यों हो गया है किस सोच में पड़ गया है"– ?

मसरुर ने डरते–डरते कहा– हुज़ूर– यह अम्रे अज़ीम है सोचता हूँ के काश आपने इस काम के लिये मुझे मुनतख़ब न किया होता"–

"तो गोया– तू अपनी मौत को आवाज़ देना चाहता है– और ऐसी मौत जिसपर परिन्दे भी आँसू बहायें" –हारुन ने ग़ज़बनाक लहजे में कहा–

तो मसरुर के पास इसके सिवा चार–ए–कार नहीं था के उसके हुक्म की तामील करे– वह सर झुकाये हुए जाफ़र बर–मक्की के यहाँ पहुँचा और उसे तमाम माजरा कह सुनाया–

जाफ़र बर मक्की बे–हद परेशान हुआ उसके पैरों तले ज़मीन निकल गई– लेकिन उसने उम्मीद का सहारा लिया और मसरुर से बोला– "मसरुर– क्या ख़बर के खलीफ़ा ने यह हुक्म शराब के नशे में दिया हो– और जब वह होश में आये– तो उसे पछतावा हो इसलिये मेरी मान और ख़लीफ़ा के पास जा – और उसे इत्तेलाअ़ दे दे के तूने मुझे क़त्ल कर दिया है– अगर वह अफ़सोस का इज़्हार न करे तो तुझे इख़्तेयार है– शौक़ से आकर मेरा सर काट ले"–

मसरुर ख़लीफ़ा की तबीयत से वाक़िफ़ थाऽ वह उसके हुक्म की सरताबी करके ख़ुद मुसीबत में गिरफ़्तार नहीं होना चाहता था– वह जाफ़र से बोला–

"आप मेरे साथ हारुन के महल तक चलें हो सकता है आपकी मोहब्बत ख़लीफ़ा को अपना फैसला बदलने पर मजबूर कर दे"–

जाफ़र को मजबूरन उसकी बात मानना पड़ी– उसके दिल में उम्मीद की थोड़ी–सी जो रमक़ बाक़ी थी– वह उसके सहारे मसरुर के साथ चल पड़ा– मसरुर ने जाफ़र को परदे के पीछे खड़ा किया और ख़ुद लरज़ता काँपता ख़लीफ़ा की खिद्मत में हाज़िर हुआ–

उसे देखते ही हारुन ने कहा– "मसरुर क्या तुमने मेरे हुक्म की तामील की है"–

मसरुर घबरा गया५ और जल्दी से बोला "आलीजाह– जाफ़र बर मक्की मेरे साथ आया है५ वह पर्दे के पीछे खड़ा है – वह–

"मसरुर याद रख के– अगर तूने मेरे हुक्म की तामील में ज़र्रा बराबर भी सुस्ती की तो जाफ़र से पहले तेरा सर उड़ता हुआ नज़र आयेगा"–

मसरुर को अपनी जान प्यारी थी– उसने लपक कर पर्दा उठाया और तलवार का ऐसा हाथ मारा के वजीह (२४२) व हसीन नौजवान का सर तन से जुदा हो गया– फिर उसने उस जवाने रअ़ना (२४३) का सर हाथ में लिया– जो शराफ़त और दानिशमन्दी की तसवीर था– जिसकी और फ़य्याज़ी सख़ावत सबसे बढ़ी हुई थी– उसे अपने सर पर रखा और हारुन के सामने पेश कर दिया"–

"बे रहम ख़लीफ़ा को इसपर भी तसल्ली नहीं हुई और उसने हुक्म दिया के बर–मक्कियों के पूरे ख़ानदान का नाम व निशान मिटा दिया जाये– उनका माल व असबाब् क़ुर्क़ कर लिया जाये–

जाफ़र की लाश बग़दाद के क़िले पर लटका दी गई और चन्द दिन बाद उसे जला दिया गया–

"ऐ फ़ज़ल वज़ारत का यही अन्जाम होता है– इसलिये मोहतात् रहो और अवाम् की भलाई को हमेशा पेशे नज़र रखो"–

फ़ज़ल काँप गया और परेशानी से बोला– बोहलोल मुझे सलामती की दुआ दो"।

●

२२

फ़ज़ल बिन रबीअ़ ने बग़दाद में एक मस्जिद की बुनियाद डाली– वह अपने ख़र्च पर उसे बनवाता रहा– जब तामीर मुकम्मल हो गयी– तो मस्जिद के दरवाज़े पर कत्बा लगाने की बारी आयी– फ़ज़ल भी इस मौके पर आया– उससे पूछा गया के इस कत्बे पर कौन सी इबारत लिखाई जाये–

"ज़ाहिर है इसपर तो मेरा ही नाम लिखा जायेगा"– फ़ज़ल ने बड़े फख़्र से कहा–

बोहलोल क़रीब ही खड़ा था– वहीं से पुकार कर बोला– हज़रत फ़ज़ल बिन रबीअ़– क्या आप इस दीवाने को यह बताने की ज़हमत गवारा फरमायेंगें के आपने यह मस्जिद किस के लिये बनवाई है"– ?

"यह ख़ुदा का घर है– इसे मैंने अल्लाह की ख़ातिर बनाया है" –फ़ज़ल ने जवाब दिया–

बोहलोल मुस्कुराया५ आपका फ़रमाना बजा है– के यह आपने अल्लाह के लिये बनवाई है तो फिर इसपर अपना नाम क्यों लिखवा रहे हैं"– ?

फ़ज़ल ने ग़ुस्से से उसकी तरफ़ देखा– "क्यों !मैं अपना नाम कत्बे पर क्यों न लिखवाऊँ–

आख़िर लोगों को भी तो मालूम होना चाहिये के इस मस्जिद का बनवाने वाला कौन है"–

"तो फिर मेरा नाम लिखवा दो– लिखवा दो के इस मस्जिद का बानी बोहलोल है"–

बोहालोल ने हँसकर कहा–

अजीब दीवाने हो तुम– भला तुम्हारा नाम लिखवाने की क्या तुक है"

–उसने ना–गवारी से कहा–

"चलो न सही– मेरा नाम न लिखवाओ अपना ही नाम लिखवा लो ताकि तुम्हारी शोहरत और नेकनामी हो– लेकिन फिर सवाब का ख़याल अपने दिल में न लाना" –बोहलोल यह कहता हुआ आगे बढ़ गया–

फ़ज़ल का सर झुक गया– वह निदामत से बोला– "बुलाओ बोहलोल को– और जो कुछ वह कहता है कत्बे पर वही लिख दो"–

लोग बोहलोल के पीछे दौड़े और उस से पूछने लगे के कत्बे पर क्या लिखा जाये तो वह बोला– "कुर्आंने पाक की आयत से बेहतर कुछ नहीं– जो इस कत्बे पर कंदा की जाये"–

फ़ज़ल ने भी उसकी ताइर्द की और मस्जिद के कत्बे पर आयाते कुर्आंनी लिखवाई गई।

●

२३

एक एअ़राबी [२४५] के ऊँट को खुजली की बीमारी लाहक़ हो गई– लोगों ने मशविरा दिया के इसपर अरण्डी के तेल की मालिश करें– एअ़राबी ऊँट पर सवार हुआ और शहर की जानिब खाना हो गया ताकि अरण्डी का तेल ख़रीद लाये–

राह में बोहलोल को देखा– तो उसने अपना ऊँट ठहरा लिया– नीचे उतरा और उसे सलाम करके बोला– "मैं अजीब मुसीबत में गिरफ़्तार हो गया हूँ– मेरे ऊँट को ख़ारिश हो गई है– लोगों ने तो अरण्डी के तेल की मालिश करने का मशविरा दिया है मैं अरण्डी का तेल लेने ही जा रहा था– तुम्हें देखा– तो मुझे ख़याल आया के तुम्हारी दुआ में तो बड़ा असर है– अगर तुम मेरे ऊँट पर दमकर दो– तो इसे शिफ़ा हो जायेगी"–

बोहलोल मुस्कुराया– "सिर्फ़ मेरी दुआ में तो इतनी तासीर नहीं है के इतना बड़ा ऊँट उससे शिफ़ायाब हो जाये– हाँ अगर तुम अरण्डी का तेल ले आओ– तो मैं उसपर दुआ दम कर दूँगा– तुम वह तेल इस्तेमाल करना– तो उम्मीद है के काम बन जायेगा"–

बात उस शख़्स की समझ में आ गई– वह शहर से तेल ख़रीद लाया– बोहलोल ने उसपर दुआ दम कर दी– कुछ रोज़ की मालिश से उसका ऊँट तन्दुरुस्त हो गया।

●

२४

बोहलोल का एक दोस्त गेहूँ पिसवा कर वापिस आ रहा था के उसका गधा लंगड़ाने लगा– उसने गधे को दो तीन छड़ियाँ लगाकर आगे ढकेलना चाहा– लेकिन वह टस से मस न हुआ और बिल–आख़िर ज़मीन पर गिर पड़ा– क़रीब ही वह ख़स्ता हाल मकान था– जहाँ बोहलोल उन दिनों मुक़ीम (२४६) था– उस शख़्स ने दरवाज़ा खटखटाया और आवाज़ दी–

"बोहलोल भाई– बोहलोल भाई–

ज़रा मुझे अपना गधा तो दे दो– मेरा गधा तो आधे रास्ते में जवाब दे गया और मुझे यह आटा घर पहुँचाना है"–

बोहलोल उसकी आवाज़ पहचानता था वह उसकी आदत से भी वाक़िफ़ था के वह जानवर की सही निगेहदाश्त (२४७) नहीं करता था और उनसे बेरहमी का सुलूक करता था–

इसलिये वह अपना गधा उसे देना नहीं चाहता था– वह बाहर निकला और उस शख़्स से बोला– "यार– बड़ा अफ़सोस है के मेरा गधा– कोई माँग कर ले गया है– इसलिये इस वक़्त तो तुम्हारे काम नहीं आ सकता"–

अभी बोहलोल के अल्फ़ाज़ उसके मुँह में ही थे के घर के अन्दर से गधे की ढीचूँ–ढीचूँ की आवाज़ सुनाई देने लगी–

वह शख़्स होशियार हुआ और शिकवे के अन्दाज़ में बोला– "अच्छा बोहलोल भाई तुम भी अच्छे दोस्त हो– तुम्हारा गधा तो घर में मौजूद है और तुम कहते हो के उसे कोई माँग कर ले गया है"

"और तुम भी अच्छे दोस्त हो" –बोहलोल ने उसी के लहजे में कहा– "मेरा तुम्हारा पचास साल का साथ है और तुम मेरी बात पर यक़ीन नहीं कर रहे– और गधो की बात मानने पर तैयार हो"।

●

२५

बोहलोल हमाम करने गया– तो वह अपनी गुद्ड़ी लपेटे हुए था– उसकी पापोश [२४८] भी बोसीदा थी और लिबास भी उमदा नहीं था– हमाम के हम्मामियों ने उसकी तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह नहीं दी– ख़ासी देर बाद उसकी बारी आयी– तो भी उन्होंने बोहलोल की कोई ख़ास परवाह नहीं की– और उसके हस्बेमंशा नहाने का कीसा उसके बदन पर नहीं रगड़ा– बोहलोल फ़ारिग़ हो चुका– तो बाहर आया– उसने अपनी जेब में हाथ डाला और दस दीनार निकालकर हमाम के मलिक की हथेली पर रख दिये–

हमाम क मालिक उजरत [२४९] से बहुत ज़्यादा रक़म देखकर क़द्रे नादिम हुआ के उसने बोहलोल के साथ लापरवाही बर्ती– बोहलोल कुछ कहे बग़ैर हमाम से बाहर निकल आया–

अगले हफ़्ते वह फिर हमाम करने आया– तो उसे देखते ही हमामी दौड़े हुए आये और उसे हाथों–हाथ अन्दर ले गये और बड़े अद्ब से उसे ग़ुस्ल करने में मद्द दी–

बोहलोल फ़ारिग़ होकर बाहर आया५ तो उसने जेब में हाथ डाला और एक दीनार मालिक की हथेली पर रख दिया– वह ग़ुस्से से लाल भभुका हो गया– उसने दीनार दूर फेंक दिया और दुरुश्ती से बोला–

"हज़रत आप होश में तो हैं– हमाम करने की यह उजरत" – ??

"क़िब्ला– इस मर्तबा हमाम करने की उजरत तो मैं पिछले हफ़्ते ही आपकी खिद्मत में पेश कर चुका हूँ– यह तो पिछले हफ़्ते की उजरत है– जो मैंने अब अदा की है– ताकि आपको एहसास हो के ग्राहकों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहये"।

●

२६

बग़दाद के शरीर लड़के पागल है– पागल है" का शोर मचाते एक शख़्स के पीछे दौड़े जा रहे थे– वह परेशान हाल शख़्स बार–बार मुड़कर उन्हें मना करने की कोशिश करता– लेकिन वह किसी तौर पर नहीं मानते थे– कोई उसे पत्थर मारता था– कोई उसके कपड़े खींचता था–

कोई पागल–पागल कहकर उसे छेड़ता था– वह उन्हें मना करकर के थक गया– तो उसने हाथ जोड़ दिये और उन नन्हें शैतानों से बोला– "ख़ुदा के लिये मेरा पीछा छोड़ दो– मैं पागल नहीं हूँ– मैं पागल नहीं हूँ– उसकी आवाज़ रुंध गयी थी और उसकी आँखों में आँसू आ गये– थे

लड़के खिलखिलाकर हँस पड़े– उनमें से एक शरीर बोला "सारे ही पागल इसी तरह कहते हैं"–

दूसरे ने लुक़्मा दिया– "तुम तो शक्ल से ही पागल नज़र आते हो और फिर भी कहते हो के मैं पागल नहीं"–

पागलों के सर पर सींग तो नहीं होते"– कोई और बोला और सब उसे छेड़ने और तंग करने लगे–

"ठहर जाओ– शैतान के चेलों– मैं अभी तुम्हें सीधा करता हूँ"– एक कड़कदार आवाज़ सुनाई दी तो लड़कों ने मुड़कर देखा–

बोहलोल अपना असा लहराता चला आता था– "तुम लोगों को शर्म नहीं आती एक शरीफ आदमी को तंग करते हो" –वह ग़ुस्से से बोला– "तुम्हें ज़रा ख़ौफ़ ख़ुदा नहीं है– बेचारे अजनबी को परेशान करके रख दिया– चलो भागो– यहाँ से वरना"–

उसने दाँत पीसकर लाठी उठाई–तो लड़के सर पर पैर रखकर भागे–

उस शख़्स की जान में जान आयी– उसने अपना लिबास दुरुस्त किया और हाँपता हुआ बोला– "आपकी बहुत मेहरबानी– अगर आप न आते तो ये शरीर लड़के सचमुच मुझे पागल ही कर देते" –उसकी आँखे भीग गयीं"–

बोहलोल ने उसकी जानिब देखा– वह शक्ल व सूरत और लिबास से अजनबी मालूम होता था– उसके चेहरे पर परेशानी और हरास था– बोहलोल ने हमर्द्दी से पूछा–

"भाई– तुम अजनबी मालूम होते हो– हमारे इस शहर ने तुमपर जो ज़ुल्म किया है कुछ तो मैंने अपनी आँखों से देख लिया है– और कुछ तुम सुना दो के जिसने तुम्हारी आँखों में आँसू भर दिये हैं"–

उस शख़्स ने एक आह भरी– "आप दुरुस्त फ़रमाते हैं– इस शहर ने तो मुझे पागल बनाने में कसर नहीं छोड़ी है– मैं चन्द रोज़ पहले ही यहाँ वारिद हुआ हूँ– मेरे पास कुछ जवाहरात और सोनें के सिक्के थे– वही मेरी पूँजी थी और वही ज़ादे सफ़र (२५०) मैंने इस ख़ौफ़ से के कहीं अजनबी शहर में लुट न जाऊँ– वह जवाहरात एक अत्तार (२५१) के पास ज़मानत रखवा दिये थे– मगर अफ़सोस आज जब मैंने अपनी अमानत का मुताल्बा किया तो वह मुकर गया– उसने मुझे बुरा भला कहा और शरीर लड़कों को यह कहकर मेरे पीछे लगा दिया के मैं पागल हूँ" –उसके आँसू बह निकले–

बोहलोल ने उसे तसल्ली दी– "भाई– मुझे बहुत अफ़सोस है के इस शहर में तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक हुआ है– लेकिन तुम फ़िक्र न करो– तुम्हारी अमानत तुम्हें ज़रुर मिलेगी"–

"मुझे यक़ीन तो नहीं आता– वह अत्तार हद दर्जा चालाक और मक्कार है लेकिन उम्मीद पर दुनिया क़ायम है– मायूसी कुफ़्र है– इसलिये मैं भी अपनी टूटी आस फिर जोड़ लेता हूँ– अगर आप मेरी जमा पूँजी मुझे दिलवा दें– तो मैं उम्र भर आपको दुआएं दूँगा" –अजनबी ने कहा–

"भाई तुमने सच कहा के मायूसी कुफ़्र है– तुम फिक्र न करो– तुम्हारी अमानत तुम्हें ज़रुर मिलेगी– बोहलोल ने बड़े यक़ीन से कहा–

"ख़ुदा आपका भला करे" –अजनबी बोला–

"अच्छा अब तुम इस तरह करो के मुझे उस अत्तार का पता बता दो कल उसी वक़्त तुम फिर उस अत्तार की दुकान पर आना और उससे अपनी अमानत का मुताल्बा करना– बोहलोल ने उसे हिदायत दी–

"नहीं जनाब– अब मैं उस मक्कार की दुकान पर नहीं जाऊँगा पहले ही उसने मेरे साथ क्या कुछ नहीं किया– "अजनबी ने घबराकर कहा–

"पूरी बात तो सुन लो यार– तुम्हें इस क़द्र घबराने की ज़रुरत नहीं– मैं उसकी दुकान पर पहले से मौजूद हूँगा– यह मेरा ज़िम्मा के वह तुम्हें कुछ नहीं कहेगा" –बोहलोल ने ज़ोर देकर कहा–

अगले रोज़ बोहलोल उस अत्तार की दुकार पर पहुँचा५ उसके हाथ में एक थैली थी– वह उसे सलाम करके बोला– "जनाब मैं कुछ अर्से के लिये ख़ुरासान जा रहा हूँ– दूर का सफ़र है– ख़ुदा मालूम वापिस आऊँ या न आऊँ राह में चोर डाकुओं का भी ख़तरा है– यह मेरी जमा पूँजी है– कुछ जवाहरात और तीस हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं– आप इन्हें मेरी अमानत समझकर रख लें– अगर मैं तीन माह बाद वापिस आ गया तो अपनी अमानत ले लूँगा– अगर मुझे वापिस आना नसीब न हुआ– तो आप इस रक़म से कोई मस्जिद बनवा दें" –बोहलोल ने निहायत संजीदगी से कहा–

अत्तार ने थैली हाथ में ली– उसका बोझ महसूस करके वह दिल ही दिल में ख़ुश हुआ और बोला– "जनाब– आपका कहा सर आँखों पर आप बद्–शुगूनी की बातें न करें– इन्शाल्लाह आप ज़रुर वापिस आयेंगे और अपनी अमानत इसी तरह महफ़ूज़ पायेंगें"–

"मैं आपका बहुत मुताशक्किर (२५२) हूँ– आपने मेरी परेशानी दूर कर दी है"–

बोहलोल ने थैली उसके हवाले कर दी– उसी वक़्त वह अजनबी भी दुकान

पर पहुँच गया और बड़ी लजाजत [२५३] से बोला– "जनाब मैंने जो अमानत आपके पास रखवाई थी–

बरा–ए–करम उसे एनायत फ़रमा दीजिये"–

अत्तार सोचने लगा के उसे क्या जवाब दे– अगर वह इन्कार करता है तो बोहलोल मश्कूक हो सकता है– क्या ख़बर वह अपनी अमानत वापिस ले जाये और किसी दूसरे के पास रखवा दे– बोहलोल की थैली उसकी थैली से काफ़ी वज़नी है– बोहलोल ख़लीफ़ा का रिश्तेदार भी है– उसको अक्सर व बेश्तर ख़लीफ़ा से नज़राने मिलते रहते हैं– यक़ीनन इसके जवाहरात ज़्यादा क़ीमती होंगे– यह सोचकर उसने अपने मुलाज़िम से कहा के वह अजनबी की थैली लाकर उसे दे दें"–

उस शख़्स ने थैली ली और दुआएं देता हुआ चला गया– बोहलोल भी अत्तार को ख़ुदा हाफ़िज़ कहकर रुख़सत हुआ– अत्तार ने बेक़रारी से वह थैली खोली ताकि उसकी मालियत का अन्दाज़ा कर सके– यह देखकर उसकी आँखे खुली की खुली रह गयीं के थैली में लोहे और काँच के टुकड़े भरे हुए थे।

●

२७

बोहलोल बाज़ार से गुज़र रहा था के एक शख़्स ने दामन पकड़ लिया– ोहलोल ने उसकी तरफ़ देखा– "क्या बात है भाई– मुझे क्यों रोका है"– ?

वह परेशानी से बोला– "जनाब शेख़ बोहलोल ख़ुदा के लिये मेरी मद्द ीजिर्ये– वरना मैं बे मौत मारा जाऊगाँ–

क्यों ख़ैरियत तो है"– बोहलोल ने पूछा– "बस ख़ैरियत ही तो नहीं है– री इस ज़बान ने मुझे आज मरवा दिया है– मैंने अपनी मौत का सामान ख़ुद पने हाथों किया है"– वह तास्स्सुफ़ (२५४) से कहने लगा–

बताओ तो सही के क्या हुआ है"– ?

बोहलोल ने इस्तेफ़सार (२५५) किया–

"क्या बताऊँ जनाब– अपनी हिमाक़त का हाल अपनी ज़बान से किस रह कहुँ– दर अस्ल हुआ यूँ के हाकिमे कूफ़ा की ख़िदमत में किसी ने बेहद ूबसूरत गधा पेश किया– सब लोग उसकी तारीफ़ करने लगे– कोई कहता था ह यह बहुत आलानस्ल का गधा है– कोई कहता था के इसे ख़ूब सधाया (२५६) ाया है– कोई कहता था के यह बहुत चाक़ व चौबंद और तैयार है– मेरे मुँह े कहीं निकल गया के यह गधा तो इतना दानिशमन्द है के इसे पढ़ाया जा कता है"–

बस मेरा इतना कहना था के हाकिमे कूफ़ा ने मेरी बात पकड़ ली– मेरे ख़ालिफ़ों ने इसे और हवा दी– यहाँ तक के हाकिमे कूफ़ा ने मुझे हुक्म दे दिया– के मैं गधे को पढ़ाऊँ और अपना क़ौल सच करके दिखाऊँ अगर मैं समें कामयाब हो गया– तो मुझे इनाम व इकराम दिया जायेगा– और अगर मैं ामयाब न हुआ– तो मेरी गर्दन मार दी जायेगी– मैं सख़्त मुसीबत में हूँ–

भाई बोहलोल– मेरी जान पर बनी है– ख़ुदा के लिये कोई सूरत पैदा करो

के मैं बच जाऊँ।

बोहलोल बोला– "भाई ग़म न कर– मैं तुझे एक तरकीब बता दूँगा५ आगे जो अल्लाह को मन्ज़ूर"–

मुक़र्ररा मुदद्त के बाद हाकिमे कूफ़ा ने उसे तलब किया– वह गधे को लेकर उसके दरबार में पहुँचा– सारा दरबार भरा हुआ था और लोग बड़े शौक़ से देख रहे थे के पढ़ा लिखा गधा क्योंकर अपने फ़न का मुज़ाहिरा करता है–

उस शख़्स ने गधे के सामने किताब रखी– गधा सफ़े उलटने लगा– आहिस्ता–आहिस्ता वह तमाम सफ़े उलट गया और जब किताब बन्द कर चुका– तो उसने ज़ोर से पुकारा ढ़ीचूँ–ढीचूँ–ढीचूँ–

हाज़ेरीन और हाकिम हैरान रह गये– उन्होंने तसलीम कर लिया के गधा तमाम किताब पढ़ चुका है और अपनी ज़बान में उसका एलान कर रहा है– हाकिम ने उस शख़्स को भारी इनाम् व इकराम् दिया– वह ख़ुश–ख़ुश वापिस आया और बोहलोल की ख़िदमत में पहुँचा–

जनाब शेख़ बोहलोल– यह इनाम् व इकराम्– यह सब आपका हक़ है– अगर आप मुझे यह तरकीब न बताते तो मैं अपनी जान से भी जाता"–

"नहीं भाई– यह इनाम् व इकराम् तुम्हें ही मुबारक हो– मैंने तो सिर्फ़ तरकीब बताई थी– गधे के साथ मेहनत तो तुमने की है"–

बोहलोल ने बे नियाज़ी से कहा–

क़रीब ही खड़ा हुआ एक शख़्स बोला– "भाई वह तरकीब क्या है– जिसने गधे को सारी किताब पढ़वा दी"– ?

वह शख़्स हँसा और बोला– "अब तो मेरी जान बच गयी है सो तरकीब

को बता देने में कोई हर्ज भी नहीं– के जिसको अपने गधे को पढ़वाना हो– वह इस तरीक़े से पढ़ाये"–

"हाँ भाई बताओ– दूसरा शख़्स पूछने लगा–

"सुनो भाई– वह किताब जो गधे को पढ़ानी हो– उसके दरमियान जौ रख दो– गधे को दिन भर भूखा रखो– और शाम को वही किताब उसके सामने रख दो– भूखा गधा किताब के सफ़े उलटता जायेगा और जौ खाता जायेगा– इस तरह आठ–दस दिन यह अमल दोहराओगे– तो गधा इसका आदी हो जायेगा के उसकी ख़ूराक किताब के सफ़ों के दरमियान है– अब जिस वक़्त भी गधे से किताब पढ़वाने का मुज़ाहिरा करवाना हो– तो उसे भूखा रखो– और किताब के दरमियान जौ भी न रखो– अब गधा यही समझेगा के सफ़ों के दरमियान जौ रखे हुए हैं– वह भूख से बेताब होकर सफ़े उलटता जायेगा–

आख़िरी सफ़े तक जब उसे जौ नहीं मिलेगें– तो वह ढीचूँ–ढीचूँ करके एलान कर देगा के उसने सारी किताब पढ़ ली है"।

●

२८

एक कारवाँ सराय में भटियारे और एक हिन्दुस्तानी सौदागर का झगड़ा था– दोनों में ज़बर्दस्त तू– तुकार हो रही थी– बाक़ी मुसाफ़िर जो सराय में बैठे हुए थे– उन्होंने आकर पूछा के क्या मामला है– ? भटियारे ने ग़ुस्से से कहा

"देखिये जनाब– यह अजीब शख़्स है के खाना खा लिया और क़ीमत अदा करते हुए इसे मौत आती है– हमें यूँ ही मुफ़्त ख़ोरों के पेट भरने लगे– तो कल को भीक माँगते फिरेंगें"–

एक मुसाफ़िर ने सौदागर की तरफ़ देखा– "जनाब आप ख़ासे माक़ूल और आसूदा हाल नज़र आते हैं– आख़िर आप इस ग़रीब आदमी के पैसे क्यों नहीं अदा कर देते"–

क़िब्ला मैं तो पैसे देने के लिये तैयार हूँ– बल्कि मैंने तो इसके साथ यह भलाई की के पिछले खाने के पैसे भी अदा करना चाहता हूँ– जो मैं इत्तेफ़ाक़न भूल गया था– लेकिन यह कुछ और ही हिसाब बता रहा है– यूँ लगता है– जौसे सारे मुसाफ़िरों की क़ीमत यह मुझसे ही वुसूल करना चाहता है"५ सौदागर ने अपना मौक़िफ़ (२५७) बयान किया–

भलाई किस बात की– "भटियारा तुनक क़र बोला– "एक तो पहले रक़म ही अदा नहीं की– उसी का मुझपर एहसान जताते हो– खाना खाया है– तो क़ीमत भी अदा करो– और ख़ा॰म–ख़ा॰ झगड़ा न बढ़ाओ"–

तकरार बढ़ी– तो कोई क़स्बे के मुक़द्दम को भी बुला लाया– उसने दोनों से कुल वाक़ेआ बयान करने को कहा–

सौदागर बोला– "जनाब– मामला यह है– के पिछले साल भी मैं इस सराय में ठहरा था– मैंने खाने में एक मुर्ग़ी और चन्द अण्डे खाये थे– मगर

जल्दी में होने की वजह से मैं उसकी क़ीमत अदा नहीं कर सका– मैंने इससे उस खाने का हिसाब पूछा है– तो एक हज़ार दीनार माँगता है– आप ही इन्साफ़ से बताइये के क्या एक मुर्ग़ी और चन्द अण्डों की क़ीमत एक हज़ार दीनार होती है"– ?

मुक़द्दम ने भटियारे से कहा– "क्यो साहब आप इस सिलसिले में क्या कहते हैं"– ?

भटियारे ने गले को साफ़ किया और बड़े ग़ुस्से से बोला– जनाबे आली– अभी तो मैंने बड़ी फ़य्याज़ी से काम लिया है– के कहीं गड़बड़ न हो और मैं किसी का देनदार न बनूँ– आप ज़रा इन्साफ़ से ग़ौर फ़रमायें के इन हज़रत ने पिछले साल बड़े शौक़ से एक मुर्ग़ी और छः अण्डे डटकर खाये थे– अब अगर वह मुर्ग़ी ज़िन्दा होती और मैं छः अण्डे उसके नीचे रख देता– तो उनमें से चूज़े निकले आते– और चूज़े बड़े होकर अण्डे देते– तो मैं उनसे भी चूज़े निकलवाता– आप अक़्लमन्द हैं ख़ुद ही हिसाब लगा लें के एक साल में वह मुर्ग़ी और छः अण्डे हज़ारों मुर्ग़ियों और चूज़ों में बदल जाते यह सारा मुनाफ़ महज़ (२५८) इस वजह से मेरे हाथों से निकल गया के इन हज़रत ने वह मुर्ग़ी और अण्डे खा लिये थे५ अब मैंने उसी हिसाब से क़ीमत सिर्फ़ एक हज़ार दीनार लगाई है– तो इन्हें अदा करते हुए तकलीफ़ होती है– और मुझसे झगड़ा करने पर तुल गये हैं"–

मुक़द्दम भटियारे का दोस्त था– इसलिये उसने फ़ैसला भटियारे के हक़ में दे दिया और उसे हुक्म दिया के वह भटियारे को एक हज़ार दीनार अदा करे–

सौदागर बेचारा बहुत परेशान था के इतनी रक़म कहाँ से अदा करे के मुसाफ़िरों में से एक शख़्स बोला– के हज़रात– अगर कोई एक तेज़ रफ़्तार सवारी मोहय्या कर दे–तो मैं अभी बग़दाद से क़ाज़ी को लेकर आता हूँ– फिर वह जो फैसला कर दे– उसे मान लिया जाये"–

बाक़ी मुसाफ़िरों ने उसकी हिमायत की– सौदागर बोला– "भाई आप मेरा ख़च्चर ले जायें यह बहुत तेज़ रफ़्तार है– और ख़ुदा के लिये क़ाज़ी

साहब को लेकर आये- यह क़स्बा तो अधेंर नगरी है- मैं इतनी रक़म इसको अदा कर दूँ- तो क्या ख़ुद भीक माँग कर अपने मुल्क वापिस जाऊँ- ख़ुदा आपका भला करे- मेरी मद्द कीजिये"-

उस शख़्स ने ख़च्चर लिया और बर्क़ रफ़्तारी से बग़दाद की तरफ़ रवाना हो गया- शहर चन्द कोस के फ़ासले पर था- वह जल्दी ही वापिस आ गया और बोला- "क़ाज़ी साहब ख़ुद मसरुफ़ थे- उन्होंने आधे घण्टे तक आने का वायदा किया है- आप लोग इन्तेज़ार कीजिये"-

एक-एक करके मिनट गिने जाने लगे लोग बेचैनी से उस रास्ते की तरफ़ देखने लगे- जिस तरफ़ से क़ाज़ी साहब को आना था- आधा घण्टा गुज़र गया- फिर एक घण्टा हुआ- लोगों की बेचैनी बढ़ी- सौदागर की परेशानी का ठिकाना नहीं था और भटियारा मूँछों को ताव देता- ख़ुश-ख़ुश फिर रहा था- वक़्त और गुज़रा५ और डेढ़ घण्टा हो गया-

अचानक बग़दाद की तरफ़ से आने वाले रास्ते पर एक टोपी नज़र आयी- फिर गुद्ड़ी में लिपटा एंक दुखेश नमुदार हुआ-

"क़ाज़ी साहब आ गये- क़ाज़ी साहब तशरीफ़ ले आये- "उस मुसाफ़िर ने ख़ुशी से नारा मारा-

लोग एहतेरामन उठ गये और उन्होंने हैरत से उस दुखेश को देखा जिसका नाम बोहलोल था- वह गधे से उतरा और अपना असा टेकता दरमियान में आ बैठा- और बोला- "हज़रात मैं माज़ेरत ख़ाहूँ के मुझे यहाँ पहुँचने में ताख़ीर हो गई- मुझे इस झगड़े की इत्तेलाअ मिल गई थी- मगर मैं जल्दी नहीं आ सकता था- दर अस्ल मैं मुक़द्दमों के फ़ैसले करने के अलावा- काश्तकारी भी करता हूँ- आज जब आपका पैग़ाम मुझे मिला तो मैं गेहूँ के बीज उबाल रहा

था– क्योंकि आप जानते हैं के गेहूँ के बीज़ उबाल लिये जायें– तो पैदावार अच्दी होती है– बस वह बीज उबालते उबालते ही मुझे इतनी देर हो गई– मैं एक बार फिर आपसे माफ़ी का ख़ास्तगार हूँ"–

मुक़द्दम और हाज़ेरीन हैरान हुए– भटियारे ने ग़ुस्से से कहा– "जनाब आप कैसे क़ाज़ी हैं– जो गेहूँ के बीजों को उबालकर बोते हैं– आपको मुक़द्दमें का फ़ैसला करना है"–

"क्यों नहीं जनाब– मैं बिल्कुल दुरुस्त फ़ैसला करूँगा– इन्शाल्लाह– और गेहूँ उबालने पर आपको ताज्जुब क्यों है– ? आपके यहाँ तो भुनी हुई मुर्ग़ियाँ भी अण्डों पर बैठती और चूज़े निकालती हैं– तो उबले हुए गेहूँ क्यों न हरे होंगे"–

लोग चौंक गये– मक़द्दम भी अपनी जानिबदारी पर शर्मिन्दा हुआ और बोला– "सुब्हानल्लाह– हुज़ूर आपने तो बात ही बात में फ़ैसला कर दिया"–

"नहीं अभी फ़ैसला होना बाक़ी है– और वह यह है के भटियारों और सौदागर अपने दिल से रंजिश निकाल दें और दोनों गले मिलें और भटियारा आईंदा भुनी हुई मुर्ग़ियों की औलादों की क़ीमत मुसाफ़िरों से न वुसूल किया करें"।

●

२९

शेख जुनैदे बग़दादी– बग़दाद की गलियों में अपने मुरीदों के हमराह चले जा रहे थे– अचानक उन्होंने मुड़कर कहा– आओ सहरा की जानिब के मुझे वहाँ किसी से मिलना है"–

मुरीदों को हैरत हुई– लेकिन उनमें सवाल करने की जुर्अत नहीं थी– वे ख़ामोशी से उनके अक़ब में चलते गये– देखा के ईंट के सरहाने पर सर रखे एक दुरवेश महवे–इस्तेराहत (२५९) है– वह अपने आप में इस क़द्र मगन था के उसे शेख़ और उसके मुरीदों के क़दमों की चाप भी सुनाई नहीं दी–

शेख़ ने अद्ब से सलाम किया–

"हज़रत बोहलोल" –मेरा सलाम क़ुबूल फ़रमाइये"–

बोहलोल ने निगाह उठाई– सलाम का जवाब दिया और बोला– तुम कौन हो"– ??

हुज़ूर मैं जुनैद बग़दादी हूँ"–

शेख़ ने तआ़रुफ़ कराया–

"अच्छा– मैं समझा– तुम ही अबुल क़ासिम हो–बोहलोल ने सवाल किया–

"जी– आप दुरुस्त समझे" –शेख़ ने अद्ब से कहा–

"सुना है– तुम लोगों को रुहानी तालीम देते हो"– बोहलोल ने पूछा–

"जी हाँ–एक नाचीज़ अपनी सी कोशिश करता है"– शेख़ ने आजिज़ी से जवाब दिया–

लोगों को तो तुम रुहानी तालीम देते हो– क्या तुम्हें खाना खाने का तरीक़ा

मालूम है"– ? बोहलोल ने पूछा–

शेख़ चौंके और सँभल कर बोले– मैं "बिस्मिल्लाह" कहकर शुरु करता हूँ– अपने सामने से खाता हूँ– छोटे लुक़्में लेता हूँ–

खाने में शरीक लोगों के निवाले नहीं गिनता खाना खाते हुए अल्लाह की हम्द करता हूँ और खाना शुरु करने से पहले और ख़त्म करने से पहले हाथ धोता हूँ"–

"वाह भाई! क्या कहने" –बोहलोल सर झिटक कर उठा और अपना दामन झाड़कर बोला– "तुम तो ख़िल्क़त के मुर्शिद (२६०) बने फिरते हो और तुमको अभी तक खाना खाना भी नहीं आता"– उसने इतना कहा और आगे बढ़ गया–

शेख़ के मुरीदों को उसका इस तरह कहना बहुत ना–गवार गुज़रा– उन में से एक ग़ुस्से से बोला– पीर व मुर्शिद– यह बोहलोल तो बिल्कुल पागल है– आप इसकी बात का ख़याल न करें"–

शेख़ ने सर हिलाया– "यह पागल ज़रुर है– मगर हज़ार दानिशमन्दों पर भारी है– अस्ल हक़ायक़ इसी के पास है–आओ चलो– इससे हमें बहुत कुछ सीखना है"–

मुरीद बा–दिले– न–ख़ास्ता शेख़ के साथ चल पड़े– बोहलोल अपनी धुन में मस्त चलता चला गया– शेख़ ने उसे न पुकारा न रोका– यहाँ तक कि वह एक वीराने में जा बैठा–

शेख़ मोहतात क़दमों से उसके क़रीब पहुँचे और उसे फिर सलाम किया–

बोहलोल ने निगाह उठाई– तुम कौन हो"– ?

मैं शेख़ बग़दादी हूँ– जो खाना खाना भी नहीं जानता" –उन्होंने एअ़तेराफ़ किया–

बोहलोल ने बेनियाज़ी से कहा– "खाना खाना तो तुमको आता नहीं– क्या बात करना आता है"– ??

जी– मेरा ख़याल है के मैं किसी हद तक बात करनी जानता हूँ' –शेख़ ने झिझक कर जवाब दिया–

"सुब्हानल्लाह बताओ– तुम किस तरह गुफ़्तुगू करते हो" – ? बोहलोल ने पूछा

"मैं एअ्तेदाल की हदतक बात करता हूँ– बे मौक़ा और बहुत ज़्यादा नहीं बोलता– सामेईन (२६१) की अक्ल और गुफ़्तुगू के मुताबिक गुफ़्तुगू करता हूँ– दुनिया वालों को अल्लाह और उसके रसूल (स० अ०) की तरफ़ बुलाता हूँ मैं इतना नहीं बोलता के सुनने वाले बेज़ार हो जायें– मैं अपनी गुफ़्तुगू में ज़ाहिरी और बातिनी उलूम की बारीकियों का लिहाज़ भी रखता हूँ"–

शेख़ ने कोशिश की इस मर्तबा कोई कसर न रह जाये–

"अजीब शख़्स हो तुम" –बोहलोल बेज़ारी से उठ खड़ा हुआ–

"खाना खाना तो दरकिनार– तुम को तो बात करने की भी तमीज़ नहीं है"–

उसने अपना दामन झटका और आगे बढ़ गया–

मुरीदों को सख़्त ना–गवार गुज़रा– उन्होंने घूर कर दूर जाते हुए बोहलोल की तरफ़ देखा और गुस्से से बोले–

"ये शेख़– यह दीवाना किस क़द्र गुस्ताख़ है– इसको आपके इल्म और मतर्बे का क्या अन्दाज़ा इसे अपने हाल पर छोड़िये और तशरीफ़ ले चलिये"–

"नहीं" –शेख़ बग़दादी ने कहा– "यह दीवाना दानाई का ख़ज़ाना अपने पास रखता है– और मुझे उसी की हाजत (२६२) है– आओ मेरे साथ"–

वे फिर बोहलोल के पीछे चल दिये– कुछ दूर तक बोहलोल अपने ख़याल में मगन चलता चला गया– फिर उसने मुड़कर देखा और बोला– शेख़ बग़दादी–तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो–न तुमको खाना खाना आता है– न गुफ़्तुगू के आदाब जानते हो– शायद सोने के तौर तरीक़ा भी तुमको नहीं आता होगा"–

"जैसा मुझे आता है- मैं आपको बताता हूँ"- शेख़ ने अद्ब से कहा-

"बताओ"- ? बोहलोल ने ज़मीन पर बैठते हुए कहा-

शेख़ भी बैठ गये और बोले- "मैं जब इशा की नमाज़ पढ़कर औराद् और वज़ाएफ़ (२६५) से फ़ारिग़ हो जाता हूँ- तो सोने के कपड़े पहन लेता हूँ- और उन आदाब को जो रसूलल्लाह और दीन के बुज़ुर्गों के तुफ़ैल हम तक पहुँचे हैं-मल्हूज़े ख़ातिर (२६४) रखता हूँ-

"कमाल है" बोहलोल ने कहा- "इन हज़रत को तो सोना भी नहीं आता उसने उठना चाहा- लेकिन शेख़ बग़दादी ने दामन पकड़ लिया और मिन्नत करने लगे-

जनाब शेख़ बोहलोल-ख़ुदा के लिये तशरीफ़ रखिये और मुझे वे सब तालीम कीजिये जो मैं नहीं जानता"-

बोहलोल मुस्कुराया- "शेख़-पहले तुम सब जानने का दावा रखते थे- इसलिये मैंने तुम से किनारा किया- अब तुमने अपनी ना-वाक़फ़ियत का एअ़तेराफ़ कर लिया है- तो तुमको सिखाने में कोई हर्ज नहीं तो सुनो"-

मैं हमा-तन गोश (२६५) हूँ" -शेख़ बग़दादी ने तवज्जोह से कहा-

"तुमने खाना खाने के आदाब में जो कुछ बयान किया-वे सब फ़ुरुआ़त (२६६) हैं- जबकि उसूल की अहमयित मुसल्लम है- तो खाना खाने की अस्ल यह है के जो कुछ खाया जाये- वह हलाल और जाएज़ हो- अगर हराम ग़िज़ा को एक हज़ार आदाब के साथ भी खाया जाये- तो वह बे फ़ायदा है और दिल की तारीकी का सबब बनता है"- बोहलोल ने बयान किया-

"सुब्हानल्लाह- आपने मेरी आँखें खोल दी हैं"- जुनैद ने कहा-

बोहलोल ने अपनी बात जारी रखी "बात करने में सबसे पहले क़ल्ब की पाकीज़गी और नियत का दुरुस्त होना ज़रुरी है और वह गुफ़्तुगू ख़ुदा की खुश्नूदी के लिये होनी चाहिये- अगर किसी दुनियानी काम की ग़रज़ से होगी- तो चाहे कैसे ही अल्फ़ाज़ चुने जायें- वह मुसीबत ही मुसीबत है इसलिये ख़ामोशी ही में आफ़ियत है"-

"सोने के बारे में जो कुछ तुमने बयान किया है- वे भी फ़ुरुआत हैं- उसकी अस्ल यह है के सोते वक्त दिल में किसी भी मुसलमान से बुग़्ज़ (२६७), कीना (२६८) और हसद (२६९) न हो- दिल में दुनिया और माले दुनिया का लालच न हो- और सोते हुए, ख़ुदा की याद दिल में हो"-

शेख़ बग़दादी ने बे साख़्ता उठकर बोहलोल के हाथ को बोसा (२७०) दिया- और उसे दुआएं देते हुए रुख़्सत हुए- उनके जो मुरीद बोहलोल को दीवाना और पागल समझ रहे थे- उन्हें अपने अमल पर ख़जेलत व शर्मिन्दगी हुई उन्होंने नये सिरे से अपने क़ल्ब की रौशनी में ज़िन्दगी को देखना शुरु किया।

●

३०

अब्दुल्लाह मुबारक के दिल में बोहलोल से मिलने का शौक़ हुआ– किसी ने बताया के वह सहरा में मिलेगा– अब्दुल्लाह सहरा की तरफ़ रवाना हुआ५ एक जगह उसने बोहलोल को देखा के नंगे सर नंगे पाँव या होवा–या होवा पुकार रहा है– वह क़रीब गया और सलाम किया– बोहलोल ने सलाम का जवाब दिया–

अब्दुल्लाह मुबारक बोला– या शेख़ मुझे कुछ नसीहत कीजिए– मुझे बताइये के ज़िन्दगी को गुनाहों से कैसे पाक करूँ– अपने सरकश नफ़्स (२७१) से किस तरह बाज़ी ले जाऊँ और क्योंकर राहे निजात इख़्तेयार करूँ"– ?

बोहलोल ने सादगी से कहा– "भाई जो ख़ुद आजिज़ और परेशान है– उससे कोई दूसरा क्या उम्मीद रख सकता है– मैं तो दीवाना हूँ– तू जाकर किसी अक़्लमन्द को तलाश कर जो तेरी फ़रमाइश पूरी कर सके"–

अब्दुल्लाह ने सीने पर हाथ रखा– "बोहलोल इसलिये तो यह नाचीज़ आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ है के सच्ची बात कहने की जुर्अत तो सिर्फ़ दीवाने ही रखते हैं"–

बोहलोल ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और ख़ामोश हो गया– अब्दुल्लाह मिन्नत ख़ुशामद करने लगा– जब उसने बहुत मजबूर किया– तो बोहलोल बोला–

"अब्दुल्लाह –मेरी चार शर्तें हैं– अगर तुम क़ुबूल कर लो– तो मैं तुम्हें राहे निजात दिखा दूँगा"–

ब–सर–व–चश्म– चार क्या में आपकी चार हज़ार शर्तें मानने को तैयार हूँ के राहे निजात तो इसमें सस्ती है"– अब्दुल्लाह ने बे–सबरी से कहा–

तो फिर सुन"–बोहलोल कहने लगा– "मेरी पहली शर्त यह है के जब तू

कोई गुनाह करे या ख़ुदा के हुक्म की ना–फ़रमानी करे– तो उसका रिज़्क़ भी मत खा"–

अब्दुल्लाह घबराया– "यह किस तरह मुमकिन के कोई खुदा का रिज़्क़ न खाये"–

बोहलोल बोला– "तो फिर अक़्लमन्द आदमी ख़ुदा की बन्दगी का दावा भी न करो– यह कहाँ का इन्साफ़ है के जिसका खाओ उसी की नमक हरामी करो"–

अब्दुल्लाह ने एअ़तेराफ़ किया– "आप सच फ़रमाते हैं– दूसरी शर्त बयान कीजिये"–

"दूसरी शर्त यह है के जब तू कोई गुनाह करना चाहे– तो ख़ुदा की ज़मीन से निकल जा– के यह दुनिया महज़रे ख़ुदा (२७२) है– बोहलोल ने कहा–

उफ़ ख़ुदाया– यह शर्त तो बिल्कुल ही ना–क़बिले अमल है– ज़मीन के सिवा बन्दा कहाँ रह सकता है"– अब्दुल्लाह मुबारक चिल्लाया बोहलोल बोला–अब्दुल्लाह इतना परेशान क्यों हो रहा है– क्या तुझमें ज़र्रा बराबर भी इन्साफ़ नहीं है– क्या तेरे ख़याल में यह सही है के बन्दा जिसके मुल्क में रहे–जिसका रिज़्क़ खाये और जिसकी बन्दगी का दावा करे– उसकी ना–फ़रमानी भी करे"– ?

अब्दुल्लाह नादिम हुआ– "बोहलोल बेशक आपने सच फ़रमाया– अब तीसरी शर्त भी बयान कीजिये"–

बोहलोल बोला– "भाई तीसरी शर्त यह है के जब तू कोई गुनाह करने का इरादा करे– या ख़ुदा की ना–फ़रमानी करना चाहे– तो किसी ऐसी जगह जाकर का और जहाँ खुदा तुझे न देख सके न ही तेरे हाल से वाक़िफ़ हो सके– जब तुझे कोई ऐसी जगह मिल जाये जहाँ तुझे ख़ुदा न देखे तो फिर जो तेरा दिल चाहे करे"–

अब्दुल्लाह बे हद परेशान हुआ–

"जनाब शेख़ बोहलोल–यह शर्त भी वैसी ही कठिन और ना–क़बिले

अमल है– ख़ुदा तो हाज़िर व नाज़िर है– वह आलिमुल-ग़ैब है– वह सब कुछ जानता और देखता है– तो फिर ऐसी कौन सी जगह है जो उससे पोशीदा और ओझल है"–

"तो अब्दुल्लाह जब तू यह जानता है– के वह हाज़िर व नाज़िर है– तो फिर क्या किसी बन्दे को ज़ेब देता है के वह ख़ुदा की ज़मीन पर रहे– उसका रिज़्क़ खाये और उसके सामने ही उसकी ना–फ़रमानी करे और फिर भी उसे बन्दगी का दावा हो– हालांकि अल्लाहताला कुर्आने पाक में फ़रमाता है– यह ख़याल न करो के अल्लाह उस अमल से ग़ाफ़िल है– जो ज़ालिम करते हैं"–

अब्दुल्लाह ने पशेमानी से कहा– "बोहलोल मैं ला–जवाब हूँ– अब आप अपनी चौथी शर्त बयान करें"–

बोहलोल कहने लगा– "चौथी शर्त यह है के जिस वक़्त मलकुल–मौत (२७३) अचानक तेरे पास आये– ताकि ख़ुदा के अम्र को पूरा करें– और तेरी रुह क़ब्ज़ करके ले जाएँ तो तू उस घड़ी मलकुल मौत से कहना– "ऐ मलकुल मौत– ज़रा तू ठहर मैं अपने अज़ीज़ों से रुख़्सत हो लूँ– और वह तूशा अपने साथ ले लूँ– जो आख़ेरत में मेरी निजात का सबब हो– तो फिर मेरी रुह क़ब्ज़ करना"–

मलकुल–मौत कब किसी को मोहलत देता है शेख़ बोहलोल– यह आपने कैसी कड़ी शर्त लगा दी है"– अब्दुल्लाह मुबारक ने फ़रियाद की–

तो फिर ऐ दानिशमन्द इस दीवाने की बात सुन– जब तू जानता है के मौत से किसी को मफ़र (२७४) नहीं– मलकुल मौत किसी को मोहलत नहीं देता– गुनाहों के बीच में किसी वक्त भी–

मलकुल मौत सामने आ खड़ा होता है– फिर एक साँस की भी मोहलत नहीं मिलती– जैसा के ख़ुदावन्दे आलम ने फ़रमाया है–

जिस वक़्त मौत आयेगी– तो न घड़ी भर की देर होगी, न जल्दी" –तो ऐ अब्दुल्लाह तू कब ग़फ़लत से होशियार होगा– ?? देख ग़ुरुर से दूर रह और आख़ेरत की फ़िक्र कर– लम्बा सफ़र सामने है और उम्र बहुत मुख़्तसर है– जो

काम और अमले ख़ैर आज हो सकता है– वह आज कर लो– क्या ख़बर तू कल को न देख सके जो वक्त़ हाथ में है वही ग़नीमत है– अमाले ख़ैर की सूरत में आज ही आख़ेरत का तूशा अपने हमराह ले ले– ऐसा न हो कल पछताना पड़े"–

अब्दुल्लाह का सर झुकता चला गया और उसकी ज़बान गुंग हो गयी– बोहलोल ने कहा– "अब्दुल्लाह तुमने ख़ुद ही मझसे नसीहत करने की फ़रमाइश की थी– जो तुम्हें राहे निजात दिखा दे– तुमने अब सर क्यों झुका लिया है– ? तुम्हारी ज़बान पर ताला क्यों पड़ गया है– तुम आज मेरे सामने ला–जवाब क्यों हो गये हो– तो जब कल रोज़े महशर (२७५) तुमसे पूछ–ताछ होगी– तो क्या जवाब दोगे– यहाँ इस दुनिया में ही अपना हिसाब साफ़ करो– ताकि कल के ख़ौफ़ से पनाह में रहो"–

अब्दुल्लाह ने झुका हुआ सर उठाया और सच्चाई से बोला– "जनाब शेख़ बोहलोल मैंने आपकी नसीहत को दिल व जान से सुना है और उसे हिर्ज़े जान (२७६) बना लूँगा– आपने मुझे अपना मुरीद बना लिया है– लोग तो आपको यूँ ही दीवाना कहते हैं– वरना कौन नहीं जानता के आले मोहम्मद (अ०) की सोहबत और मोहब्बत ने आपको यग़ान–ए–रोज़गार (२७७) बना दिया है आप पागल नहीं– आले मोहम्मद (अ०) के दीवाने हैं"

बोहलोल ने अपनी गुद्ड़ी उठाई और यह कहता हुआ चल पड़ा–

"बन्दे को लाज़िम है के जो कुछ करे ख़ुदा के हुक्म से करे और जो कुछ कहे सुने ख़ुदा के हुकम से– क्योकि वह बन्दगी का दावा रखता है– और ख़ुद को ख़ुदा का बन्दा कहता है

●

१ जन्नत = स्वर्ग

२ बर्हना-पा = नंगे पैर

३ हक़ारत = ज़िल्लत

४ अक़्ल = बुद्धि

५ मोहतरम् = जिसका एहतेराम किया जाय

६ क़ारेईन = पढ़ने वाले

७ मोजिज़ा = चमत्कार, करामत

८ ओमूमन = आम तौर से

९ दनिशे बुर्हानी = अक़्ली दलील की समझ

१० माना = अर्थ

११ सफ़्हात = पन्ने, पृष्ट

१२ वाहिद = एक

१३ हिकमत = बुद्धिमानी

१४ राह = मार्ग

१५ फ़रामोश = भूला हुआ

१६ दौर में = ज़माने में

१७ मक़बूल = प्रसिद्ध

१८ हिकायत = कहानी

१९ बग़दाद = इराक़ की राजधानी

२० सरवतमन्दों = धनी लोग

२१ बरादरे मदरी = जिसकी माँ एक हो और बाप दो

२२ शार्गिद = शिष्य

२३ फरज़न्द = पुत्र

२४ ज़माना = समय (के अर्थ में प्रयोग होता है)

२५ मारुफ़ = प्रसिद्ध

२६ मुख़ासमत = दुश्मनी, शत्रुता

२७ रवायत = किसी बात की नक़ल

२८ नताएज = परिणाम कां बहु

२९ अनक़रीब = शीघ्र ही

३० मुन्कशिफ़ = स्पष्ट

३१ पुर-अज़-हिकमत = बुद्विमानी से परिपूर्ण

३२ तसल्लुर = ख़याल

३३ मुताले = पढ़ना

३४ तब्बाअ़ = ज़ेहीन, प्रतिभाशाली

३५ निशान देही = पता देना, ठिकाना बताना

३६ आलिम = विद्वान

३७ नाबग़ा-ए रोज़गार = अपने ज़माने का नाबेग़ा,
अज़ीमुश-शान-शख़्सियत

३८ हिस्से मिज़ाह = हास्य प्रद

३९ मुआशेरत = मिल-जुलकर ज़िन्दगी बसर कना

४० हिमायत = पक्ष में

४१ मोअस्सर = प्रभाव पूर्ण

४२ तनक़ीद = नुक्ताचीनी करना

४३ बज़्लासन्जी = हँसमुख हँसाने की कला

४४ मोहय्येरुल-ओक़ूलअक़्ल को हैरानी में डालने वाला

४५ तालीफ़ = संकलन

४६ जमा करदा = जमा की हुई

४७ चहार जानिब = चारों ओर

४८ इस्तेजाब = ताज्जुब, हैरानी

४९ नौरंग्गिये दौरांज़माने के इनक़ेलाबात

५० परागन्धा = पेरशान

५१ असा = वह लकड़ी जिसपर सहारा करे

५२ बेमाना = जिसका कोई अर्थ न हो

५३ गुंग = गूँगा

५४ तबसिरा = पूर्ण विवरण

५५ असरार = भेद और (सर का बहु)

५६ अलैहदा = अलग

५७ बर्गुज़ीदा = चुना हुआ

५८ दिगर-गुँ = उलट पुलट, तहो-बाला

५९ ख़ाइन = ख़यानत करने वाला

६० शाएक़ = शौक़ीन

६१ ख़ाहों = चाहने वाले

६२ बुज़दिल = कमज़ोर डरपोक

६३ जवाबदेह = उत्तर देने योग्य

६४ ब-सर-व-चश्म = सर आँखों पर

६५ आज़ाद करदा = अज़ाद की हुई

६६ मोअद्दत = मोहब्बत

६७ ताईद = हिमायत

६८ एआ़नत = मद्द

६९ इत्तेला़आ़त = ख़बरें

७० इताब = अज़ाब

७१ बाहम = आपस मे

७२ रहनुमाई = मार्गदर्शन

७३ अहवाल = हाल का बहु

७४ क़ल्ब = दिल

७५ सादिक़ = सत्य, सच्चा

७६ गुलुगीर = गले में फँस जाना

७७ सर्द-आह = ठण्डी साँस

७८ हुरुफ़े तहैज्जी = अलिफ़" से लेकर बड़ी "ये"तक के हुरुफ़ को हुरुफ़े तहैज्जी कहते हैं

७९ अता करदा = दिया हुआ

८० हिकमत = बुद्धिमानी, अक़्लमन्दी

८१ जिलावतनी = अपने वतन से दूसरी जगह भेज दिया जाना

८२ विजदान = जानने और दरियाफ़्त करने की ताक़त

८३ जबल = ऊँट

८४ आबाई = बाप दादा का

८५ फरज़ानों = बुद्धिमान, समझदार (फरज़ाना का बहु)

८६ शिकस्ता = टूटा हुआ

८७ तफ़्क्कुर = फ़िक्र

८८ उनसियत = मोहब्बत

८९ रज़ामन्द = राज़ी हो जाना

९ऍ शेगुफ़्तगी = फूल का खिलना

९१ दस्त-रस = पहुँच, रसाई,

९२ ख़वास = ख़ास का बहु

९३ तजाव्वुज़ = हद से आगे निकल जाना

९४ तबरीक = मुबारकबाद देना

९५ दाद्-व-तहसीन = तारीफ़

९६ बातिल = ग़लत, नाहक़

९७ तमस्ख़ुर = मसख़रापन, हँसी मज़ाक़

९८ ख़ज़िल = शर्मिन्दा, नादिम

९९ क़हक़हों = ज़ोर ज़ोर से हँसना

१०० हक़ायक़ = हक़ीक़त का बहुवचन

१०१ ज़बान-ज़दे-आम = जो बात आम लोगों की ज़बान पर आती रहे

१०२ मुक़र्रबों = ख़ास दोस्त, क़रीबी (मुक़र्रब का बहु)

१०३ तबअ़ = फ़ितरत, ख़सलत, छापना, फितरत, ख़सलत

१०४ औक़ात = समय का बहु

१०५ वज़ाहत = पुष्टि करना, स्पष्ट करना, साफ़, साफ़ कहना

१०६ मोअद्दत = अदल के साथ

१०७ अक़साम = तरह तरह के

१०८ महज़ूज़ = पसन्न होना, ख़ुश होना

१०९ वल्लाह = अल्लाह की क़सम

११० नौसर बाज़ = धोखेबाज़

१११ ख़म = झुकना

११२ क़ाज़ी = फैसला करने वाला

११३ क़ज़ा = मौत

११४ इन्तेक़ाल(मर जाना)एक जगह चले जाना दूसरी जगह

११५ अंगुश्त-ब-दन्दाँ अँगुली दाँतो में दबा लेना

११६ गुज़श्ता = गुज़रा हुआ

११७ रविश = तरीक़ा

११८ तालिबे-इल्म = विद्यार्थी

११९ बालातर = बलन्द

१२० नमुदार = प्रकट होना

१२१ पेशानी = माथा

१२२ बेनियाज़ी = बे-परवाही

१२३ माजरा = मामला

१२४ ज़र्ब = चोट

१२५ शदीद = तेज़, सख़्त

१२६ मुख़ातब करना = मुतावज्जेह करना

१२७ शर्गिद = शिष्य

१२८ इब्लीस = शैतान

१२९ तुर्की-ब-तुर्की = दू-ब-दू

१३० ज़िच = बोर हो जाना

१३१ तक़सीर = ख़ता, क़ुसूर, भूल चूक

१३२ फ़ेल = कार्य

१३३ तकज़ीब = झुठलाना

१३४ ताक़्क़ुब = पीछा करना

१३५ मुस्तग़रक़ = डूबा हुआ

१३६ निस्फ़ुन्नहार = आधा-दिन

१३७ मतअ़म = रेस्टोरेन्ट

१३८ ज़र्बुलमसल = कहावत

१३९ राहदारी = चौकीदारी

१४० दुरुश्ती = सख़्ती से

१४१ नक़ीबों = ख़बर देने वाला, बादशाहों की सवारी के आगे आवज़ लगाने वाला (नक़ीब का बहु)

१४२ तश्वीश = फ़िक्र करना

१४३ तास्सुफ़ = अफ़सोस, हसरत

१४४ तरजीह = फ़ज़ीलत देना, बढ़ाना

१४५ वाज़ेह = प्रकट

१४६ हेच = अहमियत न देना, कम अहमियत का

१४७ ग़रज़ = स्वार्थ

१४८ अयालदार = बच्चों वाला

१४९ हुक्काम = हाकिम की जमा (बहु)

१५० बाज़-पुर्स = पूछ-ताछ, मालूमात करना

१५१ मुक़र्रर = निश्चित

१५२ मुकर्ररह-तारीख़ = निश्चित दिनांक

१५३ रवायत = किसी की कही हुई बात को कहना

१५४ बेदार = जगा हुआ, होशियार

१५५ नाला व शियूँ = रोना पीटना

१५६ मुश्रिक = अल्लाह की ज़ात में दूसरे को शरीक करने वाला

१५७ अरकान = रुक्न का बहु

१५८ शक़्क़ुल क़मर = चाँद का बीच से दो टूकड़े होना

१५९ मेज़ाहन = मज़ाक़ में

१६० इस्तेफ़सार = मालूमात करना, पूछना, पूछना

१६१ ख़ीरा = चकाचौंध

१६२ क़ाबिलेदीद् = प्रशंसा के योग्य

१६३ यक्जा = एक जगह इकटठे होना, किसी जगह बहुत से लोगों को होना

१६४ मुताज़बज़िब = दुग्दे में पड़ जाना

१६५ क़बाला = दस्तावेज़

१६७ दाना = बुद्धिमान

१६८ रक़ीब = दुश्मन

१६९ अज़ो = अंग

१७० ज़ाया = बर्बाद

१७१ मुक़र्रब = ख़ास दोस्त, क़रीबी

१७२ ताम्मुल = पसो-पेश में, आगे पीछे होना

१७३ ताईद = दूसरे की मद्द हासिल करन या पहुँचाना

१७४ ताजिर = व्यापारी

१७५ नफ़ा–बख़्श = लाभ दायक

१७६ दुर्वेशों = फक़ीर

१७७ गौहर – अफ़शानी = मोती बरसाना

१७८ महज़ूज़ = प्रसन्न होना,

१७९ आयद = लागू करना, फ़र्ज़ करना

१८० शाहाना–निख़्वत = शाही गुरुर

१८१ तहक्कुमाना = हाकिमाना, हाकिम जैसी गुफ़्तुगू करना

१८२ औबाशों = बदमाश (औबाश का बहु)

१८३ नातेक़ा = बात करने से रोक देना

१८४ मेज़ाहन = मज़ाक़ में

१८५ तवक्कुफ़ = ठहरना

१८६ रय्यत = जनता

१८७ हासिद = हसद करने वाला

१८८ ख़श्मगीन = गुस्से में

१८९ मुस्तौजब = हक़दार

१९० दम–ब–ख़ुद = हैरान हो जाना

१९१ मुतास्सिफ = जिसे अफ़सोस हो

१९२ मश्रिकी = पूरब का रहने वाला

१९३ आमद-व-रफ़्त = आना जाना

१९४ ओमूमन = आम तौर से

१९५ तारुज़ = एअ़तेराज़ करना

१९६ असासा = मिल्कियत

१९७ हम्द-व-सना = तारीफ़ (अल्लाह की)

१९८ सदा = आवाज़

१९९ बाज़ पुर्स = पूछ-ताछ

२०० सय्याह = सैर करने वाला

२०१ नंग-व-आर = ज़िल्लत व रुसवाई

२०२ तिफ़्ले-मकतब = छोटे दर्जे में पढ़ने वाला बच्चा

२०३ मोअ़ज़्ज़ज़ = इ़ज़्ज़त वाला

२०४ हैबते कज़ाई = ज़ाहिरी खराब हालत

२०५ मुस्तैदी = तैय्यारी के साथ

२०६ दायरा = गोलाकार

२०७ कुरा–पृथ्वी का आकार

२०८ असरार व रोमूज़=भेद व इशारे

२०९ ख़त्ते–इस्तेवा=ज़मीन को दो हिस्सो में बाँटने वाली रेखा

२१० शुमाली–उत्तरी

२११ जुनूबी–दक्षिणी

२१२ नबातात–पेड़ पौधे

२१३ तबअ़=फितरत, खसलत छापना

२१४ फ़क़ीह=विधि ज्ञान का जानने वाला

२१५ शायक़=शौक़ीन

२१६ शरायत=शर्त का बहु

२१७ शौहर=पति

२१८ अक़्द=विवाह

२१९ मुस्तग़रक़=डूबा हुआ

२२० अर्क़–आलूद=पसीने का आना

२२१ शय = कोई चीज़

२२२ मख़्मूर=नशे की हालत में

२२३ दजला = नदी का नाम

२२४ महो = मुग्ध

२२५ गाउदी = बेवकूफ़

२२६ सिफ़र = ज़ीरो

२२७ फ़क्र = ग़रीबी

२२८ ज़िच = बोर होना, शर्मिन्दगी, शार्मिन्दा होना

२२९ ख़ुद्दाम = ख़ादिम का बहु

२३० अव्वल = पहला

२३१ दोम = दूसरा

२३२ मबादा = कहीं ऐसा न हो

२३३ नुजूम = सितारों का ज्ञान

२३४ मुनक्किद = बरपा होना

२३५ मसनूआत = बनाई गयी चीज़े

२३६ शोहरा = शोहरत

२३७ अज़-सरे-नौ = नये सिरे से

२३८ ओमरा = अमीरो का बहु

२३९ हैबेते कज़ाई = जाहिरी ख़राब हालत

२४० महफ़िले-मै-नौशी = शराबियों की सभा

२४१ हमशीरा = बहिन

२४२ वजीह = ज़ाहिरी शान व शौकत

२४३ रअ़ना = आकर्षक, दुबला पत्ला शरीर रखने वाली जवान औरत

२४४ निदामत = शर्मिन्दगी

२४५ एअ़राबी = अरब का रहने वाला

२४६ मुक़ीम = क़याम करने की जगह

२४७ निगेहदाश्त = देखभाल

२४८ पा-पोश = जूता

२४९ उजरत = एवज़

२५० ज़ादे सफ़र = यात्रा के लिये सामान, प्रबन्ध

२५१ अत्तार = इत्र बेचने वाला

२५२ मुताशक्किर = शुक्रगुज़ार

२५३ लजाजत = गिड़गिड़ाना

२५४ तअस्सुफ़ = अफ़सोस करना

१५५ इस्तेफ़सार = पूछ गछ

१५६ सधाया = परिक्षण देना

१५७ मोक़िफ़ = मक़सद

१५८ महज़ = सिर्फ़

१५९ महवे-इस्तेराहत = आराम की हालत में

१६० मुर्शिद = हिदायत देने वाला

१६१ सामेईन = सुनने वाले

१६२ हाजत = ज़रुरत

१६३ वज़ाएफ़ = वज़ीफ़े का बहु

१६४ मल्हूज़े ख़ातिर = ध्यान में रखना

१६५ हमा-तन-गोश = ख़ूब ग़ौर से

१६६ फ़ुरुआत = शाख़ का बहु

१६७ बुग़्ज़ = द्वेष

१६८ कीना = मन में छिपी शत्रुता

१६९ हसद = ईर्ष्या किसी की तरक्की पर

१७० बोसा = चूमना

२७१ नफ़्स = आत्मा, दिल

२७२ महज़रे-ख़ुदा = ख़ुदा हर जगह हाज़िर है

२७३ मलकुल-मौत = मृत्यु दूत

२७४ मफ़र = बचाओ

२७५ रोज़े-महशर = क़यामत

२७६ हिर्ज़े ज़ान = बचाओ का ज़रिया

२७७ यगान-ए-रोज़गर = अपने ज़माने का अकेला, लाजवाब

नफ़्से रसूल, बरादरे रसूल, वसीय रसूल, ख़लीफ़ए रसूल, अमीरूलमोमिनीन

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम

के

खुतबों, मकतूबों व कल्मों का पूर्ण संग्रह

नहजुल बलाग़ह

का अनुवाद

तथा मुशकिल विषयों की व्याख्या

उर्दू तर्जुमा : हुज्जतुल इसलाम अल्लामा मुफ़्ती जअ़फ़र हुसैन साहब क़िब्ला 'मरहूम'

से

हिन्दी अनुवाद : बी. ए. नक़वी

नहजुलबलाग़ह : हर दौर के इन्सानों के लिये जीवन का प्रकाश है।

नहजुलबलाग़ह : खुदा के मौजूद होने और उसके एक अकेला होने की दलील है।

नहजुलबलाग़ह : मुहम्मद (स.) की नबूवत की सच्चाई और आख़िरी नबी होने की दलील है।

नहजुलबलाग़ह : जिसमें दुनिया व आख़रत की नेकी भलाई छुपी है।

नहजुलबलाग़ह : मानवता के लिये रौशनी का मीनार तथा विद्या व ज्ञान का उदगम है।

नहजुलबलाग़ह : इस्लाम की सच्चाई की दलील है।

नहजुलबलाग़ह : आज की सिसकती बिलकती इन्सानियत का एकमात्र इलाज है।

नहजुलबलाग़ह : ज़िन्दगी के अंधेरों को दूर करके पहचानने की रौशनी अ़ता करती है।

आज के नये दौर में जबकि सच्चाई को पहचानने के तरीक़े पहले से कहीं अधिक हैं। हम इस दौर के इन्साफ़ पसन्द, बुद्धिमान लोगों को सोचने समझने के लिये आमंत्रित करते हैं कि वह इस अज़ीमुश्शान किताब के बारे में ग़ौर व फ़िक्र करके सच्चाई का पता लगायें जिससे कि आज की इन्सानियत की जटिल समस्याओं का हल निकल सके।

प्रकाशक

अब्बास बुक ऐजेन्सी

दरगाह हज़रत अब्बास (अ.)

रूसतम नगर, लखनऊ-२२६००३

क़ुरआन-ए-मजीद

तर्ज़ुमा मौलाना सैय्यद फ़रमान अली साहब का
हिन्दी अनुवाद बहुत जल्द मंज़रे आम पर आ रहा है।

जनाब मौलाना सैय्यद फ़रमान अली साहब का अनुवाद उर्दू में कई बार हज़ारों की संख्या में हिन्द व पाक में छपा और आम मक़बूलियत का हामिल हुआ। इसकी खुसूसियत यह है कि तर्जुमा बामुहावरा किया गया है और इरशाद-ए-अहले बैत के मुताबिक़ है, इसके पढ़ने वाले को क़ुरान-ए-मजीद के अजायब व इसरार पर इतनी मालूमात हो जाती है कि दीद-ए-दिल उनके रौशन व मुनव्वर हो जाते हैं। इसके अलावा ज़रूरी और मुफ़ीद आम तौज़ीह व तसरीह खुश उसलूबी से लिखी है। ख़ासतौर से आयात फ़ज़ायल-ए-अहले बैत अतहार की (जो रूह.ए.क़ुरान हैं) अच्छे तरीक़े से तौज़ीह की गई है।

इस वक़्त हमारी नौजवान नस्ल की ज़रूरत और बेहद इसरार पर इस नायाब किताब का तरजुमा "हिन्दी भाषा" में छापने का काम चल रहा है और इंशाअल्लाह बहुत जल्द आपके सामने आ रहा है।

अनुवादक

सैय्यद अली इमाम ज़ैदी

प्रकाशक

अब्बास बुक एजेंसी
रूस्तम नगर दरगाह
हज़रत अब्बास
लखनऊ-३